

30.00

August 2012

# मारयाम

अली <sup>अ०</sup>

का यौमे शहादत

हमारा घर  
हमारी जन्नत

कैसे मेनटेन रखें सेहत

मां  
मेरे लिए क्यों खास है

फितरा

दो दिन रोजा खोरी के  
सब से अच्छी  
हुकूमत

पानी  
की कहानी

हाट





# मरयम

की तरफ से हम अपने  
सब्सक्राइबर्स के लिए लेकर आए हैं

## खुशियों की सौगात

और शुरू कर रहे हैं

एक स्कीम जिसमें हर महीने 5 खुशानसीबों को मिलेंगे खूबसूरत  
ज्वेलरी सेट, घर के इस्तेमाल के सामान और भी बहुत कुछ...

बस पढ़ती रहिए मरयम मैगज़ीन और इंतज़ार कीजिए अपनी बारी का।

इस महीने जिन 5 खुशानसीबों को  
मरयम की तरफ से खूबसूरत तोहफे दिये जा रहे हैं  
उनके नाम यह हैं:

Subscription ID: A-00051  
Major S. M. Javed, New Delhi

Subscription ID: A00207  
Mr Riyaz H Abidi, Lucknow

Subscription ID: A-00561  
Mr Razi ul Hasan, Panipat

Subscription ID: A-00176  
Ms Sabiha Rizvi, Chandauli

Subscription ID: A-00525  
Mrs Hashmat Begum, Lucknow





# माहे रमज़ान में रोज़ाना पढ़ी जाने वाली दुआ

يَا عَلِيُّ يَا عَظِيمُ، يَا غَفُورُ يَا رَحِيمُ، أَنْتَ الرَّبُّ الْعَظِيمُ

ऐ बुजुर्ग, ऐ अज़ीम ! ऐ बड़े बख़्शने वाले, बहुत मेहरबान! तू वह बुजुर्ग परवरदिगार है

الَّذِي لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ، وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ، وَهَذَا شَهْرُ

जिसके जैसा कोई नहीं और जो हर बात का सुनने वाला और हर चीज़ का देखने वाला है। यह वह महीना है

عَظُمَتُهُ وَكَرُمَتُهُ، وَشَرَفَتُهُ وَفَضْلَتُهُ عَلَى الشُّهُورِ

जिसको तूने बुजुर्गी, करामत, शरफ़ व मंज़ेलत दी है और दूसरे महीनों पर फ़ज़ीलत दी है।

رَمُضَانَ الَّذِي أُنْزِلَتْ فِيهِ الْقُرْآنُ، هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ

यह वह महीना है जिसके रोज़े तूने हम पर वाजिब किए हैं। यह ऐसा माहे रमज़ान है जिसमें तूने अपनी

وَهُوَ الشَّهْرُ الَّذِي فَرَضْتَ صِيَامَهُ عَلَيَّ، وَهُوَ شَهْرُ

किताब कुरआन नाज़िल की है जो लोगों के लिए हिदायत है और इसमें हिदायत की खुली दलीलें

مِّنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ، وَجَعَلْتَ فِيهِ لَيْلَةَ الْقَدْرِ، وَجَعَلْتَهَا

और हक़ व बातिल में फ़र्क़ पैदा करने वाली निशानियाँ हैं। इसी महीने में तूने शबे क़द्र भी रखी है।

خَيْرًا مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ، فَيَا ذَا الْمَنِّ وَلَا يُمَنَّ عَلَيْكَ، مَنْ عَلَى

जो हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है। ऐ मेरे मोहसिन जिस पर किसी का एहसान नहीं है मुझ पर यह एहसान कर

بِفَكَاكِ رَقَبَتِي مِنَ النَّارِ، فَيَمَنْ تَمَنَّ عَلَىَّ وَأَدْخَلْنِي الْجَنَّةَ

कि मेरी गर्दन को जहन्नम की आग से आज़ाद कर दे! जैसा कि तूने और लोगों पर एहसान किया है और मुझे

بِرَحْمَتِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ.

अपनी जन्नत में दाख़िल फ़रमा! ऐ सबसे ज़्यादा रहम करने वाले!



RNI No: UPHIN/2012/43577



Monthly Magazine

# मरयम

Vol:1 | Issue: 6 | August 2012

## इस महीने आप पढ़ेंगी...

हमारा घर, हमारी जन्नत	6
अली(अ), कुरआन और रमज़ान	9
बदगुमानी	10
पानी की कहानी	12
खुम्स	14
दो दिन रोज़ा खोरी के	17
पकवान	18
कैसे मेंनटेन रखें सेहत	20
अली(अ) का यौमे शहादत...	22
मां मेरे लिए खास क्यों है?	25
मेहर और नफ़ा	27
सब अली(अ) को अली कहते हैं...	30
सबसे अच्छी हुकूमत	31
अमानतदारी	34
इम्तेहान	35
रोज़े के अहकाम	37
लड़कियों की परवरिश	38
फ़ितरा	39
शबे क़द्र के आमाज़	40

### Editor

Mohammad Hasan Naqvi

### Editorial Board

Nazar Abbas Rizvi  
M. Fayyaz Baqir  
Akhtar Abbas Jaun  
Qamar Mehdi  
Ali Zafar Zaidi

### Managing Editor

Abbas Asghar Shabrez

### Executive Editor

Fasahat Husain

### Assist. Exec. Editor

M. Aqeel Zaidi

### Contributors

Imtiyaz Abbas Rizwan  
Azmi Rizvi  
Fatima Qummi  
M. Mohsin Zaidi  
Tauseef Qambar

### Graphic Designer

 Siraj Abidi  
9839099435

### Typist

S. Sufyan Ahmad

ऐ करीम खुदा!  
इस माहे रमज़ान  
में हमें तौफ़ीक़ दे  
कि हम तेरे सच्चे  
इबादतगुज़ार बन  
सकें।

‘मरयम’ में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नहीं है।

‘मरयम’ में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और ‘मरयम’ में छपे लेख और तस्वीरें ‘मरयम’ की प्रॉपर्टी हैं।

इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले ‘मरयम’ से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। ‘मरयम’ में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम ज़वाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।

संपादक ‘मरयम’ के लिए आने वाले कंटेंट्स में ज़रूरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer, publisher & Proprietor S. Mohammad Hasan Naqvi printed at Swastika Printwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and published from 234/22 Thavai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017 (Lucknow), +91-9892393414 (Mumbai)  
Email: maryammonthly@gmail.com





इमाम 310  
**हसनः**

नीच लोग नेमतों और नेकियों  
का शुक्र अदा नहीं करते।

Happy  
15<sup>th</sup> Ramzan





# हमारा घर

# हमारी जन्मत

■ फातिमा कुम्भी

घर की फ़िज़ा को खुशी और सुकून से भरकर उसको जन्मत या जहन्नम बनाना बीवी के हाथ में है। कामयाब बीवी वह है जो मर्द का दिल जीत ले।

हज़रत अली<sup>अ</sup> फ़रमाते हैं, “औरत का जिहाद यही है कि वह बीवी की हैसियत से अपनी ज़िम्मेदारियों को अच्छी तरह से पूरा करे।”<sup>(1)</sup>

रसूल ख़ुदा फ़रमाते हैं, “जिस औरत को ऐसी हालत में मौत आ जाए कि उसका शौहर उस से राज़ी और खुश हो, उसे जन्मत नसीब होगी।”<sup>(2)</sup>

रसूल ख़ुदा का इरशाद है कि ख़ुदा ने फ़रमाया है “जब मैं चाहता हूँ कि दुनिया व आख़िरत की सारी ख़ूबियाँ किसी मुसलमान शख्स को दे दूँ तो उसको ख़ुदा का ज़िक्र करने वाली ज़बान और मुसीबतों पर सन्न करने वाला बदन अता करता हूँ और उसको ऐसी मोमिना बीवी देता हूँ कि जब भी वह उसकी तरफ़ देखे तो उसे खुशी मिले और उसके पीछे अपनी और उसके माल की हिफ़ाज़त करने वाली हो।”

एक शख्स ने रसूल ख़ुदा से कहा, “जब भी मैं घर में दाख़िल होता हूँ तो मेरी बीवी मेरे इस्तेक़बाल के लिए आती है, जब घर से जाता हूँ तो मुझे रुख़सत करती है, जब परेशान देखती है तो तसल्ली देती है और कहती है कि अगर तुम रोज़ी-रोटी के लिए परेशानी में हो तो परेशान न हो क्योंकि रोज़ी देने वाला तो ख़ुदा है और अगर तुम आख़िरत के बारे में सोच रहे हो तो ख़ुदा तुम्हारी कोशिश और हिम्मत को बढ़ाए।”

रसूल ख़ुदा ने फ़रमाया, “इस दुनिया में ख़ुदा के कुछ ख़ास बंदे हैं और यह औरत भी ख़ुदा के उन ख़ास बंदों में से है, ऐसी बीवी

एक शहीद के सवाब में बराबर की हिस्सेदार होगी।”

## आइडियल बीवी

### 1- मोहब्बत का इज़हार भी कीजिए

आप जितना मोहब्बत का इज़हार करेंगे उतना ही शौहर भी आप से मोहब्बत करेगा। रसूल<sup>अ</sup> फ़रमाते हैं, “बेहतरीन औरत वह है जिसके अंदर मोहब्बत कूट-कूट कर भरी हो।”<sup>(3)</sup>

इमाम रज़ा<sup>अ</sup> फ़रमाते हैं, “कुछ औरतें अपने शौहरों के लिए बेहतरीन नेमत होती हैं और यह वह औरतें हैं जो अपने शौहरों से मोहब्बत और इश्क़ का इज़हार करती हैं।”

इमाम जाफ़र सादिक<sup>अ</sup> फ़रमाते हैं, “अगर किसी को चाहते हो तो इसको जताओ भी।”

### 2- एहतेराम कीजिए

हर एक अपने आप को चाहता है और हर शख्स इज़ज़त का भूखा होता है जिसे इज़ज़त व एहतेराम मिलता है वह अंदर से बहुत खुश रहता है। अगर उसे इज़ज़त और एहतेराम न मिले तो वह इस कमी को पूरा करने के लिए जाने और अनजाने में अलग-अलग तरह के हथकंडे इस्तेमाल करता है।

रसूल ख़ुदा<sup>अ</sup> फ़रमाते हैं, “बीवी का फ़र्ज़ यह है कि वह अपने शौहर के इस्तेक़बाल के लिए घर के दरवाज़े तक आए और उसको खुश आमदीद कहे।”<sup>(4)</sup>

अपने शौहर को सलाम कीजिए, हमेशा उस से “आप”

कहकर बात कीजिए। कभी भी उसकी बात बीच में मत काटिए, उसके ऊपर चीखिए-चिल्लाए नहीं। उसको नाम लेकर मत पुकारिए, सबके सामने उसकी तारीफ़ कीजिए, इस तरह वह भी आपकी इज़ज़त करेगा और इस वजह से आपके बीच मोहब्बत का रिश्ता और शादी का बंधन और ज़्यादा मज़बूत हो जाएगा।

इमाम जाफ़र सादिक<sup>अ</sup> फ़रमाते हैं, “वह औरत जो अपने शौहर का एहतेराम करे और उसको तकलीफ़ न पहुँचाए वह खुशनसीब और सआदतमंद होगी।”

### 3- दिल मत दुखाइए

जिंदगी ऊँच-नीच और दुख-दर्द के साथ-साथ है। इसलिए जिंदगी में पेश आने वाली कड़वाहटों से निपटने के लिए हिम्मत और हौसले से काम लें। अगर आपके किसी भी काम या बात से शौहर को तकलीफ़ पहुँचती हो तो ऐसा न करें और न ही कभी घरदारी से रुठें। जैसे “तुम्हारी बहन मुझ से ख़ार खाती है। तुम्हारी माँ को मुझ से दुश्मनी है, वह मेरी इधर-उधर बुराई करती रहती हैं। फुलॉ की बीवी की किस्मत कितनी अच्छी है।





उसे ज़ेवर, कपड़े और शौहर की तरफ से इज़्ज़त वगैरा सब कुछ मिला है। दूसरे सब लोग अपनी बीवियों का बहुत ख़याल रखते हैं। मेरा किसी को कोई ख़याल नहीं है मेरी तो किस्मत ही बुरी है।” ऐसा कहकर आप शौहर को तकलीफ़ पहुँचाने के साथ-साथ बहुत बड़ा गुनाह भी करती हैं। रसूले इस्लाम<sup>ﷺ</sup> फ़रमाते हैं, “जो औरत अपनी ज़बान से अपने शौहर को तकलीफ़ पहुँचाती है, उसकी नमाज़ें और दूसरे आमाल कुबूल नहीं होते। चाहे वह हर रोज़ रोज़ा रखे और रातों को इबादत करे, नमाज़ें शब के लिए उठे, गुलामों को आज़ाद करे या अपनी दौलत राहे खुदा में खर्च करे। ऐसी औरत जो बदज़बान हो और अपनी बदज़बानी से शौहर को तकलीफ़ पहुँचाए, सबसे पहले जहन्नम में दाख़िल होगी”।

#### 4- शुक्रगुज़ार रहिए

शौहर के कंधों पर घर का खर्चा चलाने का बोझ होता है। वह खून-पसीने की कमाई से जो भी लेकर आता है उसी में घर चलाइए और खुदा का शुक्र अदा कीजिए। शौहर की ज़हमतों को समझिए और उसकी कद्र कीजिए।

इमाम सादिक<sup>ﷺ</sup> फ़रमाते हैं, “तुम में से बेहतरीन औरत वह है कि जब उसका शौहर कोई चीज़ ख़रीद कर लाता है तो वह उसका शुक्रिया अदा करती है और अगर न ला सके तब भी राज़ी रहती है। जो औरत अपने शौहर से यह कहे कि आपने मेरे साथ कौन सा अच्छा काम किया है तो उसके सारे आमाल बातिल हो जाते हैं।”

#### 5- हिजाब कीजिए

औरत और मर्द में कुछ बातें एक-सी होती हैं और कुछ अलग-अलग। लेकिन इन दोनों में सबसे बड़ा फ़र्क़ यह है कि औरत एक नाजुक, खूबसूरत व महबूब हस्ती है, औरत दिलबर और मर्द दिलदार, औरत माशूक और मर्द आशिक़ होता है।

शौहर की नज़रों में बीवी की इज़्ज़त व एहतेराम और प्यार व मोहब्बत उस वक़्त तक बाकी रह सकती है जब तक उसको यकीन रहे कि उसकी बीवी सिर्फ़ और सिर्फ़ उसी की है। लेकिन अगर शौहर को यह शक़ हो जाए कि उसकी बीवी का बनाव-सिंंगार किसी और के लिए है, चाहे वह सिर्फ़ एक मुस्कुराहट या उसका नर्म लहजा ही क्यों न हो। अगर ऐसा है तो शौहर यह सब बर्दाश्त नहीं कर सकता और उसकी आपसे मोहब्बत कम ही नहीं बल्कि ख़त्म भी हो जाएगी।

“नेचरली हर शरीफ़ और दीनदार शौहर अपनी बीवी से यह एक्सपेक्ट करता है कि वह इस्लामी लिबास और पर्दे का लेहाज़ करे।”

रसूले इस्लाम<sup>ﷺ</sup> ने फ़रमाया है, “हिजाब से औरत की ताज़गी और खूबसूरती बची रहती है।”

#### एक दिलचस्प वाक़िआ

एक आलिमे दीन अपनी बाहिजाब बीवी के साथ गाड़ी पर सफ़र कर रहे थे। एक दूसरा शख्स भी अपनी बेहिजाब बीवी के साथ उस गाड़ी में सवार हुआ और आलिमे दीन की बीवी को हिजाब में देखकर कहने लगा, “आप लोगों को अक्ल कब आएगी, इस बेचारी को क्यों बंद कर रखा है। यह दक़ियानूसियत आख़िर कब ख़त्म होगी।”

आलिमे दीन ने आराम से बड़े ही नर्म लहजे में कहा, “भाई! दरअसल बात यह है कि यह सिर्फ़ मेरी बीवी हैं और इसलिए मैं इन्हें पर्दे में रखता हूँ।” यह सुनकर उसकी बेहिजाब बीवी ने कहा, “अब दो जवाब! मेरी भी बेइज़्ज़ती करा दी और तुम्हें भी शर्मिंदा होना पड़ा।”

#### 6- अपने शौहर का साथ दीजिए

यह बात याद रखिए कि आप अपने शौहर की लाइफ़-पार्टनर हैं। सब लोगों में सबसे ज़्यादा आप उस से करीब हैं। उसकी लाइफ़-पार्टनर होने का मतलब यह है कि ज़िंदगी में पेश आने वाले सारे हालात में उसकी पार्टनर रहिए, दुख-दर्द में, खुशी में, शौहर की दिलचस्पी वाले कामों में, शौहर की

पसंदीदा चीज़ों में यानी सब चीज़ों में अपने आपको शौहर की पार्टनर समझिए। किसी मामले में यह मत सोचिए कि यह शौहर का काम है बल्कि उसके हर काम को अपना काम समझकर कीजिए। नहीं तो आपस में झगड़े, दूरी और नफ़रत पैदा होने के चांसेज़ बढ़ जाएंगे।

#### 7- फ़ालतू उम्मीदें मत बांधिए

सब लोगों की आमदनी एक जैसी और बराबर नहीं होती और न ही कमाने के तरीक़े। सभी लोग एक स्टैंडर्ड के मुताबिक़ ज़िंदगी भी नहीं गुज़ार सकते। शौहर अपनी कमाई से जो भी रक़म आपको दे उसी में घर चलाइए और खुदा का शुक्र अदा कीजिए।

रसूले खुदा<sup>ﷺ</sup> फ़रमाते हैं, “हर वह औरत जो अपने शौहर से निबाह न करे और जो कुछ उसको खुदा की तरफ़ से मिला है उस पर क़नाअत न करे और अपने शौहर से सख़्ती से पेश आए और उसकी ताक़त और सलाहियत से ज़्यादा की उम्मीद करे, ऐसी औरत के आमाल कुबूल नहीं होंगे। और खुदा उस पर अज़ाब नाज़िल करेगा।”

#### 8- कम्पेयर मत कीजिए

हो सकता है कि शादी से पहले लोग आपके रिश्ते के लिए आए हों। और ऐसे लोग आपकी नज़र में भी हों जिनसे आपको शादी की चाहत रही हो या आप यह सोचती हों कि आपका शौहर दौलतमंद हो, डाक्टर हो, खूबसूरत हो, स्मार्ट हो, वगैरा-वगैरा। शादी से पहले इस तरह की ख़ाहिश और तमन्ना करने में कोई मुश्किल नहीं लेकिन अब जबकि आप ने एक मर्द को अपना लाइफ़-पार्टनर चुन लिया और शादी के पाकीज़ा रिश्ते पर मोहर लगाकर पूरी उम्र तक साथ निभाने का वादा भी कर लिया तो पिछली बातों को बिल्कुल भुला देना चाहिए। कभी अपने शौहर का मुकाबला दूसरे मर्दों से मत कीजिए। मर्द इतना सेंसिटिव होता है कि वह इस बात को बर्दाश्त नहीं कर सकता कि उसकी बीवी ग़ैर मर्द से या उसकी





तस्वीर तक में अपनी दिलचस्पी दिखाए।

#### 9- ऐब मत निकालिए

कोई भी इन्सान ऐबों से पाक नहीं है। हर मर्द और औरत की ख्वाहिश होती है कि अपने लिए ऐसा आइडियल लाइफ-पार्टनर तलाश करे जिसमें कोई ऐब न हो, कोई भी खराबी या कमी न हो। लेकिन ऐसा बहुत कम ही होता है कि किसी को अपना आइडियल मिल जाए।

मेरे ख्याल में कोई औरत ऐसी नहीं है जो अपने शौहर को 100% परफेक्ट और बेऐब समझती हो। आपका शौहर एक आम इंसान है। हो सकता है कि उसमें कोई ऐब हो लेकिन यह भी देखिए कि उसमें बहुत सी खूबियाँ भी होंगी। अगर आप खुशगवार जिंदगी गुज़ारना चाहती हैं तो उसकी छोटी-छोटी बातों को अन्देखा कर दीजिए। बल्कि उसके ऐबों पर बिल्कुल ध्यान मत दीजिए और शौहर का कभी किसी ख्याली मर्द से भी मुकाबला मत कीजिए।

रसूल<sup>०</sup> फरमाते हैं, “बड़ा ऐब यह है कि इन्सान दूसरों के ऐबों को तो देखता है मगर अपने ऐबों से बेपरवाह रहता है।”

#### 10- सब्र कीजिए

मर्द को कमाने-धमाने के ज़रियों को तलाश करने में बहुत सी मुश्किलें पेश आती हैं। उसे बहुत से मसलों का सामना करना पड़ता है। इन मुश्किलों और परेशानियों का मुकाबला करके जब वह घर वापस आता है तो ज़ाहिर सी बात है कि उसका मूड अच्छा नहीं होगा। यह भी हो सकता है कि वह सख्ती से पेश आए। किसी छोटी सी बात पर गुस्सा हो जाए। ऐसे में आपको चाहिए कि इन हालात में शौहर की हमदर्द व मददगार बनें। उसके लिए मसलों को बढ़ाने के बजाए उसके ज़हन से बोझ हलका करने की कोशिश करें। आते ही बच्चों की शिकायतों या धरेलू परेशानियों का पिटारा उसके सामने न खोलें। बल्कि सही वक़्त का इंतज़ार करें। पहले खाने-पीने का इंतज़ाम करें। उसका माइंड फ़्रेश हो जाए तो इसके बाद ही कोई दूसरी बात करें।

यह सब वह छोटी-छोटी मगर इतनी खास बातें हैं कि अगर इन पर अमल कर लिया जाए तो जिंदगी और घर को बहुत ख़ूबसूरत बनाया जा सकता है बल्कि जन्मत भी बनाया जा सकता है।

1- बिहार, 2- मुहज्जतुल बैज़ा, 3-बिहार,

4- अल-मुस्तदरक ●

# शादी



#### शादी की फज़ीलत

रसूल<sup>०</sup> इस्लाम से हदीस है, “निकाह मेरी सुन्नत है, जो मेरी सुन्नत से दूर भागेगा वह मुझ से नहीं है।”

“ख़ुद भी शादी करो और अपनी कुंवारी बेटियों की भी शादी करो। एक मुसलमान की खुशनसीबी की निशानी यह है कि वह किसी औरत की शादी के ख़र्चें बर्दाश्त करे।”

“ख़ुदा के नज़दीक उस घर से ज़्यादा अच्छा कोई घर नहीं है जो निकाह के ज़रिए आबाद होता है।”

“चार मौकों पर इन्सान के लिए आसमान के दरवाज़े खुलते हैं:

1- बारिश के वक़्त

2- जब बेटा मोहब्बत से बाप के चेहरे की तरफ़ देखता है।

3- जब काबे का दरवाज़ा खुलता है।

4- जब निकाह होता है।”

“जहन्नम में ज़्यादातर लोग कुंवारे होंगे।”

“तुम्हारे मरने वालों में से बदतरीन लोग कुंवारे हैं।”

“शादी ख़ुदा की सबसे महबूब चीज़ है।”

“ख़ुदा उस शख्स पर लानत करता है जो शादी से दूर भागता है।”

“अपने कुंवारों की शादी करो ताकि ख़ुदा उनके अख़लाक़ को संवारे और उनकी रोज़ी में बरकत करे...।”

“जिसने शादी कर ली उसने अपना आधा दीन बचा लिया। बाकी आधे दीन के लिए तक्वा इस्तियार करो।”

“शादी-थुदा की दो रकअत नमाज़ ग़ैर शादी-थुदा की 70 रकअतों से बेहतर है।”

“नेक लोगों को बहकाने के लिए

शैतान के पास औरत से ज़्यादा असरदार कोई हथियार नहीं है।”

#### रिश्ता कराना

रसूल<sup>०</sup> ने फरमाया है, “अगर कोई मोमिनो के बेटों-बेटियों की शादी इसलिए कराए ताकि ख़ुदा उन दोनों को एक कर दे तो ख़ुदा उस शख्स की शादी जन्नत की हूरों से करेगा और इस शादी के लिए जो क़दम उठाएगा या जो बात कहेगा ख़ुदा उस पर एक साल की इबादत का सवाब अता करेगा।”

इमाम जाफ़र सादिक<sup>०</sup> फरमाते हैं, “जो किसी कुंवारे की शादी कराएगा, ख़ुदा क़यामत के दिन उस पर अपनी ख़ास नज़रे करम करेगा।”

#### शादी और रोज़ी

“अपनी क़ौम की बेवा औरतों के निकाह कर दिया करो और अपने गुलामों और लौंडियों के भी जो नेक हों (निकाह कर दिया करो) अगर वह ग़रीब होंगे तो ख़ुदावंदे करीम उनको अपने फ़ज़ल से खुशहाल कर देगा और ख़ुदा (बहुत) वुस्अत वाला (और सब कुछ) जानने वाला है।”

“जो ग़रीबी के डर से शादी न करे उसने अल्लाह के साथ बदगुमानी की है।”

“रिज़क़ बढ़ाना हो तो शादी करो।”

“औरत के साथ बरकत है।”

#### वक़्त पर शादी

“जवानी के शुरु ही में अगर कोई शादी करे तो शैतान फ़रियाद करता है कि अफ़सोस... इस शख्स ने अपने दीन का दो तिहाई मेरे शर से बचा लिया।”

“इन्सान की खुशनसीबी की एक निशानी यह है कि उसकी लड़की सही वक़्त पर शौहर के घर पहुँच जाए।” ●





# अली<sup>अ०</sup>

## कुरआन और रमज़ान

समझते हों। ये भी क्या अजीब इत्तेफ़ाक़ है कि उम्मेत मुहम्मदी को खुदा की तरफ़ से दो अज़ीम तोहफ़े मिले लेकिन दोनों मज़लूम, दोनों तनहा, दोनों दर्द के मारे मगर आपस में कितने एक जैसे कि दोनों का साथ छोड़ने वाले और कोई नहीं बल्कि खुद अपने ही मानने वाले हैं।

जिस तरह आज करोड़ों लोग अपनी ज़िन्दगी में सुबह-शाम कुरआन की तिलावत करते हैं लेकिन न उन्हें कुरआनी तालीमात का इल्म है और न वह ये जानते हैं कि कुरआन उन से क्या चाहता है, उसी तरह अली<sup>अ०</sup> की ज़ात भी है। लोग अली<sup>अ०</sup> का तज़क़िरा करते नहीं थकते, सुबह-शाम अली-अली करते हैं लेकिन उन्हें नहीं मालूम कि ये शख्सियत कितनी अज़ीम है और खुद ये ज़ात अपने चाहने वालों से क्या चाहती है। उन्हें तो इस बात का भी इल्म नहीं है कि जिन फज़ीलतों का तज़क़िरा वह दिन भर करते रहते हैं वह सारी फज़ीलतें तो फज़ाएले अली<sup>अ०</sup> के समन्दर का बस एक कतरा हैं। अली<sup>अ०</sup> की ज़ात तो कुछ और ही है।

हकीकी मायने में ये अली<sup>अ०</sup> से मुहब्बत करते हैं और अली<sup>अ०</sup> को चाहते हैं और इसीलिए अली<sup>अ०</sup> का नाम आते ही खुशियों की एक लहर उनके वुजूद में दौड़ जाती है। अली<sup>अ०</sup> की मुसीबतों का तज़क़िरा होते ही आँखों में आँसू आ जाते हैं लेकिन अफ़सोस इस पर है कि अली के इन चाहने वालों और आशिकों को नहीं मालूम कि खुद अली<sup>अ०</sup> क्यों रो रहे हैं?

जिस ज़र्वत ने अली<sup>अ०</sup> के सर को दो पारा कर दिया था उस पर रोने वाले तो बहुत मिल जाएंगे लेकिन वह ज़ख्मे ज़बाँ जिन्होंने

अली<sup>अ०</sup> के हस्सास वुजूद को अन्दर से किरची-किरची कर दिया था उस पर रोने वाला कोई नहीं मिलता। वह नशतर जो अली<sup>अ०</sup> के दिल के आरपार हो गए उन पर गिरया करने वाला कोई नहीं है और सबसे बढ़कर अफ़सोस तो इस पर है कि रोना तो दरकिनार किसी को अली<sup>अ०</sup> के दिल में चुभे नशतर नज़र भी नहीं आते और न किसी को अली<sup>अ०</sup> के दिल को टुकड़े-टुकड़े कर देने वाले मसाएब दिखते हैं। कोई अपने आप से नहीं पूछता कि अली<sup>अ०</sup> के ऊपर पड़ने वाली वह कौन सी मुसीबत है जो रात की तारीकी में अली<sup>अ०</sup> को कुएं में सर डालकर रोने पर मजबूर कर रही है। आख़िर वह कौन सा राज़ है जिसे अली<sup>अ०</sup> एक-एक इन्सान तक पहुँचाना चाहते हैं, और जब उनकी आवाज़ खुद उन्हीं के होंटों में दब कर रह जाती है तो नख़लिस्तान में बिलक-बिलक कर अपने माबूद की बारगाह में फ़रयाद करते हैं।

आइए! इस मुबारक महीने में जहाँ हर तरफ़ बरकतों का नुजूल होता है, ग़ौर करते हैं कि अली<sup>अ०</sup> की तन्हाई का राज़ आख़िर क्या है? कुरआन आज भी आख़िर क्यों तन्हा है? हम अली<sup>अ०</sup> और कुरआन की तन्हाई को दूर करने के लिए क्या कर सकते हैं? अपनी समाजी ज़िन्दगी में हम कुरआन के कितने रोल को मानते हैं? और हम अपने समाज को कितना कुरआन का पाबन्द बना सकते हैं?

ज़माना तो नहीं कहा था, “याद सामने वह जब उस ज़माने किताब से ज़्यादा होगी। किताब देंगे और कुरआन भुला देंगे।”

कहीं हमारा ज़माना वही जिसके लिए अली<sup>अ०</sup> ने रखो! मेरे बाद तुम्हारे ज़माना आने वाला है वालों के लिए खुदा की बेक़ीमत कोई चीज़ नहीं वाले, किताब को छोड़ के हाफ़िज़, कुरआन को (नहजुल बलाग़ह) ●

कुरआन दिलों की बहार, मरीज़ों के लिए शिफ़ा, इल्म का खज़ाना, खुदा की मारेफ़त के लिए सबसे मज़बूत और अच्छा रास्ता और हिदायत की ऐसी किताब है जो ज़ुंज लगे दिलों को इस तरह साफ़ कर देती है कि फिर उन्हें आसमानों की सैर के सिवा कुछ अच्छा नहीं लगता।

कुरआन इल्मो हिकमत का ठाउँ मारता हुआ वह समन्दर है कि इल्म के ग़ोताख़ोर जितना उसकी गहराई में उतरेंगे उतना ही उनका दामन मारेफ़त के अनमोल मोतियों से भरता जायेगा।

मगर अफ़सोस! वह किताब जो टुकड़ाए हुए लोगों को सीने से लगाने आई थी, उसी किताब को छोड़ दिया गया है। आज वही फ़रयाद कर रही है कि मुझे किस तरह मेरे मानने वालों ने खुद अपने ही वुजूद में कैद कर दिया है। मैं तो जमे हुए इन्सानी पैकरो को हक़ की आवाज़ की गर्मी से पिघलाकर कमाल की इन्तेहा पर पहुँचाने आई थी लेकिन आज खुद मेरा ही वुजूद एक हर्फ़ बन कर रह गया है। उधर अली<sup>अ०</sup>, इन्सानी तारीख़ की मज़लूम तरीन शख्सियत, इतनी बड़ी कायनात में वह अकेला इन्सान सदियों गुज़र जाने के बाद आज भी अकेला उसी जगह पर खड़ा है जहाँ सदियों पहले खड़ा था, इस इन्तेज़ार में कि शायद कुछ ऐसे लोग मिल जाएं जो उसे समझ सकें और और फिर उसका अकेलापन दूर हो जाए लेकिन ज़माना जैसे-जैसे आगे बढ़ रहा है, वह और ज़्यादा अकेला होता चला जा रहा है बिल्कुल कुरआन की तरह। अली<sup>अ०</sup> और कुरआन, कितनी समानता है दोनों में? सच, कितनी अपनाइयत है दोनों में? जैसे दोनों का वुजूद एक दूसरे के लिए ही बना हो, दोनों एक दूसरे के दर्द को





# बदगुमानी

से बचकर ही पीस-फुल समाज बन सकता है

■ आयतुल्लाह मकारिम शीराज़ी

एक अच्छे और पीस-फुल समाज के लिए सबसे पहले “अम्नो अमान” ज़रूरी होता है क्योंकि अम्न व अमान के बिना “आज़ादी” नहीं हासिल हो सकती और आज़ादी के बिना फ़िक्री, जिस्मानी, दुनियावी व रूहानी सलाहियतें काम में नहीं लाई जा सकती जिसकी वजह यह है कि समाज उसी वक़्त तरक्की करता है जब समाज में अम्नो अमान पाया जाता है और अगर समाज में अम्नो अमान की जगह फ़साद व इख़्लेलाफ़ ले लेते हैं तो समाज के अंदर ठहराव पैदा हो जाता है। वैसे अम्नो अमान हमेशा जान व माल ही से रिलेटेड नहीं होता है बल्कि इस से बढ़कर इन्सान की समाजी इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त अहम होती है।

और इसके लिए फ़िक्री व ज़हनी आज़ादी बहुत ज़रूरी है। अगर अहमियत की निगाह से देखा जाए तो सबसे अहम मुक़ाम उसी का है।

फ़िक्री आज़ादी दो तरह की होती है:

**1- रूहानी और दिली सुकून:**

यानी इन्सान रूहानी और फ़िक्री एतेबार से ऐसा हो कि उसके ज़ेहन पर पड़ने वाले ज़हनी दबाव उसके ज़ेहन को बेकार करके न रख दें। साथ ही मुख़तलिफ़ तरह की परेशानियाँ उसकी उलझनों को न बढ़ा दें बल्कि होना यह चाहिए कि वह ज़ेहनी एतेबार से पुर सुकून और हर तरह की परेशानी से आज़ाद हो।

**2- दूसरों के ग़लत फैसलों और नज़रियों से बेफ़िक्री और आज़ादी:** इसका मतलब यह है कि दूसरे लोग उस पर तरह-तरह के बेवजह इल्ज़ाम न लगाएं ताकि उसका एहतेराम और इज़्ज़त बाकी

रह सके।

यह तो किल्यर है कि दुनियावी क़ानूनों और हुकूमत के ज़रिए सिर्फ़ जान-माल और किसी हद तक समाजी इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त भी मुमकिन है लेकिन फ़िक्री आज़ादी और वह भी दूसरों की तोहमतों और इल्ज़ामों से बचे रहने के एतेबार से सिर्फ़ आसमानी मज़हबों और अख़लाकी उसूल ही के ज़रिये हासिल हो सकती है। इसकी वजह यह है कि इन क़ानूनों और हुकूमतों में आमतौर पर दुनियावी पहलू ही पाए जाते हैं और सिर्फ़ मज़हबी अक़ाएद और अख़लाकी उसूल ही में इतनी सलाहियत पाई जाती है कि इन्सान को फ़िक्री आज़ादी दे सकें। इस्लाम ने इस सिलसिले में अहक़ाम और क़ानून की एक ज़बरदस्त दौलत इन्सानों को दी है जो कि खुद इस्लाम के सुपीरियर होने पर एक बड़ी दलील है। कुरआन मजीद ने साफ़ तौर पर मोमिनों को हुक्म दिया है, “ईमान वालो! अक्सर गुमानों से बचो कि कुछ गुमान गुनाह का दर्जा रखते हैं।”<sup>(1)</sup>

इस आयत में “अक्सर गुमानों से बचो” शायद इसलिए कहा गया है क्योंकि लोगों के एक-दूसरे के ख़िलाफ़ पाए जाने वाले गुमान ज़्यादा तर ग़लत होते हैं। इसी तरह कुरआन मजीद ने लोगों को एक बहुत बड़े ऐसे ख़तरे की जानकारी भी दे दी है जिसकी बुनियाद पर फ़िक्री आज़ादी बरबाद हो जाती है। लेकिन गुमान गुनाह होते हैं। शायद इसलिए बयान किया गया है कि लोगों की आपसी ग़लत फ़हमियों का एक बड़ा हिस्सा हकीक़त के ख़िलाफ़ और गुनाह होता है। इसलिए यहाँ अक़्तल हुक्म देती है कि इस से बचने के लिए



सूए ज़न, बदगुमानी और ग़लत फ़हमी की तमाम किस्मों से बचा जाए। रिवायतों में भी मोमिनों से मुताल्लिक सूए ज़न, बदगुमानी और ग़लत फ़हमियों से बचने के लिए बहुत ताकीद की गई है। इस सिलसिले में रसूले खुदा<sup>1</sup> फ़रमाते हैं, “खुदा ने मुसलमान के खून, माल और इज़्ज़त के बारे में बदगुमानी को हराम करार दिया है।”<sup>(2)</sup>

यह रिवायत इस वजह से बहुत अहम है क्योंकि इसमें चारों आज़ादियों यानी माल, जान, फ़िक्र और आबरू से मुताल्लिक आज़ादी को बराबर बताया गया है और सभी को एक साथ हराम किया गया है।

### बदगुमानी की पैदाइश की वजहें

बदगुमानी कभी सरसरी तौर पर और कभी शिद्दत के साथ एक ज़ेहनी बीमारी की तरह पैदा होती है और इन दोनों ही सूरतों में इसकी अलग-अलग वजहें पाई जाती हैं। जैसे:

1- अक्सर देखने में आता है कि बदगुमानी, इतेक़ाम लेने की ख़्वाहिश, कीना और हसद की वजह से होती है। इन्सान चूँकि इतेक़ाम नहीं ले पाता है तो एक दूसरे अंदाज़ से खुद को पुरसुकून करने की कोशिश करता है और एक दूसरा तरीका अपनाता है जिसका नतीजा यह होता है कि वह उस शख्स के बारे में कोई भी बुरी बात कह देता है और इस तरह उसको अपने तौर पर सज़ा देने की कोशिश करता है। दूसरे अलफ़ाज़ में यूँ कहा जाए कि जिस काम को वह अमली तौर पर नहीं कर पाता है उसको अपने ज़ेहन में करने की कोशिश करता है और इसी के ज़रिए अपनी रूह व दिल को किसी हद तक सुकून व आराम

देने की बेकार कोशिश करता रहता है।

सच यह है कि यह एक तरह से हकीकत से भागने और ख़यालों की दुनिया में सैर करने जैसा है और एक ऐसा मसला है जो साइकॉलोजी में साबित किया जा चुका है साथ ही यह भी कि जब भी इन्सान की ख़्वाहिशें अमली तौर पर पूरी नहीं हो पाती हैं तो वह ख़यालों की दुनिया में चला जाता है और अपने इस वेक्यूम को पूरा करने के लिए नये-नये ख़यालात पैदा करता रहता है।

कभी-कभी अपने इसी मक़सद के लिए वह ‘शाएराना ख़यालात’ और ख़्वाबों की दुनिया तक में चक्कर लगाने लगता है। इसीलिए आमतौर पर ऐसे शाएर ज़्यादा मशहूर होते हैं और शायरी की दुनिया में अपना एक अहम मुक़ाम बना पाते हैं जो अपनी शाएराना क्वालिटीज़ के साथ-साथ अपनी ज़िंदगी में किसी न किसी बड़ी नाकामी या हार का शिकार होते हैं और अपने मक़सद तक नहीं पहुँच पाते या अपने किसी से ज़बरदस्त किस्म के इश्क़ में नाकाम हो जाते हैं जिसका नतीजा यह होता है कि वह अपने माथूक़ को अपने ख़यालों और शेर-शायरी में तलाश करते हैं।

2- कभी-कभी बदगुमानी इन्सान की खुद अपनी कमज़ोरी की वजह से पैदा होती है। जिस तरह हद से ज़्यादा हुस्ने ज़न भी कभी-कभी इन्सान की अपनी पाकीज़गी और रूही तहारत की वजह से होता है। यानी इन्सान अपने बुरे या अच्छे होने की वजह से दूसरों को भी अच्छा या बुरा मान लेता है। लेकिन मुश्किल ज़्यादा तर उन्हीं लोगों को पेश आती है जो सीधे-सादे होते हैं और जिनकी जानकारी कम होती है।

3- बदगुमानी की एक और वजह भी पाई जाती है। अगर ऐसा होता है कि इन्सान किसी बुराई या गुनाह को अंजाम देने के बाद चाहता है कि किसी न किसी तरह किसी दूसरे शख्स को अपने उस गुनाह या बुराई में शरीक कर ले ताकि उस गुनाह या बुराई की वजह

से अपने ज़मीर में उठने

वाले तूफ़ान का किसी हद तक मुकाबला कर सके। इसके लिए वह दूसरों के खिलाफ़ बदगुमानी करने लगता है और चाहता है कि उनके अंदर भी अपनी जैसी बुराइयाँ देखे और इस तरह अपनी बुराई को सही समझने लगता है और मान लेता है कि सिर्फ़ मैं ही उस बुराई या गुनाह को करने वाला नहीं हूँ बल्कि दूसरे लोग भी हैं जो इसका शिकार हैं।

4- यह भी मुमकिन है कि बदगुमानी, तकब्वुर और खुद पसंदी की वजह से पैदा हो जाए क्योंकि ऐसे लोग चाहते हैं कि किसी भी तरह खुद को दूसरे से अच्छा साबित कर सकें। इसलिए कोशिश करते हैं कि अपने तौर पर दूसरों में कुछ न कुछ बुराइयाँ और कमियाँ तलाश कर लें ताकि उन लोगों की अहमियत व इज़्ज़त कम हो जाए और उनकी बरतरी साबित हो जाए।

5- समाजी माहोल और माँ-बाप या टीचर्स का असर भी सूए ज़न और बदगुमानी के पैदा होने में एक खास रोल अदा करता है।

6- बुरे लोगों के साथ उठना-बैठना और रहना सहना भी सूए ज़न की पैदाइश में असरदार होता है क्योंकि इन्सान के तमाम बड़े फैसलों की कसौटी आमतौर पर वह सोच होती है जिसको वह अपने आसपास के लोगों के साथ रहकर हासिल करता है। जिस तरह किसी शहर, मुल्क या क़ौम के बारे में कोई ख़ास नज़रिया कुछ ऐसे लोगों के साथ उठ-बैठ कर ही बना लिया जाता है जो उस मुल्क, शहर या क़ौम के होते हैं। इसलिए अगर इन्सान अपनी ज़िंदगी ऐसे लोगों के बीच गुज़ारे जिनमें शराफ़त और इन्सानियत न हो तो अपने-आप दूसरे तमाम लोगों के बारे में उसका बदगुमान होना ज़रूरी है। इसीलिए अहादीस में आया है:

“बुरे लोगों के साथ उठना-बैठना अपने साथ अच्छे लोगों के खिलाफ़ बदगुमानी लेकर आता है।”<sup>(3)</sup>

7- कभी-कभी बदगुमानी एक बिल्कुल सही वजह से भी पैदा हो सकती है जैसे अगर किसी ख़ास ज़माने या जगह के लोगों के बीच फ़साद और जुल्म फैल जाए तो इन्सान हर किसी को उसके उसी के एतेबार से देखता है और इस वजह से तमाम दूसरे लोगों के खिलाफ़ बदगुमान हो जाता है।

1- सूए हुज़रात/12, 2- मोहब्बतुल बैज़ा, 5/268,

3- बिहारुल अनवार, 74/197





से. आले हाशिम रिज़वी  
alehashim@yahoo.co.in

# पानी की कहानी

वजह से पानी में ऐसी खास बातें पाई जाती हैं जो ज़िंदगी के लिए बहुत अहम और हमें हैरान कर देने वाली हैं। पहाड़ी इलाकों में जो तालाब और झीलें होती हैं उनका पानी जाड़े के मौसम में जम जाता है। इसके बावजूद उसमें मौजूद मछलियाँ और दूसरे जानवर ज़िंदा रहते हैं। ऐसा क्यों? इस सवाल का जवाब पानी की हैरान कर देने वाली क्वालिटी में है। दरअसल पानी में एक ऐसी खास बात होती है जो किसी दूसरे लिक्विड में नहीं होती है। कोई भी लिक्विड ठंड बढ़ने पर सिकुड़ता है लेकिन पानी सिर्फ 4° सेंटीग्रेड टेम्प्रेचर तक सिकुड़ता है फिर उससे कम टेम्प्रेचर होने पर फैलने लगता है। यानी बर्फ में बदलने पर वह हल्का होकर पूरे तालाब या झील को ढक लेता है लेकिन नीचे का पानी बर्फ नहीं बनता जिसमें मछलियाँ वगैरा आराम से तैरती रहती हैं और ज़िंदा रहती हैं। इसके साथ ही वह हद से ज़्यादा गर्म या ठंडा भी नहीं होता है ताकि उसमें रहने वाली मछलूक ज़िंदा रहे। पानी हमारे जिस्म में आसानी से फैल जाता है और ज़रूरी चीज़ों को पूरे जिस्म में फैला देता है। पानी के बिना ज़िंदगी के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। अभी तक कोई ऐसी ज़िंदगी नहीं खोजी जा सकी है जो पानी के बिना मुमकिन हो।

कुदरत ने पानी में साफ़ करने और खुद साफ़ होने की क्वालिटी भी रखी है। पानी हमारी ज़िंदगी को साफ़ करने में तो मदद करता है, साथ ही खुद गंदा होकर फिर दोबारा साफ़ भी हो सकता है। सूरज की गर्मी नदी-समुन्द्र के पानी को भाँप बनाकर

पानी खुदा की कितनी बेहतरीन नेमत है इसका अंदाज़ा हमें प्यास लगने पर बखूबी हो जाता है। अल्लाह ने हमें और हमारे जैसी तमाम जानदार मख़लूक को पानी से ही पैदा किया है। इसका ज़िक्र कुरआने मजीद में मौजूद है। सूरए अम्बिया की 30वीं आयत में खुदा का इरशाद है, “क्या वह लोग जो मुनकिर हैं उन्होंने यह नहीं देखा कि यह आसमान और ज़मीन आपस में जुड़े हुए थे। और हम ने उन्हें अलग किया है और हर जानदार को पानी से पैदा किया है।” इसके अलावा शेख़ सद्दूक की किताब अल-तौहीद में पाँचवें इमाम मोहम्मद बाकिर<sup>30</sup> का इरशाद है कि “अल्लाह ने जिस मख़लूक को सबसे पहले बनाया वह पानी है और फिर उसी से तमाम मख़लूक वुजूद में आई।” कुरआन की आयत और इमाम के इरशाद से साफ़ ज़ाहिर है कि पानी हमारी ज़िंदगी और वुजूद का बहुत ही अहम हिस्सा है। मेडिकल साइंस के मुताबिक़ इन्सानि जिस्म में लगभग 60 से 70% तक पानी ही होता है। हमारे जिस्म की ही तरह हमारी इस दुनिया का भी लगभग 70% हिस्सा

पानी है। यही नहीं बल्कि पानी की मौजूदगी इस दुनिया के बाहर भी है। शेख़ सद्दूक की किताब अल-तौहीद में दर्ज रसूले इस्लाम<sup>30</sup> की एक हदीस के मुताबिक़ तमाम आसमानों में पानी के बहुत बड़े ज़ख़ीरे मौजूद हैं। यह हदीस हमारी इस दुनिया के बाहर पानी की मौजूदगी की तरफ़ इशारा कर रही है। साइंस की रिसर्च भी इससे इन्कार नहीं करती है। इस दुनिया के बाहर दूसरे प्लेनेट में ज़िंदगी का वुजूद और पानी की मौजूदगी के इम्कान को स्पेस साइंसटिस्ट कुबूल करते हैं।

साइंस की ज़बान में पानी हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के जोड़ से बनता है जिसे H<sub>2</sub>O कहा जाता है। यह जोड़ बहुत मज़बूत होता है। इसी



उड़ा देती है, और फिर वही भाँप साफ़ पानी की शक्ल में बरसात के ज़रिए ज़मीन पर वापस आ जाता है। इसी तरह साइंस और टेक्नोलॉजी के ज़रिए भी पानी का प्युरीफ़िकेशन होता रहता है। पानी ही ऐसा मैटीरियल है जो ज़मीन पर ठोस, तरल और गैस तीनों सूरतों में मिलता है।

पानी में दूसरी चीज़ों को घोलने की ताकत बहुत ज़्यादा होती है। अपनी इसी ताकत के ज़रिए वह तमाम जानदारों के जिस्म में हर ज़रूरी चीज़ को बड़ी आसानी से अंदर पहुँचा देता है और ग़ैर ज़रूरी चीज़ को आसानी से बाहर निकाल भी देता है। पानी की एक और बहुत खास क्वालिटी है जिसे साइंस की ज़बान में 'सरफ़ेसटेंशन' कहते हैं। इसे समझने के लिए आप पेन की रिफ़िल या कोल्ड-ड्रिंक पीने के लिए इस्तेमाल होने वाली स्ट्रॉ लीजिए और उसे पानी में डुबोइए तो आप देखेंगे कि पानी नली में चढ़ने लगता है। यही तरीका है पेड़-पौधों में पानी पहुँचने का, जिससे जड़, तना और पत्तियाँ तरोताज़ा रहती हैं। पानी में गर्मी को सोखने की भी बहुत ताकत होती है। बहुत ज़्यादा गर्मी पाकर पानी का टम्प्रेचर एक हद तक ही बढ़ता है। साइंसदानों के मुताबिक़ पूरी ज़मीन का टम्प्रेचर सिर्फ़ इसी वजह से मेनटेन है क्योंकि इसका बहुत बड़ा हिस्सा पानी है।

पानी अल्लाह की बेमिसाल और बेहतरीन नेमत है। इसकी बरबादी समाजी तौर से ही नहीं बल्कि मज़हब की नज़र में भी गुनाह है। पीने लायक़ साफ़ पानी की कमी उसकी बेवजह बरबादी और हमारी लापरवाही का ही नतीजा है। ज़मीन से हद से ज़्यादा पानी का निकाला जाना वाटर लेवल को घटा रहा है। हम ज़मीन से पानी निकाल तो रहे हैं लेकिन उस तक पानी पहुँचने के रास्ते बंद करते जा रहे हैं। इसके लिए कच्ची ज़मीन का होना बहुत ज़रूरी है जो धीरे-धीरे कम होती जा रही है। हर तरफ़ पक्के फ़र्श और सड़कें बन रही हैं जो वाटर लेवल को मेनटेन रखने में रुकावट पैदा कर रही हैं। इस प्रॉब्लम की तरफ़ सरकार, समाज और हर इन्सान को ध्यान देना चाहिए। इस सिलसिले में साइंसदानों ने कई तरीके बताए हैं। जिसमें एक आसान तरीका यह भी है कि हर मकान और मोहल्ले में ज़मीन का कुछ हिस्सा कच्चा ज़रूर रहे। पानी की शक्ल में अल्लाह ने हमें जो बेशकीमती नेमत दी है उसका सही इस्तेमाल और हिफ़ाज़त करना हम सब की ज़िम्मेदारी है। ●

# एक दुकानदार

■ शहीद मुतहरी

एक लम्बे-चौड़े और मज़बूत जिस्म वाला आदमी कूफ़े के बाज़ार से गुज़र रहा था। उसका चेहरा और मज़बूत जिस्म इस बात की गवाही दे रहा था कि उस बहादुर शख्स ने मैदाने जंग में यकीनन बहुत शुजाअत और बहादुरी दिखाई होगी। चेहरे पर ऐसी निशानियाँ मौजूद थीं जिन्हें मैदाने जंग की यादगार कहा जाता है। उसकी आँख के आसपास हलक़े भी पड़े हुए थे और बाज़ार से गुज़रते वक़्त भी उसके चेहरे से एक खास इत्मिनान की झलक मिल रही थी। दूसरी तरफ़ एक दुकानदार ने अपने साथियों को हंसाने के लिए एक मुट्ठी कूड़ा उसके ऊपर फेंक दिया। दुकानदार की इस नाज़ेबा हरकत पर उस आदमी ने ज़रा सा भी गुस्सा नहीं दिखाया और बड़े सुकून व इत्मिनान के साथ उसी तरह आगे कदम बढ़ाता चला गया जैसे कोई बात ही न हुई हो। जब वह आदमी कुछ दूर चला गया तो दुकानदार से उसके साथी ने कहा, “क्या तुम्हें पता है कि जिस के ऊपर कूड़ा फेंक कर तुम ने उसकी तौहीन की है वह कौन है?” “नहीं, मैं तो इस आदमी को क़तई नहीं पहचानता। मैंने तो यह सोचा कि हज़ारों दूसरे राहगीरों की तरह यह भी एक राहगीर है। अगर तुम्हें पता हो तो बता दो कि यह कौन था?”

“वाकई तुम ने नहीं पहचाना। बड़े ताज्जुब की बात है। यह कोई और नहीं बल्कि इस्लामी लश्कर के मशहूर किमांडर मालिके अशतर थे।”

“अरे! यह मशहूर कमांडर मालिके अशतर थे? वही मालिके अशतर जिनके डर से शेर का कलेजा भी पानी-पानी हो जाता है और जिनका नाम सुनकर दुश्मन काँप कर

रह जाता है। जिनकी बहादुरी के गुन गाए जाते हैं।”

“ओह! मैंने तो बहुत बड़ी ग़लती और गुस्ताख़ी कर दी। अभी-अभी यह हुक्म जारी कर देंगे कि मुझे मेरी ख़ता की सज़ा दी जाए। मैं इसी वक़्त इनके पीछे दौड़ता हूँ और इनका दामन पकड़ कर यह गुज़ारिश करता हूँ कि मेरी ग़लती माफ़ कर दें। मुझ से अंजाने में यह ग़लती हो गई है।”

यह कहते हुए वह दुकानदार मालिके अशतर के पीछे दौड़ने लगा। कुछ दूर चलने के बाद उसने देखा कि मालिके अशतर एक मस्जिद की तरफ़ चले जा रहे हैं। दुकानदार भी उनके पीछे-पीछे मस्जिद में दाख़िल हुआ, क्या देखता है कि मालिक नमाज़ पढ़ रहे हैं। वह थोड़ी देर तक उसी जगह इंतज़ार करता रहा। नमाज़ ख़त्म होते ही वह दुकानदार मालिके अशतर के सामने पहुँचा और बड़ी शर्मिंदगी के साथ बोला, “मैं वही आदमी हूँ जिसने अपनी नादानी और जिहालत की वजह से आपकी शान में गुस्ताख़ी की है।” मालिक ने उसको जवाब देते हुए कहा, “ख़ुदा की क़सम! मेरा मस्जिद आने का कोई इरादा नहीं था, मैं तो सिर्फ़ तुम्हारी ख़ातिर यहाँ आया हूँ क्योंकि मुझे मालूम हो गया था कि तुम बहुत नादान, जाहिल और गुमराह आदमी हो और लोगों को बेवजह तकलीफ़ पहुँचाया करते हो। तुम्हारी यह नादानी देखकर मेरा दिल तड़प उठा और मैं फ़ौरन ही मस्जिद की तरफ़ चला आया कि ख़ुदा की बारगाह में तुम्हारे लिए दुआ करूँ कि वह तुम्हें सीधे रास्ते की हिदायत कर दे। मेरा वह इरादा नहीं था जिसका डर तुम्हें यहाँ तक ले आया है।” ●



# खुम्स

■ अल्लामा ज़ीशान जवादी

खुम्स दीने इस्लाम के फ़ाइनैस का एक बहुत खास पिलर है और आज के ज़माने में दीनी तबलीग़ के लिए रीढ़ की हड्डी की तरह है। खुम्स न होता तो दीनी तबलीग़ का सिलसिला रुक जाता। खुम्स न होता तो दीनी इदारे बंद हो जाते। खुम्स न होता तो मराजे दीन के लिए कुछ भी न कर जाते और खुम्स न होता तो हकूमतें दीनदारों के फ़ाइनैस को हमेशा चैलेंज करती रहतीं।

यह खुम्स ही है जिसकी चहल-पहल हर तरफ़ नज़र आती है और जिसके दम से क़ौम के बड़े-बड़े मज़हबी इदारे चल रहे हैं और गाँव-गाँव में मकतबों की बहार नज़र आ रही है या मस्जिदों और इमामबाड़ों के बनने और फैलने का काम हो रहा है... वरना खुम्स की पाबंदी से पहले भी हम सब ने मज़हबी कामों और तबलीग़ का हाल देखा था जब रियासतें थीं, ज़मीनदारियाँ थीं, नवाब और महाराजा थे और आज भी देख रहे हैं जब मोमिनीन के खुम्स की बरकतें हर तरफ़ दिख रही हैं।

खुम्स ने उलमा और मराजे की आवाज़ में ताक़त पैदा की है। खुम्स ने दीनी इदारों को और मज़बूत बनाया है। खुम्स ने आज की ज़रूरत के तहत मदरसे और हौजे खोले हैं। खुम्स ने पुरानी मज़हबी इमारतों को नया बना दिया है और खुम्स ने ही बेदीन और बे मज़हब लोगों के चैलेंज का जवाब दिया है।

यही वजह है कि खुम्स के खिलाफ़ हर दौर में आवाज़ें उठी हैं और खुम्स पर तरह-तरह के शकों और सवालों से हमला किया गया है। किसी का मानना है कि खुम्स सिर्फ़ माले ग़नीमत में है। किसी का कहना है कि खुम्स इमाम का हक़ है और हम इमाम के गुलाम हैं इसलिए हमें इमाम का हक़ खाने का हक़ है। किसी को यकीन है कि मौला हमें खुद देते हैं। वह हम से किसी हक़ या माल की डिमांड बिल्कुल नहीं करेंगे... किसी का प्रोपेगंडा है कि खुम्स का चर्चा पिछले

पच्चीस साल पहले नहीं था। उसे फुर्रूफ़ दीन की एक गिन्ती के तौर पर याद कर लिया करते थे और बस... यह आज के मुल्लाओं की पैदावार है। इस से कौम को कुचला गया और मुल्लाओं ने अपने खाने-पीने का रास्ता निकाला है। जितने मुँह उतनी ही बातें और सबका मक़सद एक है कि मज़हबी ताक़तों को कमज़ोर बना दिया जाए और तबलीग़ दीन की राह में रुकावट पैदा कर दी जाए। कुछ लोग यह काम जान-बूझकर कर रहे हैं और कुछ हवा के रुख़ पर यह सोच कर बह रहे हैं कि अगर यह नारे कामयाब हो गए तो हमारा भी पैसा बच जाएगा...।

....खुम्स इस्लामी ज़िंदगी का बुनियादी पिलर है। इस क़ानून को कभी नहीं बदला जा सकता है और इसकी असली हक़ीक़त इमामे ज़माना के जुहूर के बाद ही ज़ाहिर होगी जब हक़दार अपना हक़ माँगेगा और मुख़ालिफ़त करने वालों को उनकी मुख़ालिफ़त का मज़ा चखाएगा।

यह सही है कि खुम्स की आयत जंगे बद्र में नाज़िल हुई है लेकिन इसके यह मायने बिल्कुल नहीं हैं कि जो आयत जहाँ नाज़िल हुई है वह वहीं की हो जाए वरना सारा इस्लाम मक्का मदीना का होकर रह जाएगा और हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के मुसलमान यह कहकर अलग हो जाएंगे कि कुरआन मक्का मदीना में नाज़िल हुआ है, हम से क्या मतलब, हालांकि ऐसा बिल्कुल नहीं है और यह इस बात की दलील है कि कहीं पर आयत का नाज़िल होना आयत को सिर्फ़ उसी जगह से नहीं बाँध देता।

जंग के मैदान में आयत के नाज़िल होने का सबसे बड़ा फ़ाएदा यह है कि इस तरह माले ग़नीमत रसूल<sup>ﷺ</sup> के हाथ में आया और आप अपने हाथों से खुम्स निकाल कर एक सिस्टम बना देंगे कि खुम्स की ज़िम्मेदारी सिर्फ़ अवाम और

उम्मत की नहीं है बल्कि रसूल<sup>ﷺ</sup> भी इसकी अदाएगी के ज़िम्मेदार हैं और अपनी निगरानी में हक़दारों को उनका हक़ दिलवाते हैं।

दूसरी तरफ़ इस से मुजाहिदों के नफ़स का तज़किया भी होगा कि राहे खुदा में जिहाद के बारे में ग़ारतगरी और लूटमार का ख़याल न पैदा होने पाए बल्कि मैदाने जिहाद में क़दम रखते हुए यह बात ज़ेहन में रहे कि जो माले ग़नीमत हाथ आया, उसमें से पहले हक़दारों का हक़ अदा किया जाएगा, उसके बाद आपस में बाँटा जाएगा।

जंगे बद्र में आयत के नाज़िल होने का एक राज़ यह भी है कि इस मैदान में खुदा ने मुसलमानों की कमज़ोरी का इलाज़ फ़रिशतों की ग़ैबी ताक़त के ज़रिए किया है और इसका तज़किया आयते खुम्स में किया है कि अगर तुम्हें मैदाने बद्र में हमारी मदद पर भरोसा है तो खुम्स निकालो... यानी खुदा यह समझाना चाहता है कि खुम्स निकालने के बाद माल की कमी से बिल्कुल मत डरो और यह याद रखो कि अगर माल में ज़ाहिरी तौर पर कमी पैदा हो भी गई और कोई और रास्ता भी नहीं है तो हम ने जिस तरह मैदाने बद्र में मुसलमानों की कमी को





फरिश्तों की मदद के ज़रिए पूरा किया है उसी तरह तुम्हारे माल की कमी का इलाज भी गैबी इमदाद के ज़रिए करेंगे। इसके बाद भी मुसलमान खुम्स निकालने पर तैयार न हो और खुदाई वादा बल्कि तारीखी तजुरबे पर भरोसा न करे तो इसका मतलब यह है कि उसका ईमान कमज़ोर है और वह खुदा के वादे को भी भरोसे के लाएक नहीं समझता है।

ताज्जुब की बात है कि मुसलमान जंगे ओहद में खुदा के वादे पर भरोसा न करें और भाग जाएं तो उनको आज तक बुरा कहा जाए और अगर बद्र के वादे बल्कि तजुरबे पर भरोसा न करें तो पक्के मोमिन समझे जाएं! हज़रत अली<sup>३०</sup> की आवाज़ आज भी फिज़ा में गूँज रही है “मुसलमान ईमान के बाद बेदीन नहीं होता।”

**खुम्स किन-किन चीज़ों पर वाजिब है**  
खुम्स सात चीज़ों में वाजिब होता है:

**1- मैदाने जिहाद का माले ग़नीमत** या हर वह माल जो काफ़िर से जंग के दौरान हासिल हो जाए चाहे वह जंग इमाम की इजाज़त से न भी हो और जिहाद भी न हो बल्कि सिर्फ़ डिफेंस हो। अहलेबैत<sup>३०</sup> से खुल्लम-खुल्ला दुश्मनी का एलान करने वाले लोग भी इसी हुक्म में हैं और उनका माल भी माले ग़नीमत है और उसमें भी खुम्स वाजिब है।

**2-मादनियात**(कान से निकलने वाली चीज़ें)... जैसे सोना, चांदी, तांबा, पीतल, अक्रीक, फीरोज़ा, याकूत, सुरमा, नमक, तेल, गंधक तारकोल की कान निकल आए और उसकी कीमत 20 दीनार सोने के बराबर हो तो उसका खुम्स निकालना वाजिब है।

**3- ख़ज़ाना...** सोने-चाँदी के सिक्कों का ख़ज़ाना मिल जाए तो ज़रूर वरना एहतियातन। 20 दीनार सोने या 200 दिरहम चाँदी के बराबर की मालियत होने पर खुम्स निकालना वाजिब है मगर शर्त यह है कि ख़ज़ाना किसी मुसलमान की मिल्कियत न हो। वरना अगर यह पता हो कि यह ख़ज़ाना किसी मुसलमान का है और वह मुसलमान मालूम न हो तो कुल माल उसके मालिक की तरफ़ से सदका कर दिया जाएगा ताकि मालिक को कम से कम सवाब ही मिल जाए, उस माल में खुम्स का कोई सवाल नहीं है और न ही पाने वाला मालिक हो सकता है।

**4- गोताख़ोरी...** से मिलने वाले जवाहरात की कीमत एक दीनार से कम भी हो तो उसका खुम्स निकालना वाजिब है। (एहतियात की बुनियाद पर)

इसमें समुन्द्र की शर्त नहीं है बल्कि बड़े दरिया से भी मोती-मूँगे बरामद किए हों तो उनका भी खुम्स निकालना होगा। लेकिन मछली वगैरा निकालने में खुम्स वाजिब नहीं होता।

**5- ज़मीन...** काफ़िरे ज़िम्मी अगर मुसलमान से ज़मीन ख़रीदे तो उस ज़मीन का खुम्स निकालना होगा चाहे ज़मीन खेती लायक हो या बंजर। इसके लिए यह भी शर्त नहीं है कि मामला ज़मीन के नाम से हो बल्कि मकान और बाग़, दुकान, हम्माम वगैरा के नाम से भी मामला हुआ हो तो भी ज़मीन का खुम्स निकालना होगा और मामले में भी ख़रीदारी की शर्त नहीं है यानी अगर किसी तरह भी ज़मीन की मिल्कियत काफ़िर ज़िम्मी को मिल जाए तो उस ज़मीन का खुम्स बहरहाल निकालना होगा। खुम्स में ज़मीन की शर्त नहीं है बल्कि कीमत का भी खुम्स निकाला जा सकता है।

**6- अगर हलाल माल, हराम माल में मिल जाए...** अगर कोई हलाल माल, हराम माल से मिल जाए और उसकी मिक़दार पता न हो और न ही मालिक का पता निशान हो तो उसका खुम्स निकाल देना सारे माल के हलाल होने के लिए

काफ़ी है। लेकिन अगर हराम की मिक़दार पता है तो उतनी मिक़दार का सदका दिया जाएगा। खुम्स का कोई फ़ाएदा नहीं होगा और एहतियात यह है कि यह सदका हाकिमे शरई की इजाज़त से हो क्योंकि खुम्स हलाल माल को हराम से अलग और पाक करने का ज़रिया है। हराम माल का इलाज सिर्फ़ यह है कि उसका मालिक मालूम हो तो मालिक को वापस किया जाए और न मालूम हो तो मालिक की तरफ़ से सदका दे दिया जाए ताकि मालिक को सवाब मिल जाए। खुम्स निकाल कर कोई शख्स उसका मालिक नहीं हो सकता।

**7- सालाना ख़र्चों से बचत...** इन्सान को इंडस्ट्री, बिज़नेस, खेती, किराया, हयाज़त, हिबा, हदिया, इनाम, माले वसियत, आम व ख़ास वक्फ़ के फ़ाएदों और अचानक मिलने वाली मीरास से जो आमदनी होती है उसमें से साल भर अपने और खुद से जुड़े लोगों के ख़र्च के बाद जो कुछ भी बाकी रह जाता है, उसमें खुम्स निकालना वाजिब है।

**मेहर** और वह मीरास जिसका पहले से पता हो और तलाके खुलई के मुआवज़े में जो माल मिले उस पर खुम्स वाजिब नहीं होता और एहतियात लाज़िम है कि खुम्स व ज़कात व रद्दे मज़ालिम से होने वाली आमदनी भी अगर साल के ख़र्च के बाद बच जाए तो उसमें से भी खुम्स निकाल दे।

अगर किसी इन्सान के पास ऐसी चीज़ है जिसमें खुम्स वाजिब नहीं होता या उसका खुम्स अदा कर चुका है और उसके बाद उसमें इज़ाफ़ा हो जाए जिस तरह जानवर के यहाँ बच्चा पैदा हो जाए, पेड़ में फल आ जाएं, जानवर का दूध निकाल ले, बैंक से इंटेस्ट मिल जाए तो उन सबका खुम्स निकालना वाजिब है बल्कि अगर जानवर

# मरयम

## AUG 2012

### Monthly Coupon

झों में शामिल होने के लिए  
10 कूपन जमा करके हमें भेजिए!



# आप भी **मरयम**

के लिए आर्टिकल भेज सकती हैं...

1. A4 साईज़ पर लिखा हो।
2. पेपर के एक साईड पर लिखा हो।
3. पहले कहीं छपा न हो।
4. आर्टिकल की ओरिजिनल कॉपी भेजिए।
5. भेजे गए आर्टिकल्स एडिटोरियल बोर्ड से पास होने के बाद ही पब्लिश किए जाएंगे।
6. आर्टिकल रिजेक्ट होने पर उसकी वापसी नहीं होगी।
7. आर्टिकल सिलेक्ट हो जाने के बाद अपने मुनासिब वक्त पर पब्लिश किया जाएगा।
8. आर्टिकल में एडिटर को बदलाव का इस्तिथार होगा।



तगड़ा हो गया है या पेड़ बढ़ गया है तो उस इज़ाफ़े का भी खुम्स निकालना चाहिए। सिर्फ़ बाज़ार की बढ़ी हुई कीमत का खुम्स उसी वक्त वाजिब होगा जब माल को बिज़नेस के लिए बचाकर रखे या ज्यादा कीमत पर बेच दे वरना अगर ज़रूरत के सामान की कीमत बढ़ जाए तो उसका खुम्स वाजिब नहीं होगा जैसे अगर बाप से एक लाख का बाग़ मीरास में मिले और फिर उसे दो लाख में बेच दे तो इस दूसरे एक लाख का खुम्स वाजिब नहीं होगा। इसी तरह अगर बाग़ को अपने आराम के लिए ख़रीदा था और फिर कीमत बढ़ गई तो उस बढ़ी हुई कीमत का खुम्स वाजिब नहीं है जब तक उस बढ़ी हुई कीमत पर बेच न दे।

यानी इस मसले की तीन किस्में हैं:-

1- माल को बिज़नेस के लिए बचाकर रखा है

तो बाज़ार की बढ़ती कीमत के मुताबिक़ बढ़ी हुई कीमत का खुम्स देना होगा चाहे बेचे भी न।

2- माल ऐसे ज़रिए से मिला है जिसमें खुम्स वाजिब नहीं होता जैसे मीरास तो बढ़े हुए माल का खुम्स वाजिब नहीं होगा।

3- माल को अपनी ज़रूरत के लिए हासिल किया है और बाद में ज्यादा कीमत पर बेच दिया तो बढ़े हुए माल का खुम्स वाजिब होगा।

• भेड़-बकरी के मालिक साल भर तक उसका दूध और ऊन वगैरा इस्तेमाल करते रहें और साल ख़त्म होने पर उनमें से कोई चीज़ बाकी रह जाए तो उसका खुम्स निकालना वाजिब है और उनमें से किसी चीज़ को बेच दिया है तो उसकी कीमत की बची हुई रक़म में से खुम्स निकालना होगा।

• जिस चीज़ को आमदनी का ज़रिया बना लिया है उसकी आमदनी का खुम्स वाजिब होता है, खुद उस असल माल का खुम्स वाजिब नहीं होता मगर शर्त यह है कि खुम्स निकालने के बाद उसे फ़राहम किया गया हो या उस पर खुम्स वाजिब न हो।

• अगर किसी चीज़ को आमदनी का ज़रिया बना लिया और साल के बीच उसकी कीमत बढ़ गई और नहीं बेचा और बाद में फिर पहली कीमत पर पलट आई तो बढ़ी हुई कीमत पर खुम्स वाजिब नहीं है। ●

## ‘मरयम’ के सब्सक्राइबर्स ध्यान दें

मरयम मैगज़ीन  
हर महीने नार्मल  
डाक से ही पोस्ट की  
जाती है। इसलिए  
रजिस्टर्ड डाक के  
लिए बार-बार फ़ोन  
न करें।

अगर किसी को  
रजिस्टर्ड डाक से  
मैगज़ीन चाहिए तो  
इसके लिए अलग  
से Rs. 240 सालाना  
देने होंगे।

 **Gift Coupon**



Name.....

Father's Name.....



# दो दिन रोज़ा रक्वाब की



बहुत से अभी बाकी हैं जो खालिस नियत से रोज़े भी रखते हैं। एक साहब जिनके बारे में मालूम था कि रोज़े से नहीं हैं, रमज़ान में बाज़ार से ढेरों फल लिए जा रहे थे। हमने हैरत से पूछा, “हुज़ूर! इतना सामान? आखिर किस लिए?”

“इफ्तारी के लिए” उन्होंने जवाब दिया।

“अच्छा तो कोई इफ्तार पार्टी दे रहे हैं आप?” हम ने गर्दन हिलाई।

“जी नहीं। ये अपनी इफ्तारी का इन्तिज़ाम है।”

जब आप ने रोज़ा ही नहीं रखा तो इफ्तारी के क्या मायने?”

“लो! रोज़ा नहीं रखा तो इफ्तारी के सवाब से भी महसूस रहें क्या?” उन्होंने कुछ गुस्से से कहा और आगे बढ़ गए। ये इन्हीं का एक मामला नहीं है, ढूँढ़िए तो हजार मिलते हैं। रोज़ा न रखने का कोई न कोई शर्ई या ग़ैर शर्ई रास्ता तैयार रखते हैं और इफ्तार पार्टियों में आगे-आगे होते हैं। अभी कल भी एक मेहरबान को अज़ान ही पर रोज़ा खोलते देखकर हम उनकी मज़हबियत के कायल होते होते रह गए। सूरते हाल ये थी कि बाकी लोग नमाज़े मगरिब के ख़त्म होने का इन्तेज़ार कर रहे थे और वह मेहरबान बेतहाशा खाए चले जा रहे थे। बाद में पता चला कि वह रोज़े से थे ही नहीं। न मालूम क्यों कुछ लोग रोज़े छोड़ने पर कोई शर्मिन्दगी भी महसूस नहीं करते। जबकि खुद हमें एक बार किसी वजह से दो दिन के रोज़े छोड़ना पड़े तो सारे दिन दूसरों से यूँ निगाहें चुराए फिरते रहे जैसे इन सब ने हमारे मुँह पर ‘रोज़ा ख़ोरी’ लिखा हुआ पढ़ लिया हो। सिवाए दवा और पानी के, मजाल है कि कुछ खाने पीने की

हिम्मत हुई हो। एक और रोज़ा ख़ोर दोस्त के सैकड़ों बार कहने पर जब हम उनके साथ चाय पीने गए तो बस अड़्डे तक का सारा इलाक़ा छान मारा। चाय कहीं भी न मिली। उधर दोस्त का पक्का इरादा था कि चाय पियेंगे। इधर हम परेशान कि किसी ने पर्दापोश होटल में घुसते या चाय पीते देख लिया तो ‘सारी इज़्ज़त’ ख़ाक़ में मिल जाएगी।

ख़ैर! अल्लाह का बहुत करम हुआ कि चाय नहीं मिली और हम होटलों से धुआँ उठता देखे बिना ही वापस आ गए। ये दिन का माजरा था। शाम को इससे भी ज़्यादा ज़ेहनी तकलीफ़ हुई। हर एक इफ्तारी की तैयारी में बिज़ी दिखाई दिया। कहीं फल ख़रीदे जा रहे थे, कहीं समोसे-पकौड़े। किसी के हाथ में शरबत की बोतल थी तो कोई जूस या दूध उठाए जा रहा था। घर में भी बरतनों की उठा-पटख़ जारी थी। इस्तेफ़ाक़ से मगरिब के वक़्त भी हम बाहर थे। अक्सर दुकानें बन्द थीं लेकिन खुली दुकानों में लोग काउंटरों, डेस्क़ों या दरी पर इफ्तारी का माल साजाए अज़ान के इन्तेज़ार में थे। रेडियों और होटलों पर एक हुज़ूम नज़र आ रहा था। अभी अज़ानें ख़त्म भी नहीं हुई थीं कि कुछ ने इफ्तार करना शुरू कर दिया। दो चार लुक़मे खाने के बाद चाय पीने वाले जल्दी-जल्दी चाय के घूँट भरने लगे। जो सिगरेट के आदी थे और दिन भर रोज़े की वजह से धुआँ नहीं उगल सके थे वह मस्जिदों के दरवाज़ों से कुछ दूर सिगरेट के कश पर कश लगा रहे थे। आख़िर इशा की नमाज़ भी तो पढ़ना थी।

खुलासा यह कि रोज़े की हालत में हमें सारे का सारा शहर रोज़ाख़ोर दिखाई देता था। आज सिवाए हमारे सब लोग रोज़ेदार लग रहे थे। देखा

जाए तो रोज़ाख़ोरी की वजह से इस हालत का शिकार होने में हमारी नेक नियती से ज़्यादा बुजुर्गों की तरबियत का असर था। हमारे बड़ों ने होश संभालते ही रोज़ा रखने की आदत डलवाई थी। सारे घर वाले सेहरी के वक़्त उठकर नमाज़ और कुरआन पढ़ने लगते थे।

माहौल का यही असर हमारे मिज़ाज में रच-बस गया था। मगर शायद हम अपनी अगली नस्ल को ऐसी तरबियत नहीं दे सकते क्योंकि ख़ौफ़े खुदा और रमज़ान के एहतेराम की जो बदतर हालत अब नज़र आती है वह पहले नहीं थी। हालाँकि पहले रमज़ान के एहतेराम में आम इस्तेमाल की चीज़ें महंगी नहीं होती थीं। नौबत यहां तक पहुंच चुकी है कि जमाख़ोर अपनी मर्ज़ी के दाम खरे करते हैं और रमज़ान के एहतेराम का मज़ाक़ उड़ाते हैं। बीमार मुर्गियां, बासी सब्ज़ियां और पुराना माल बेचने के लिए ‘रमज़ान सेल’ का एहतेमाम करते हैं। पहले होटलों में खाने पीने की चीज़ों की भरमार होती थी मगर इतनी ग़ैरत तो थी कि होटलों पर पड़े पड़े होते थे और बेरोज़ा लोग छुप कर इन होटलों में जाते थे मगर अब तो धड़ल्ले से होटलों में गहमा गहमी रहती है। खुद हम सवाब के लिए कम और दोस्तों की खुशी के लिए इफ्तार पार्टियों का एहतेमाम ज़्यादा करते हैं।

हम ये नहीं कहते कि सभी ऐसे हैं। बहुत से अभी बाकी हैं जो खालिस नियत से रोज़े भी रखते हैं और सच्चे दिल से रोज़े का एहतेराम भी करते हैं। यक़ीनन ऐसे ही लोगों के दम से रमज़ानुल मुबारक का महीना अपनी तमाम रहमतों, बख़्शिशों और बरकतों के साथ हमारे बीच दिखाई देता है। ●



# पकवान



## वेज बिरयानी

बासमती चावल - 2 कप  
मिक्स वेजीटेबल  
(गोभी, आलू, गाजर, फ्रेंच बीन्स) - 1 कप  
बारीक कटी प्याज - 3  
बारीक कटी हरी मिर्च - 2  
नमक - ज़रूरत भर  
लाल मिर्च पाउडर - 1 चम्मच  
दालचीनी, जीरा - 2 चम्मच  
लौंग - 4  
काली मिर्च पाउडर - 1/2 चम्मच  
टमाटर - 4  
दही - 1/2 कप  
तेल - 4 चम्मच  
सरसों - 1/2 चम्मच  
काजू-किशमिश - 3 चम्मच

बासमती चावल को धोकर रख लें। कुकर में चावल, 3 3/4 कप पानी, ज़रा-सा-नमक और दो चम्मच काजू-किशमिश डालकर पका लें। सभी सब्जियों को बारीक काट लें और उन्हें अलग-अलग तेल में फ्राई कर लें। मटर को भी फ्राई कर लें। अब फ्राईंग पैन में एक चम्मच तेल डालें और जब तेल गर्म हो जाए, तो उसमें सरसों, हरी मिर्च, दालचीनी, जीरा पाउडर, लौंग और काली मिर्च पाउडर डालकर कुछ देर भूनें। फ्राईंग पैन में प्याज डालें और उसे हल्का गुलाबी होने तक भूनें। नमक, लाल मिर्च पाउडर और बारीक कटा टमाटर डालें और अच्छी तरह से पकाएं। दही को अच्छी तरह से मिलाकर उसे भी फ्राईंग पैन में डाल दें और लगभग 10 सेकंड तक पकाएं। सभी भुनी हुई सब्जियों को भी पैन में डाल दें। अब पके हुए चावल को पैन में डालें और हल्के हाथों से मिलाएं ताकि चावल टूटे नहीं। लगभग तीन मिनट तक पकाएं। वेज बिरयानी को सर्विंग डिश में डालें। काजू-किशमिश और धनिया पत्ता से गार्निश करें। गरमागरम वेज बिरयानी को रायता और अचार के साथ सर्व करें।



चावल (पका हुआ) - दो कप  
प्याज - एक  
अदरक-लहसुन (बारीक कटा) - एक चम्मच  
हरी शिमला मिर्च - 1  
पीली शिमला मिर्च - आधी  
बीन्स - चार  
गाजर - आधी  
पत्ता गोभी (बारीक कटा) - एक कप  
काली मिर्च पाउडर - टेस्ट के हिसाब से  
हरी मिर्च (कटी हुई) - एक  
चिली सॉस - एक चम्मच  
सोया सॉस - एक चम्मच  
टोमैटो सॉस - एक चम्मच  
अजीनोमोटो (वैकल्पिक) - चुटकी भर  
बारीक कटा हरा प्याज (वैकल्पिक) - एक चम्मच  
तेल या घी - दो चम्मच  
नमक - टेस्ट के हिसाब से

सभी सब्जियों को धोकर बारीक काट लें। कड़ाही में तेल या घी गर्म करें और उसमें प्याज, अदरक-लहसुन पेस्ट और चुटकी भर नमक डालकर पारदर्शी होने तक भूनें। गाजर और बीन्स कड़ाही में डालें और उसे भी एक मिनट तक भूनें। शिमला मिर्च को भी कड़ाही में डालकर एक मिनट के लिए भूनें। पत्ता गोभी को भी उसमें डालकर कुछ देर तक भूनें। कड़ाही में सभी सॉस और अजीनोमोटो डालें और सब्जियों को अधपका होने तक भूनें। काली मिर्च पाउडर डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। अब कड़ाही में पके हुए चावल डालें, अच्छी तरह से मिलाएं। अगर और नमक की ज़रूरत हो, तो नमक भी डालें। कटे हुए हरे प्याज से गार्निश करें और सर्व करें।

वेज  
फ्राईड राइस







# पुदीना पुलाव

बासमती चावल - एक कप  
 पानी - 2 कप  
 लंबाई में कटी हुई प्याज - 1  
 नमक - अपने हिसाब से  
 तेज पत्ता - 2  
 बटर या घी - 2 चम्मच  
 भुना हुआ काजू - 1/2 कप गार्निशिंग के लिए  
 पेस्ट बनाने के लिए  
 पुदीना - 1/2 गुच्छा  
 हरा धनिया - 1/4 कप  
 अदरक - 1 इंच का टुकड़ा  
 हरी मिर्च - 2  
 दालचीनी - 1 टुकड़ा  
 लौंग - 1  
 (पुदीना और धनिये को धो लें और दूसरी सभी चीजों को मिलाकर बारीक पेस्ट तैयार कर लें।)

बासमती चावल को पानी में डुबोकर आधे घंटे के लिए छोड़ दें। चावल को पानी से निकालकर सुखा लें। कुकर या कड़ाही में थोड़ा-सा बटर या घी डालें। जब बटर या घी पिघल जाए तो उसमें तेजपत्ता डालें और एक-दो मिनट तक पकने दें। अब तैयार पेस्ट को कुकर में डालें और लगभग दो तीन मिनट तक भूनें। अब कुकर में चावल डालें और उसे तब तक भूनें, जब तक कि चावल सभी मसालों से अच्छी तरह से मिक्स न हो जाएं। अब जरूरत भर पानी डालें और चावल को पकाएं। एक अलग फ्राईंग पैन में थोड़ा-सा बटर डालकर काजू को भून लें। अब उसी फ्राईंग पैन में प्याज को पारदर्शी होने तक भूनें। तैयार चावल को काजू और भुने हुए प्याज से गार्निश करें और दही वाले सलाद के साथ सर्व करें।

# recipe

बसमती चावल (पका हुआ) - तीन कप  
 बेबी कॉर्न (बारीक कटा) - चार  
 शिमला मिर्च (बारीक कटी) - एक  
 करी पेस्ट (लाल या हरा) - दो चम्मच  
 हरी मिर्च (बारीक कटी) - दो  
 हरा प्याज (बारीक कटा) - छः  
 सोया सॉस - दो चम्मच  
 तेल - एक चम्मच  
 नमक और काली मिर्च पाउडर - टेस्ट के हिसाब से

कड़ाही में तेल गर्म करें और बेबी कॉर्न व शिमला मिर्च को 2-3 मिनट तक भूनें। कड़ाही में करी पेस्ट, मिर्च और हरा प्याज डालें। थोड़ी देर भूनें और उसमें चावल, सोया सॉस, नमक और काली मिर्च पाउडर को अच्छी तरह से मिला दें। गरमागरम सर्व करें।

# थाई मसाला राइस





# कैसे मेनटेन रखें सेहत?



■ अली ज़फ़र ज़ैदी  
तंज़ानिया

इस चीज़ से किसी को इन्कार नहीं होगा कि खाना हमारी ज़िंदगी का अहम हिस्सा है। और किसी को इन्कार भी कैसे हो सकता है जबकि खाना ज़िंदगी को आगे बढ़ाने का सबसे बड़ा ज़रिया है। इन्सान इस दुनिया में कदम रखते ही सबसे पहले जिस चीज़ की तलाश में लग जाता है वह उसका खाना है। पहले दिन से उसकी यही कोशिश होती है कि बस किसी तरह उसकी गिज़ा उसे मिल जाए। जबकि अभी तो यह इन्सान यह भी नहीं जानता कि उसे खाना क्या है? उसके लिए कौन-सी गिज़ा सही है और कौन सी ग़लत, उसे तो बस अपनी भूख मिटानी होती है। मगर खुदा ने ऐसा इंतेज़ाम किया कि न तो कहीं जाने की ज़रूरत और न ही सोचने की ज़रूरत कि क्या खाया जाए और क्या न खाया जाए? लेकिन

क्या हम ने कभी यह सोचा कि हमारी इतनी बड़ी मुश्किल कैसे हल हो गई? क्योंकि हमें तो खुद के बारे में कुछ पता नहीं था। लेकिन भले ही हमें कुछ नहीं मालूम था मगर उसे सब कुछ मालूम है जिसने हमारे अंदर खाने की ख्वाहिश रखी। इसका मतलब यही हुआ कि हमारा जिस्म हमारा अपना ही है फिर भी इसकी ज़रूरतों को हमसे बेहतर कोई और जानता है। और जब हमसे बेहतर कोई और जानता है तो ऐसा बिल्कुल नहीं हो सकता कि उसने इसके बारे में कोई उसूल और क़ानून न बनाए हों? यह बात अक़ल से परे लगती है।

हाँ! ऐसा ही है कि जिस खुदा ने हमें यह जिस्म और ज़िंदगी दी है उसने इसे सही ढंग से चलाने का सलीक़ा भी सिखाया है। आप कहेंगी कि अजीब बात है, भला खाने-पीने में कौन सा ऐसा राज़ छुपा है कि खुदा ने हमें इसके बारे में बताना ज़रूरी समझा है? मगर सच तो यही है। अगर ऐसा न होता तो खाने और पीने की वह चीज़ें जो हमारी ज़िंदगी को आगे बढ़ाने का ज़रिया थीं वही खाने और पीने की चीज़ें कभी-कभी हमारी हलाकत की वजह क्यों बन जातीं। खुदा कुरआन में फ़रमाता है, “खाओ और पियो मगर इसराफ़ मत करो।”

इस आयत से यह पता चलता है कि खाने और पीने की एक लिमिट है। इसराफ़ का मतलब सिर्फ़ यह नहीं है कि बस हमें खाने को फेंकना नहीं चाहिए बल्कि इसका मतलब यह है कि इन्सान को अपनी लिमिट और डाइट के मुताबिक़ ही खाना चाहिए। क्योंकि अगर खाना डाइट से ज्यादा हो जाए तो न सिर्फ़ यह कि खाना बरबाद होगा बल्कि हमारी सेहत भी ख़राब हो जाएगी। अब सवाल यह है कि हमें आमतौर से अपने खाने में क्या खाना

चाहिए और कब खाना चाहिए?

ज़ाहिर है कि अच्छी सेहत पाने के लिए सबसे पहले हमें हमेशा कोशिश करना चाहिए कि हमारी डाइट एक बैलेंस्ड डाइट हो। इसके बाद दूसरा और अहम प्वाइंट यह है कि अच्छी सेहत को मेनटेन रखने के लिए हमें हमेशा ग़ौर करना चाहिए कि हमारे खाने का टाइम क्या है। क्योंकि अगर हमारे खाने का टाइम सही नहीं होगा तो हम कुछ भी खा लें, हमें उतना फ़ायदा नहीं होने वाला है जितना हम सोचते हैं बल्कि हो सकता है कि हमारी सेहत के लिए नुक़सानदेह साबित हो।

आमतौर से दिन के खाने की शुरुआत सुबह के नाश्ते से होती है। इसलिए ज़रूरी है कि हम नाश्ते की शुरुआत उन चीज़ों से करें जो हमारी रात भर की फ़ास्टिंग की भरपाई कर सकें। ज़्यादातर हमारे समाज में लोग सुबह अपनी रात भर की फ़ास्टिंग को चाय से ब्रेक करते हैं जो किसी भी एंगिल से सही नहीं है। आज की मार्डन रिसर्च और मेडिकल साइंस की नज़र से अगर इन्सान सुबह उठकर नहारमुंह पानी पीता है तो यह उसके डॉयजेस्टन के लिए बहुत अच्छा होगा। ख़ाली पेट पानी पीने से हमारा पेट ही साफ़ नहीं होगा बल्कि इसके और भी बहुत से फ़ायदे हैं।

नाश्ते में बहुत स्पोर्ट्स और ऑयली खाना भी सेहत के लिए सही नहीं है क्योंकि हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारा नाश्ता कम से कम 8 से 10 घंटे की फ़ास्टिंग के बाद होने जा रहा है और स्पाइसी और ऑयली फ़ूड हो सकता है कि हमारे डॉयजेस्टन को ख़राब कर दे। इसलिए अगर नाश्ता सादा और प्रोटीन से भरा होता है तो यह सेहत के लिए बहुत अच्छा होता है। जैसे अंडे, दूध, सादी रोटी, वेजेटेबल और फ़्रूट्स वगैरा...





सबसे ज़रूरी चीज़ यह है कि हमें हमेशा नाश्ता ज़रूर करना चाहिए और याद रखें कि अगर हम नाश्ता नहीं करेंगे तो दोपहर और रात का खाना भी सही से नहीं खा सकेंगे। दोपहर के खाने और नाश्ते में मुनासिब गैप होना चाहिए क्योंकि जितना ज़्यादा गैप होगा हमारी बॉडी फ़ास्टिंग की हालत में चली जाएगी और इस फ़ास्टिंग को मेनटेन करने के लिए वह ज़्यादा से ज़्यादा फ़ैट रिज़र्व करने लगेगी और हमारा बदन फ़ैटी होने लगेगा। इसलिए अगर हमारी बॉडी को यह एहसास हो जाए कि अभी बहुत देर तक कुछ खाने को नहीं मिलने वाला है तो वह हमेशा फ़ैट रिज़र्व करने लगती है। दोपहर के खाने के बाद बहुत ख़ास चीज़ है, वह मिड-डे गैप जिसे हमारी रिवायात में कैलूला के नाम से पुकारा गया है। यह हमारे डॉयजेक्शन और दिन भर की थकी हुई बॉडी के रेस्ट में बहुत ही ज़्यादा फ़ाएदेमंद चीज़ है। मिड-डे गैप (कैलूला) अगर 15 मिनट का भी हो तो काफी है।

अब बारी रात के खाने की है। रात का खाना आज के हमारे समाज में बहुत ही ज़्यादा हैवी, स्पाइसी और ऑयली हो गया है जो कि हमारी सेहत के लिए नुकसानदेह साबित हो रहा है। यहाँ पर यह जानना भी ज़रूरी है कि खाने का हैवी या लाइट होने का मतलब यह है कि हम कितने कैलोरीज़ एनर्जी उस खाने से ले रहे हैं। मुश्किल यह है कि आज हमारी जिंदगी का शेड्यूल काफी बदल गया है और आमतौर पर लोग रात का खाना लेट खाते हैं और फिर थोड़ी देर बाद सोने चले जाते हैं। जबकि रात का खाना सोने से कम से कम 2 घंटे पहले खा लेना चाहिए। रात में देर से या हैवी मील का हमारी सेहत पर क्या असर पड़ता है वह कुछ इस तरह है।

**1- नींद में इंटरप्शन:** रात में हैवी या स्पाइसी और फ़ैटी खाना इन-डॉयजेक्शन पैदा कर सकता है जिसकी वजह से नींद ख़राब हो सकती है।

**2- हाई ब्लड शुगर:** सुबह के वक़्त ब्लड शुगर का हाई होना डाइबिटीज़ की निशानी है और अक्सर यह तभी होता है जब हम रात को हैवी मील ख़ासतौर से ज़्यादा कार्बोहाइड्रेट्स वाला खाना खाकर फ़ौरन सो जाते हैं।

**3- वज़न का बढ़ना:** वैसे तो दिन में किसी भी वक़्त ज़्यादा और हैवी मील से हमारा वेट बढ़ता जाता है, मगर रात का हैवी खाना आपके बॉडी वेट को बहुत तेज़ी से बढ़ाता है चाहे आपने दिन में थोड़ा ही क्यों न खाया हो। इसीलिए रात में हेल्थी और लो कैलोरी भरा खाना ही सही है।

इसीलिए इस्लाम ने रात में हल्की ग़िज़ा पर बहुत ज़ोर दिया है। ●



# सेब



रिसर्च ने साबित किया है कि जो लोग बिना नागा किए एक सेब खाते हैं, सेहत उनके चेहरे से झलकने लगती है। रोज़ाना एक सेब खाने से न सिर्फ़ जिस्मानी बल्कि ज़ेहनी कुव्वत में भी बेहद इज़ाफ़ा होता है।

सेब सिर्फ़ एक फल ही नहीं है बल्कि ये बेहतरीन ग़िज़ा भी है और हुस्न का ज़रिया भी।

रिसर्च के मुताबिक़ एक सेब में फ़ास्फ़ोरस की इतनी मिक्दार होती है जो इन्सान की जिस्म की ज़रूरत को फ़ौरन पूरा कर सकती है। सेब के छिलकों में विटामिन 'सी' का ख़ज़ाना छिपा होता है जो इन्सान की जवानी को कायम रखने के लिए जादू का काम करती है। सेब का आधा हिस्सा ठोस होता है जिसमें शुगर और प्रोटीन होती है और बाकी हिस्सा पानी होता है। एक रसीले मीठे और पके सेब में 80 फ़ीसद पानी शामिल होता है जिसमें विटामिन भरे-पड़े होते हैं। सेब में विटामिन 'ए' सबसे ज़्यादा पाया जाता है। विटामिन 'बी' थायामीन, राइबो फ़्लावीन और नायासीनीन की मौजूदगी भी सेब को दूसरे फलों से अलग कर देती है। आइरन व प्रोटीन एनर्जी देते हैं और सेब में 0.3 मिलीग्राम आइरन पाया जाता है जो हेमोग्लोबीन की कमी को पूरा करता है। कैलोरीज़ से भरा ये फल कुछ ऐसे मिन्टेल साल्ट्स का ख़ज़ाना भी है जो जिस्म के सेल्स को फलने-फूलने में अहम रोल अदा करते हैं। इस फल में मिल्क ऐसिड का एक रेशा 'पेक्टन' मौजूद होता है जिससे हाज़मा अच्छा हो जाता है।

कच्चा सेब भी कम कैलोरीज़ वाला एक स्नैक कहा जा सकता है। एक दरमियानी साइज़ के सेब में 70 कैलोरीज़ होती हैं। सेब का जूस विटामिन 'सी' से भरपूर होता है। सेब के छिलके

में रेशों की बहुत बड़ी मिक्दार पाई जाती है जो सेब को खून का हिस्सा बनने में मदद करते हैं।

न्यूट्रिशियन एक्सपर्ट्स सेब को एक दिमागी हेल्थ वाला फल बताते हैं। ये फल सुस्त, उदास और थके हुए लोगों को ताज़ा दम कर सकता है। सेब के न्यूट्रिशियन के बारे में एक ख़ास बात ये भी है कि सेब में ऐसे ऐसिड पाए जाते हैं जो जिगर के काम करने की ताक़त को बढ़ा देते हैं।

बड़ी उम्र वाले लोगों के लिए सेब एक जादुई दवा की तरह है क्योंकि इसमें फ़ास्फ़ोरस के ज़्यादा होने से जोड़ों में तकलीफ़ से निजात मिल जाती है और साथ ही खून में जमा होकर नुकसान पहुँचाने वाले माददों का ख़ात्मा करने में सेब बहुत मददगार साबित होता है। वैसे खट्टे ज़ायके वाले सेब मरीज़ों के लिए फ़ाएदेमन्द नहीं होते।

## सेब से इलाज

एक्सपर्ट्स सूखी खांसी, भूख की कमी, दुबलेपन वगैरा के लिए सेब खाने को कहते हैं। उनका मानना है कि सेब के रोज़ाना इस्तेमाल से बीमारियों से बचा जा सकता है। नई रिसर्च के बाद ये एहतियात भी ज़रूरी समझी जाती है कि सेब खाने के बाद फ़ौरन पानी पीने से बचना ज़रूरी है। सेब खाने का बेहतरीन वक़्त सुबह नाश्ते के एक घंटे बाद या दोपहर के खाने के बाद का है।

रोज़ाना एक सेब खाने वाले लोगों की ओवर-ऑल हेल्थ में बहुत ज़्यादा बेहतरी नज़र आने लगती है।

सेब के गूदे से दाँतों की बीमारियाँ बहुत हद तक ख़त्म हो जाती हैं और मुँह में पैदा होने वाले बेक्टीरियाज़ हलाक हो जाते हैं। यही नहीं बल्कि दाँतों की चमक और मसूढ़ों की सेहत में सेब जादुई रोल अदा करता है। ●





# अली<sup>अ०</sup> का यौमे शहादत जिन्दगी का रास्ता

इस्लामी दुनिया ही नहीं बल्कि पूरी इन्सानियत की सबसे ज़्यादा अज़ीम हस्तियों में रसूल इस्लाम<sup>अ०</sup> के बाद सबसे पहला नाम हज़रत अली<sup>अ०</sup> का आता है लेकिन आप से मुहब्बत और अक़ीदत रखने वालों की तारीख़ में बहुत से लोग जानबूझकर या अनजाने में ज़्यादती या कमी का भी शिकार हुए हैं। शायद इसीलिए यह दुनिया दोस्ती और दुश्मनी की बुनियाद पर कई ग्रुप और जमाअतों में तक़सीम हो गई है। इस बारे में खुद हज़रत अली<sup>अ०</sup> ने नहजुल बलागा के ख़ुतबा/127 में एक जगह फ़रमाया है, “जल्द ही मेरे सिलसिले में दो ग़िरोह हलाक होंगे, एक वह दोस्त जो ज़्यादती से काम लेंगे और नाहक़ बातें मेरी तरफ़ जोड़ेंगे और दूसरे वह दुश्मन जो कमी से काम लेकर दुश्मनी में इतना आगे बढ़ जाएंगे कि ग़लत रास्ता अपना लेंगे। मेरे सिलसिले में बेहतरीन अफ़राद वह हैं जो इन दोनों के बीच का रास्ता अपनाते हैं और हक़ की राह में हद से आगे नहीं बढ़ते।”

हम जब अहलेबैत<sup>अ०</sup> से मुहब्बत करते हैं और उनको अपने लिए नमूनाएँ अमल समझते हैं तो सिर्फ़ इसलिए नहीं कि वह हमारे नबी<sup>अ०</sup> की औलाद हैं और उनकी नस्ल और ख़ानदान से ताल्लुक़ रखते हैं बल्कि इसलिए मोहब्बत करते हैं और उनके बताए हुए रास्ते पर चलते हैं कि वह खुदा की नज़र में अज़ीज़ और मोहतरम हैं। उनको अल्लाह ने अपना नुमाइन्दा, तमाम इन्सानों का इमाम और रहबर बनाया है लेकिन जिन लोगों ने अहलेबैत<sup>अ०</sup> को सही तौर पर नहीं समझा वह उनको या तो सिर्फ़ रसूल<sup>अ०</sup> की औलाद समझकर मानते और उनका एहतेराम

करते हैं या फिर कुछ लोग सिर्फ़ एक अच्छा इन्सान ही समझकर उनकी तारीफ़ करते और उन पर अक़ीदा रखते हैं लेकिन मुसलमानों के लिए सबसे अहम बात ये है कि उनको इमाम और रहनुमा खुदा ने बनाया है। उसी ने उनको नमूना बनाकर उनकी पैरवी को वाजिब बताया है। उनकी सीरत से सबक़ हासिल करना और उनके हुक्म के मुताबिक़ अपने को ढालना हमारा फ़र्ज़ है। इसलिए ज़रूरी है कि हज़रत अली<sup>अ०</sup> की मुहब्बत में इस बात का ध्यान रखा जाए कि अली<sup>अ०</sup> की पैरवी दूसरों की पैरवी की तरह नहीं है। उनकी पैरवी खुदा और रसूल<sup>अ०</sup> की पैरवी के बराबर है। एक मुसलमान हज़रत अली<sup>अ०</sup> से मुहब्बत और उनकी बताई हुई बातों पर अमल इबादत समझ कर करता है। जिस तरह कुरआन की तिलावत, रसूल<sup>अ०</sup> की बताई हुई बातों पर अमल करना, नमाज़-रोज़े का अदा करना, हज़ करना और अल्लाह की राह में जिहाद और सरफ़रोशी इबादत है उसी तरह अली<sup>अ०</sup> की मुहब्बत और पैरवी भी इबादत है। ज़ाहिर है ऐसी मुहब्बत और पैरवी हम तभी कर सकते हैं जब हम उनकी इमामत और रहबरी को सही तरह से समझ कर उस पर अमल करेंगे। दूसरी

तरफ़ मुहब्बत की एक दूसरी सूरत भी है जो दरवेशों और फ़कीरों के यहाँ पायी जाती है। वह भी हज़रत अली<sup>अ०</sup> की अमली जिन्दगी से खुद को दूर किये हुए हैं। एक ईसाई स्कॉलर जार्ज जुरडैक कहता है, “मैं खुदाओं की परस्तिश करता हूँ। मेरे लिए अली इब्ने अबी तालिब कमाल, अदालत और बहादुरी के परवरदिगार हैं।” इस ईसाई स्कॉलर की यह बात एक अलग तरह की मुहब्बत का इज़हार है। वह ईसाई था और ईसाई ही रहा, उसने “अली: दि व्यॉइस ऑफ़ हयुमेन जस्टिस” के नाम से हज़रत अली<sup>अ०</sup> की शान में एक किताब तक लिख दी जो कई जिल्लों में है मगर उसकी ये मुहब्बत इस्लाम के हिसाब से दीनी पैमाने पर पूरी नहीं उतरती। इस्लाम में वही मुहब्बत सही मानी जा सकती है जो सही समझ-बूझ के साथ हो। अब अगर ऐसी मुहब्बत हो जिसमें कोई हज़रत अली को खुदा





के दर्जे में पहुँचाने की कोशिश करे तो यह हद से आगे बढ़ना और शिर्क है। इसीलिए हदीस में है, “ह-ल-क फीहे रजुलानि मुबिजुन का-ल व मुहिबुन गा-ल।” यहाँ पर “मुबिजुन का-ल” उन लोगों के लिए आया है जो जानबूझ कर अली<sup>अ</sup> के फज़ाएल छुपाते या उनका इनकार करते हैं और “मुहिबुन गा-ल” से मुराद मुहब्बत के वो झूठे दावेदार हैं जो हज़रत अली<sup>अ</sup> को खुदा की मंज़िल तक पहुँचा देते हैं। एक मुसलमान की हैसियत से जब हम अली इब्ने अबी तालिब<sup>अ</sup> की सीरत और किरदार का जायज़ा लेते हैं तो वह खुदा की बन्दगी, रसूले इस्लाम<sup>अ</sup> की ज़ानशीनी और मुसलमानों के इमाम और रहबर होने के लिहाज़ से एक बेहतरीन और मुकम्मल इन्सान नज़र आते हैं। इसीलिए उनकी शख़्सियत और किरदार हमेशा बाक़ी रहने वाला है। 19 रमज़ान को सहर के वक़्त सजदे की हालत में जिस वक़्त हज़रत अली<sup>अ</sup> की पेशानी खून में डूबी, खुदा के भरोसेमन्द और रसूले इस्लाम<sup>अ</sup> के अमानतदार,

फ़रिश्तों के अमीर, जंगे ओहद में ‘ला फ़ता इल्ला अली, ला सैफ़ इल्ला जुलफ़िकार’ का नारा बुलन्द करने वाले ज़िबरेल ने तड़पकर आवाज़ बुलन्द की थी, “खुदा की कसम! अरकाने हिदायत मुन्हदिम हो गये” यानी हिदायत की बुनियाद हिल गई और ऐसे में जब कूफ़े की मस्जिद में मौजूद सारे मुसलमान अपने इमाम के गुम में नौहा व मातम कर रहे थे तो खुदा का ये सच्चा बन्दा अपने परवरदिगार से मुलाकात की चाहत में आवाज़ दे रहा था, “काबे के रब की कसम! मैं कामयाब हो गया।” अली<sup>अ</sup> आज भी कामयाब हैं क्योंकि उनकी सीरत और किरदार, उनकी बताई हुई बातें, उनकी हयात और शहादत का एक-एक

पहलू न सिर्फ़ इस्लामी दुनिया बल्कि पूरी इन्सानियत की कामयाबी की ज़मानत समझा जाता है। इसीलिए अली<sup>अ</sup> से सच्ची मुहब्बत और समझ रखने वाले कल भी और आज भी इस बात का इक़रार करते हैं कि अली<sup>अ</sup> की शहादत तारीख़े इन्सानियत के लिए एक बहुत बड़ा नुक़सान और ऐसी मुसीबत है कि इस पर जितना मातम किया जाए कम है। रसूले इस्लाम<sup>अ</sup> की वफ़ात के बाद इस्लामी उम्मत का

वह कारवाँ जो 25 साल पीछे ढकेल दिया गया था जब हज़रत अली<sup>अ</sup> की विलायत और इमामत मान लेने को तैयार हुआ और हुकूमत की बागडोर हज़रत अली<sup>अ</sup> के हवाले कर दी, तो 18 ज़िलहिज्जाह 35 हिजरी से 21, रमज़ान 40 हिजरी तक 4 साल 10 महीने के छोटे से अरसे में हज़रत अली<sup>अ</sup> ने वह अज़ीम कारनामे तारीख़ में दर्ज करा दिये कि अगर हुकूमत की हवस में उनको जुल्म की तलवार के ज़रिए छुपाने या ख़त्म करने का जुर्म और साज़िश का खेल न खेला गया होता तो शायद इस्लामी दुनिया की तक़दीर ही बदल जाती। इसके बावजूद अली<sup>अ</sup> ने रसूले इस्लाम<sup>अ</sup> की 23 साल की ज़िन्दगी के साथ अपनी पाँच साल की हुकूमत के दौरान ऐसी निशानियाँ छोड़ी हैं जिससे रहती दुनिया तक इस्लाम को कोई मिटा नहीं सकता बल्कि इस्लाम हमेशा के लिए ज़िन्दा हो गया है। इसी के साथ क़ायमत तक इस ज़मीन पर क़ायम होने वाली हर हुकूमत इसकी रौशनी में इन्सानियत की हर ज़रूरत बेहतरीन ढंग से पूरी कर सकती है लेकिन 21 रमज़ान को अली<sup>अ</sup> की ज़िन्दगी का वह پاک-साफ़ चश्मा जो इस्लामी दुनिया को हमेशा सेराब कर सकता था हम से छीन लिया गया। इसलिए ये मुसीबत हमेशा के लिए एक बहुत बड़ी मुसीबत है जिसके लिए पूरी दुनिया आज भी अली<sup>अ</sup> के गुम में सोगवार है।

19 रमज़ान 40 हिजरी: हज़रत अली<sup>अ</sup> कूफ़े की मस्जिद में कातिलाना हमले में ज़ख्मी हुए। एक शख्स इब्ने मुल्जिम जो उन तीन आदमियों में से एक था जिन्होंने मक्के में क़सम खाई थी कि तीन







लोगों यानी इमाम अली<sup>ؑ</sup>, हाकिमे शाम और अग्ने आस को क़त्ल कर डालेंगे। इनमें से हर एक अपने मनसूबे के मुताबिक़ रवाना हुआ। अब्दुल रहमान इब्ने मुल्जिम मुरादी 20 शाबान को कूफ़े में पहुँचा। उन्नीसवीं रमज़ान 40 हिजरी को सहर के वक़्त कूफ़े की जामा मस्जिद में हज़रत अली<sup>ؑ</sup> के आने का इन्तेज़ार कर रहा था। दूसरी तरफ़ एक औरत 'कुत्तमा' ने 'वरदान बिन मुजालिद' नाम के एक

आदमी को अपने कबीले के दो आदमियों के साथ उसकी मदद के लिए भेजा। इस साज़िश में इन लोगों की रहनुमाई और हौसला बढ़ाने के लिए इमाम अली<sup>ؑ</sup> का एक बागी सिपाही अशअस बिन कैस किन्दी जो अपने ज़माने का बहुत बड़ा मुनाफ़िक् और चापलूस आदमी था वह भी शरीक था। हज़रत अली<sup>ؑ</sup> 19वीं रमज़ान की शब अपनी बेटी उम्मे कुलसूम के यहाँ मेहमान थे। रिवायात में है कि उस रात आप सोये नहीं और कई बार कमरे से बाहर आकर आसमान की तरफ़ देखकर फ़रमाया, “खुदा की कसम! मैं झूठ नहीं कहता और न ही मुझे झूठा कहा गया है, यही वह रात है जिसमें मुझसे शहादत का वादा किया गया है।” इसी तरह रात गुज़ारने के बाद सुबह की नमाज़ के लिए आप कूफ़े की जामा मस्जिद में आए और वहाँ सो रहे लोगों को जिनमें खुद इब्ने मुल्जिम भी था, जो पेट के बल लेटा हुआ था, जगाया और नमाज़ पढ़ने को कहा। जब आपने मेहराब में नमाज़ शुरू की तो पहले सजदे से अभी सर उठा ही रहे थे इब्ने मुल्जिम ने अपनी तलवार से हज़रत अली<sup>ؑ</sup> के सर पर हमला किया जिससे आपका सर सजदे की जगह से माथे तक ज़ख्मी हो गया। हज़रत अली<sup>ؑ</sup> मेहराब में गिर गये और इसी हालत में फ़रमाया, “काबे के रब की कसम! मैं कामयाब हो गया।” कुछ नमाज़ी इब्ने मुल्जिम को पकड़ने के लिए बाहर दौड़े और कुछ हज़रत अली<sup>ؑ</sup> की तरफ़ बढ़े और कुछ ये सब देखकर रोने पीटने और मातम करने लगे। हज़रत अली<sup>ؑ</sup> के सर से खून जारी था। इसी हालत में आपने फ़रमाया, “ये वही वादा है जो खुदा और उसके रसूल<sup>ﷺ</sup> ने मुझ से किया था।” अब ऐसी हालत में हज़रत अली<sup>ؑ</sup> ने अपने बेटे इमाम हसन<sup>ؑ</sup> से नमाज़ जमाअत पढ़ाने

को कहा और खुद भी बैठ कर नमाज़ अदा की।

रिवायत में है कि जब इब्ने मुल्जिम ने अली<sup>ؑ</sup> के सर पर तलवार मारी तो ज़मीन हिल गई, दरया की मौजें थम गईं और आसमान थरथरा गया, कूफ़े की मस्जिद के दरवाज़े आपस में टकराये, आसमान से फ़रिश्तों की सदाएं बुलन्द हुईं और ऐसी काली घटाएं छा गईं कि ज़मीन पर अन्धेरा छा गया। ज़िब्रीले अमीन की आवाज़ गूँजी, जिसे हर एक ने सुना। वह कह रहे थे, ‘खुदा की कसम! अरकाने हिदायत मुन्हदिम हो गये।’

इल्मे नबुव्वत के चमकते सितारे को ख़ामोश कर दिया गया और परहेज़गारी की निशानी को मिटा दिया गया क्योंकि रसूल खुदा<sup>ﷺ</sup> के चचाज़ाद भाई, अली<sup>ؑ</sup> को शहीद कर दिया गया। सय्यदुल औसिया अलीये मुरतज़ा<sup>ؑ</sup> को शहीद कर दिया गया और उन्हें शक़ी तरीन ज़ालिम, इब्ने मुल्जिम ने शहीद किया।

इस तरह एक बेहतरीन रहबर, इन्साफ़ करने वाले इमाम और हाकिम, यतीमों के हमदर्द और मेहरबान, एक मुकम्मल इन्सान, खुदा के वली, रसूल खुदा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा<sup>ﷺ</sup> के जानशीन को इस दुनिया के सबसे ज़ालिम इन्सान ने क़त्ल कर डाला और वह अल्लाह की राह में पैग़म्बरों और रसूल खुदा<sup>ﷺ</sup> के साथ जा मिले यानी ये इत्सानी दुनिया आपके वुजूद की बरकतों से मेहरूम हो गई। ●

مظلوم  
آه مظلوم تو را می خواند  
هدی جان







# माँ

## मेरे लिए खास क्यों है?

■ मोहम्मद नूरुलहुदा

मेरी माँ मेरे लिए खास क्यों है? जब मैं मूसलाधार बारिश में घर आया तो मेरे भाई ने पूछा, “तुम ने छतरी क्यों नहीं ली थी?” मेरी बहन ने कहा, “तुम ने बारिश रुकने का इंतज़ार क्यों नहीं किया था?” उधर पापा चीखे कि अगर तुम बीमार हुए तो तुम्हारी खैर नहीं।” मगर मम्मी, जो अब तक मेरे बाल खुशक कर रही थीं बोली, “ऐ बारिश! मेरे बच्चे के घर पहुँचने तक इंतज़ार तो कर लेती।” यह है माँ...।

रसूल इस्लाम<sup>१</sup> के पास एक शख्स आया और पूछा, “मैंने अपनी माँ पर बिठाकर हज करवाया है, क्या हक अदा हो गया?” रसूल<sup>२</sup> ने कहा, “अभी तो उस एक रात का भी हक अदा नहीं हुआ जिस रात तुम ने बिस्तर गीला कर दिया था और तुम्हारी माँ ने तुम्हें खुशक जगह पर सुलाया और खुद गीले में सोई थी।”

हज़रत मूसा<sup>३</sup> जब अपनी माँ की वफ़ात के बाद अल्लाह से मुलाक़ात के लिए कोहे तूर पर गए तो एक आवाज़ आई, “ऐ मूसा, अब ज़रा संभल के आना और सोच समझ कर बात करना।” हज़रत मूसा<sup>४</sup> बहुत हैरान हुए और पूछा, “ऐ खुदा! वह क्यों?” अल्लाह ने फ़रमाया, “अब तुम्हारे लिए मुझ से दुआ करने वाली तुम्हारी माँ इस दुनिया में नहीं रही।”

माँ... एहसानों, एहसासात, खूबियों और जज़्बात का वह पैकर है जो सारे ज़माने के बोझ और मौसम की सख़्तियाँ अपने जिस्म पर सहती है मगर उसका हर लम्हा रिश्तों को प्यार की डोरी में पिरोते और अपनी औलाद के लिए खुशियाँ खरीदते गुज़रता है।

पिछले दिनों एक दोस्त के पास उसकी माँ के इंतक़ाल का पुरसा देने गया तो उसने बताया कि उसकी माँ ने उसके आराम के लिए उस से आठ झूट बोले और वह चाहने के बावजूद उसके लिए कुछ न कर सका। उसने बताया कि उसकी माँ हमेशा सच नहीं बोलती थी। वह एक ग़रीब फैमिली का इकलौता बेटा था। अक्सर खाने को कुछ नहीं होता था। अगर कभी कुछ मिल जाता था तो माँ अपने हिस्से का खाना भी उसे दे देती थी और कहती थी, “तुम खा लो मुझे भूख नहीं है।” यह उसकी माँ का पहला झूट था...।

थोड़ा बड़ा हुआ तो माँ घर का काम ख़त्म करके पास की झील पर मछलियाँ पकड़ने चली जाती थी। आख़िर एक दिन उसने दो





मछलियाँ पकड़ लीं, उन्हें जल्दी-जल्दी पकाया और उसके सामने रख दिया। वह खाता जाता और जो कॉटे के साथ थोड़ा बहुत लगा रह जात उसे उसकी माँ खाती। उसने दूसरी मछली अपनी माँ के सामने रख दी मगर उसने वापस कर दी और कहा, “बेटा तुम खा लो क्योंकि मुझे मछली पसंद नहीं है।” यह उसकी माँ का दूसरा झूठ था...

जब वह स्कूल जाने की उम्र का हुआ तो उसकी माँ ने एक गार्मेंट्स फैक्ट्री में नौकरी कर ली। सर्दी की एक रात जब बारिश ज़ोरों पर थी, वह माँ का इंतज़ार करता रहा जो अभी तक नहीं आई थी। आखिर वह उसे ढूँढ़ने निकला। देखा तो वह लोगों के दरवाज़ों पर खड़ी सामान बेच रही थी। उसने कहा, “माँ अब बस भी करो, सर्दी बहुत है, रात भी हो गई है और तुम थक भी गई हो, बाकी कल कर लेना।” तो माँ बोली, “बेटा मैं बिल्कुल नहीं थकी।” यह उसकी माँ का तीसरा झूठ था...

एक रोज़ उसका फ़ाइनल पेपर था, उसकी माँ ने ज़िद की कि वह भी उसके साथ चलेगी। वह अंदर पेपर दे रहा था और वह बाहर धूप में खड़ी उसके लिए दुआ कर रही थी। वह बाहर आया तो उसकी माँ ने उसे अपनी गोद में ले लिया और टंडा जूस लेकर दिया। उसने एक घूँट लिया और माँ के पसीने से शराबोर चेहरे की तरफ़ देखकर जूस उसकी तरफ़ बढ़ाया तो बोली, “मुझे प्यास नहीं है।” यह उसकी माँ का चौथा झूठ था...

उसके बाप की मौत हुई तो ज़िंदगी और मुश्किल हो गई। अकेले घर का खर्च चलाना आसान नहीं था। अकसर नौबत फ़ाकों तक आ जाती। रिश्तेदारों ने उनकी हालत देखकर माँ को दूसरी शादी का मशवरा दिया मगर माँ ने कहा, “मुझे किसी सहारे की ज़रूरत नहीं है।” यह उसकी माँ का पाँचवाँ झूठ था...

ग्रेजुएशन करने पर अच्छी नौकरी मिल गई, सोचा अब माँ को आराम करना चाहिए क्योंकि वह बहुत बूढ़ी हो गई है। उसने माँ को काम से रोक दिया और अपनी आमदनी का कुछ हिस्सा उसे भी

देने लगा। माँ ने मना कर दिया और कहा कि उसे पैसे की ज़रूरत नहीं है। यह उसकी माँ का छठा झूठ था...

इसके बाद वह नौकरी करने मुल्क के बाहर चला गया। कुछ दिनों बाद माँ को अपने पास बुलाया तो उसने बेटे की तंगी के खयाल से मना कर दिया और कहा कि उसे घर से बाहर रहने की आदत नहीं है। यह उसकी माँ का सातवाँ झूठ था।

माँ को कैंसर हो गया और वह बहुत कमज़ोर हो गई। वह अपनी माँ के कदमों में बैठकर खून के आँसू रोने लगा, माँ उसे देखकर मुस्कुराई और बोली, “मत रो बेटा! मैं ठीक हूँ।” यह उसकी माँ का आठवाँ झूठ था और फिर उसकी माँ ने हमेशा के लिए आँखें बंद कर लीं।

अल्लाह ने जब माँ को बनाया तो उसे रहमत की चादर, चाहतों के फूल, पाकीज़ा शबनम, धनक के रंगों, दुआओं के खज़ानों, ज़मीन व आसमान की वुस्तों, जज़्बों, चाहतों, चाँद की टंडक, खुलूस, रहमत, राहत, बरकत, अज़मत, हौसले और हिम्मत के तमाम रंगों से सजा दिया। यहाँ तक कि उसके कदमों में जन्नत भी डाल दी। यूँ माँ कुदरत का बेहतरीन तोहफ़ा और नेमत है जिसकी कद्र हम पर फ़र्ज़ भी है और कर्ज़ भी। “माँ”... यह लफ़ज़ बहुत से मायने अपने अंदर छुपाए हुए है। ममता, प्यार, वफ़ा, कुरबानी, मोहब्बत, लगन, सच्चाई, खुलूस, पाकीज़गी, सुकून, ख़िदमत, मेहनत, अज़मत, दुआ, साया, दोस्त, हमदर्द, राहनुमा, उस्ताद, बेग़रज़ी, मासूमियत, इबादत, ईमान, दयानत, जज़्बा, जन्नत, यह सब माँ की खूबियाँ और अच्छाईयाँ की सिर्फ़ एक झलक है, वरना उसकी खूबियाँ तो इतनी ज़्यादा हैं कि लफ़ज़ ख़त्म हो जाएं मगर माँ की तारीफ़ ख़त्म नहीं होगी। “माँ”... एक ऐसा सब्जेक्ट है कि कलम भी जिसका हक़ अदा नहीं कर पाता। इस सब्जेक्ट पर बहुत सी किताबें लिखी जा सकती हैं मगर माँ के एहसानात, एहसासात और चाहतों का बदला तब भी नहीं चुकता। माँ-बाप के एहसानों के बारे में सोचने बैठें भी तो सोच उनके एहसानों के मुकाबले

मैं बहुत पीछे दिखाई देती हूँ। माएँ, हिम्मत, हौसले और ईसा व कुरबानी का पैकर होती हैं। हम तो माओं की एक रात का कर्ज़ भी नहीं चुका सकते।

मिर्ज़ा अदीब अपनी किताब “मिट्टी का दिया” में लिखते हैं, “अब्बा जी मुझे मारते थे तो अम्मी बचा लेती थीं। एक दिन मैंने सोचा कि अगर अम्मी पिटाई करेंगी तो अब्बा जी क्या करेंगे? यह देखने के लिए मैंने अम्मी का कहना नहीं माना। उन्होंने बाज़ार से दही लाने को कहा लेकिन मैंने बात न मानी। उन्होंने सालन कम दिया मैंने ज़्यादा माँगा, उन्होंने कहा पीढ़ी के ऊपर बैठकर रोटी खाओ, मैं ज़मीन पर दरी बिछाकर बैठ गया, लहजा भी सख़्त बना रखा था। मुझे पूरी उम्मीद थी कि अम्मी ज़रूर मारेंगी मगर उन्होंने मुझे सीने से लगाकर कहा, “क्यों बेटा! माँ सदके जाए! तुम बीमार तो नहीं?” उस वक़्त मेरे आँसू थे कि शर्मिंदगी के मारे रुकने में नहीं आ रहे थे।”

जब भी मेरे दिल की मस्जिद में तेरी यादों की अज़ान होती है ऐ माँ तो मैं अपने ही आँसुओं से वुजू करके तेरे जीने की दुआ करता हूँ। बेशक माँ का वुजूद एक नेमत और अल्लाह का इनाम है। दुनिया में कहीं भी कोई इन्सान कामयाब है तो उसके पीछे उसकी माँ ही का हाथ है जिसका आज वह फल पा रहा है। उनकी माओं ने पाल-पोस कर इन पौधों को मज़बूत पेड़ बनाया और अपनी माओं ही के तुफ़ैल आज यह पेड़ मीठे और रसीले फल दे रहे हैं। उनकी परवरिश में जो खूबियाँ हैं वह उनकी माओं ही का एहसान है। माँ का वुजूद सिर्फ़ घर के लिए ही नहीं बल्कि हमारी ज़िंदगियों के लिए भी एक मुक़द्दस किताब की तरह है। माँ तो तपते सहारा में बूंद बरसने का नाम है। यह कड़ी और चिलचिलाती धूप में बादल की तरह है।

ऐ खुदा! जिनके मां-बाप जिंदा हैं उनका साया हमेशा सलामत रहे और जो इस नेमत से महरूम हैं वह इस दुआ को पढ़ते रहा करें: ...“रबिब रहम्हुमा कमा रब्बयानी सग़ीरा।” ●





### इमाम राजी (मुफ़्तिरे कुरआन)

जिसने अली<sup>अ०</sup> को दीनी उमूर में अपना रहनुमा मान लिया है, उसने यकीनन हिदायत की रस्सी को मज़बूती से थाम लिया है अब उसका दीन भी महफूज़ है और नफ़्स भी।

जो दीनी मामलात में अली<sup>अ०</sup> की पैरवी कर लेता है वह हिदायत के रास्ते पर आ जाता है क्योंकि हुजुरे अकरम<sup>अ०</sup> ने फ़रमाया है कि ऐ खुदा! हक़ को वहाँ वहाँ रख जहाँ जहाँ अली<sup>अ०</sup> है।

### शहीद मुतहहरी (ईरानी स्कॉलर)

हज़रत अली<sup>अ०</sup> में एक फ़लास्फ़र, एक इन्क़िलाबी रहनुमा, एक रूहानी पेशवा और दूसरे सारे नबियों की क्वालिटीज़ पाई जाती हैं। आप का स्कूल ऑफ़ थॉट जहाँ एक तरफ़ इन्क़िलाबी है वहीं दूसरी तरफ़ खुदा की बारगाह में सर झुका देने वाला भी है। साथ साथ इस स्कूल ऑफ़ थॉट में सारी अच्छाईयाँ, नेकियाँ, जोश और वलवला, खूबसूरती और हुस्न के साथ-साथ दूसरों को अपनी तरफ़ खींचने की सारी क्वालिटीज़ भी पाई

जाती हैं। आप का वुजूद, आप का सब्र, आप का कैरक्टर, अख़लाक़, आप की ज़ाहिरी और रूहानी खूबियाँ, ये सब के सब हम सब के लिए बेहतरीन और खूबसूरत मिसालें हैं।

### महमूद अक्काद (मिश्री स्कॉलर)

हज़रत अली<sup>अ०</sup> खुदा के घर, काबे में पैदा हुए थे। आपने अपनी पूरी ज़िन्दगी में कभी भी बुत परस्ती नहीं की। हकीक़त यह है कि काबे में आप की विलादत ने तारीख़ में एक नया दरवाज़ा खोल दिया है क्योंकि ये बात साबित हो चुकी है कि आप दीने इस्लाम पर पैदा हुए थे। आपकी आँख ही इस दुनिया में इस्लाम के उजालों में खुली थी और आप ने अपनी पहली नमाज़ रसूले खुदा<sup>अ०</sup> के पीछे पढ़ी थी। मैं हमेशा हज़रत अली<sup>अ०</sup> की रूहानी खुसूसियतों, उन के ईमान, खुलूस और उन की बेदाग़ शख़्सियत का मतवाला रहा हूँ।

### थॉमस कारलाएल (ब्रिटिश स्कॉलर)

मैं अली<sup>अ०</sup> की तारीफ़ करते नहीं थक सकता

क्योंकि वह फज़ल और करम का एक समुन्दर और अज़मतों और शराफ़तों की मेराज हैं। आप की बेमिसाल बहादुरी और शुजाअत, नर्म दिली और रहमदिली में बड़े प्यारे अन्दाज़ में घुल मिल गई थी। ईमानदारी और इन्साफ़ पसन्दी इस दीनी रहनुमा की ज़िन्दगी के दो सब से बड़े उसूल हैं।

### ताहा हुसैन (मिश्री स्कॉलर)

आपकी ज़िन्दगी में एक सेकेंड के लिए भी कभी ऐसा नहीं हुआ कि अली<sup>अ०</sup> ने खुदा के बारे में कोई शक़ किया हो। अली<sup>अ०</sup> हमेशा खुदा के रास्ते पर चले और हमेशा इन्साफ़ को अपनी पहचान बनाया। अपनी ज़िन्दगी की आख़री साँस तक आप उसी रास्ते पर चले और कभी भी उस सच्चे रास्ते से किसी और रास्ते पर नहीं गये। खुदा का सच्चा बन्दा और एक हक़ पसन्द होने के नाते कभी भी दुनियादारी और जंगों में हार या जीत का आप के ऊपर ज़रा सा भी असर नहीं पड़ा।

### जार्ज जुरडैक (लेबनानी स्कॉलर)

“काबे के रब की क़सम! मैं कामयाब हो गया” ये वह आख़िरी जुमला है जो अली<sup>अ०</sup> ने उस वक़्त कहा था जब इब्ने मुल्जिम ने आप के सर पर ज़हर में बुझी हुई तलवार से वार किया था। इब्ने मुल्जिम दूसरे मुनाफ़िकों की तरह खुद भी एक मुनाफ़िक़ था और उसको हज़रत अली<sup>अ०</sup> की इन्साफ़ पसन्दाना ज़िन्दगी की वजह से हज़रत अली<sup>अ०</sup> से नफ़रत थी और खुद हज़रत अली<sup>अ०</sup> को भी इस बात का एहसास था कि उनको ज़िन्दा नहीं रहने दिया जाएगा क्योंकि जिस समाज में अली<sup>अ०</sup> ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे उस में अकसर लोग अली<sup>अ०</sup> की इन्साफ़ पसन्दी को बंदाशत नहीं कर सकते थे क्योंकि वह सब के सब खुद अपनी ख़्वाहिशों और नफ़्स के गुलाम थे, न कि खुदा के सच्चे बन्दे। हकीक़त ये है कि हज़रत अली<sup>अ०</sup> को अपनी शहादत से बहुत पहले से ही अपनी शहादत के बारे में मालूम था। ●

सब  
अली<sup>अ०</sup> को अली  
कहते हैं।





# आह!

अल्लामा मोहम्मद

शाकिर  
नक़वी

जो भी इस दुनिया से जाता है वह अपने साथ अपनी यादों के काफ़िले को भी ले जाता है मगर कुछ जाने वाले ऐसे होते हैं जो खुद तो चले जाते हैं मगर उनकी यादें, उनके कारनामों और ख़िदमतों की वजह से बाकी रहती हैं। उन्हीं जाने वालों में से अल्लामा सैय्यद मोहम्मद शाकिर नक़वी रहमतुल्लाह अलैह की बुजुर्ग हस्ती भी है जिनकी इल्मी व तहकीकी ख़िदमतों को हमेशा याद रखा जाएगा। इस दौर में जब उलमा की कमी है और बुजुर्ग हस्तियाँ न के बराबर रह गई हैं, आपकी ज़ात खुदा की एक नेमत की तरह थी मगर अफ़सोस आज मुस्लिम उम्मत इस नेमत से महरूम हो गई।

अल्लामा इल्मी अदब की ज़मीन अमरोहा से ताल्लुक रखते थे। आप 2 ज़िलहिज्जह 1347हि., 12 मई 1929 को पैदा हुए। आपके वालिद सैय्यद अहमद मरहूम दीनदार, बुजुर्ग और रियासत अकबरपूर, सीतापूर में कोर्ट ऑफ़ आर्ट में ज़िलादार थे।

1934 में मौलाना की रस्मे बिस्मिल्लाह मौलाना मोहम्मद साहब किब्ला मुजतहिद ने अदा कराई। आपने शुरुआती तालीम महल्ला हक्कानी के प्राइमरी स्कूल में हासिल की। इसके बाद सैय्यदुल मदारिस, अमरोहा में





अपनी तालीम जारी रखते हुए मौलाना सैय्यद मोहम्मद मुजतहिद, मौलाना सैय्यद हबीबुस्सकलैन, मौलाना साबिर हुसैन, मौलाना फ़ख़रुल हसन और मुंशी मुश्ताक हुसैन जैसे बुजुर्ग उस्तादों से इल्म की प्यास बुझाते रहे।

सैय्यदुल मदारिस में दर्जा मोलवी तक तालीम हासिल करने के बाद आप 1945 में लखनऊ गए और जामेआ नाज़मिया में एडमिशन लिया। नाज़मिया में मौलाना मोहम्मद मेहदी ज़गीपुरी से 'क़वानीनुल उसूल', मौलाना काज़िम हुसैन से 'माकूलात', मुफ़्ती आज़म अहमद अली से फ़िक्का (Islamic Jurisprudence) व उसूल, मौलाना रसूल अहमद गोपालपुरी और मौलाना अय्यूब हुसैन सिरसवी से अरबिक लिटरेचर का दर्स लिया। इन सब के अलावा सैय्यदुल उलमा मौलाना अली नकी नक़वी से घर पर 'रसाएल' का खुसूसी दर्स लेकर माकूलात (Contemplative Sciences) व मंकूलात (कुरआन, हदीस और रिवायत) में आला महारत हासिल की।

अल्लामा की क़ाबलियत और आला इल्मी सलाहियत को देखकर आपको तालीम के दौरान ही 1951 में जामेआ नाज़मिया लखनऊ में टीचर रख लिया गया। आप पढ़ाने के साथ-साथ पढ़ते भी रहे। इस तरह 1953 में अपनी तालीम को पूरा करके जामेआ नाज़मिया की आख़िरी डिग्री

'मुस्ताज़ुल अफ़ज़िल' डिस्टिक्टव मार्क्स में हासिल की। मुफ़्ती-ए-आज़म जो उस वक़्त जामेआ के प्रिंसपल थे, वह आप से इन्तेहाई मोहब्बत और शफ़क़त करते थे और मदरसे के एडमिनिस्ट्रेशन के सिलसिले में आपकी राय को अहमियत देते थे। अल्लामा के लेक्चर्स का अंदाज़ निराला था। आप सख़्त से सख़्त बात को मिसालों से बहुत आसान बना देते थे। ज़बान में चाशनी और अंदाज़ में कशिश इस क़दर पाई जाती थी कि स्टूडेंट्स दूसरे टीचर्स के क्लास से एबसेंट हो जाते थे मगर आपके क्लास को छोड़ना ग़वारा नहीं करते थे। आपके लेक्चर्स का अंदाज़ इतना मशहूर था कि दूसरे मदरसों के स्टूडेंट भी आपके लेक्चर्स अटेंड किया करते थे। मैंने अक्सर देखा है कि मदरसतुल वाएज़ीन और सुल्तानुल मदारिस के स्टूडेंट्स भी आप के पास आकर पढ़ा करते थे और आप उन स्टूडेंट्स को उतनी ही मेहनत और लगन से पढ़ाते थे जितनी मेहनत से अपने मदरसे के स्टूडेंट्स को पढ़ाते थे। आपने कभी किसी स्टूडेंट की दिल शिकनी नहीं की। जिस स्टूडेंट ने जिस वक़्त जो भी किताब पढ़ने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की फ़ौरन उसकी ख़्वाहिश को पूरा करते थे। मैंने खुद देखा है कि आप नमाज़ सुबह से फ़ारिग़ भी नहीं होने पाते थे कि स्टूडेंट्स आपके घर

पर आ जाते थे। नमाज़ सुबह के बाद से मदरसे के वक़्त तक स्टूडेंट्स के तीन चार ग्रुप को पढ़ा देते थे। लेकिन कमाल यह होता था कि जब आप मदरसे पहुँचते थे तो उसी जोशो ख़रोश के साथ लेक्चर्स का सिलसिला जारी रखते थे। आप मदरसे में माकूलात (Contemplative Sciences) और Astronomy के लेक्चर्स देते थे। Contemplative Science की बड़ी-बड़ी किताबें सदरा, शरहे हिदायतुल हिकमत और Logic में हम्दुल्लाह, शरहे तहज़ीब, Astronomy में 'तसरीह' जैसी किताबें इस रवानी से पढ़ाते थे जिसे देखकर हैरानी होती थी और आपकी आला क़ाबलियत और उन इल्मों पर आपकी महारत को मानना पड़ता था।

आपके स्टूडेंट्स की तादाद हज़ारों में है जो यूरोप, अफ़्रीका, ऐशिया के बहुत से मुल्कों में बड़े पैमाने पर इल्मी और दीनी ख़िदमतें अंजाम दे रहे हैं। आपकी ख़ासियत यह थी कि हिन्दुस्तान के 80% मदरसों के प्रिंसपल आपके स्टूडेंट हैं जिनकी सरपरस्ती में सैकड़ों स्टूडेंट्स तालीम व तरबियत हासिल कर रहे हैं। जहाँ तक लिखने-लिखाने का मसला है आप ने अपनी एजुकेशन के दौर से ही लिखना शुरू कर दिया था। आप ने सब से पहला आर्टिकल 19 जुलाई 1955 में 'पर्दा' लिखा जो "पयामे इस्लाम"





लखनऊ से पब्लिश हुआ जो इल्मी दुनिया में बहुत ज्यादा पसंद किया गया, खास कर सैय्यदुल उलमा मौलाना सै. अली नकी नकवी ने बहुत ज्यादा तारीफ की। इस तरह आपके रिसर्च-वर्क की शुरुआत हुई। फिर क्या था बहुत लिखा और खूब लिखा। हिन्दुस्तान के उस वक़्त की इस्लामी मैगज़ीन 'अल-वाएज़', 'इस्लाह', 'सरफ़राज़' वगैरा में अक्सर आपके आर्टिकल्स पब्लिश होते रहे।

इल्मी मैदान में आपका अहम कारनामा आपकी किताब "अज़्ज़फ़रा अलतफ़रा" है जिसमें मुल्ला सदरुद्दीन शीराज़ी की बहस तुफ़रए जाविया के सिलसिले में एक लम्बी बहस की है और उनके नज़रियों से इख़्तेलाफ़ करके अपनी दलीलों से असल मसले को क्लियर किया है। इसके अलावा मशहूर फ़्लॉस्फ़र मीर बाकिर दामाद के अंदाज़ से हटकर इस्तेदलाल पेश किया है।

में बहस की गई है। इसके अलावा चाँद के बारे में ज़रूरी जानकारी दी गई है। और "अल-हाशियह अलल वजीज़तु लिशशैख़ बहाउद्दीन आमुली, इल्मे उसूल की मशहूर किताब "रसाएल" की शरह "शरहे रसाएल", Theology की किताब शरहे तजरीद की शरह "कवानीनुल उसूल" की शरह, Astronomy की मशहूर किताब तसरीह की शरह, Logic की किताब "हम्दुल्लाह" का ट्रांसलेशन, महमूद जौनपुरी की तालीफ़ "अशशम्सुल बाज़िग़ह" की शरह, "अल-हिक्मतुल बाज़ेगा फ़ी शरहिशशम्सिल बाज़िगा" लिखकर इल्मी दुनिया में कीमती सरमाए का इज़ाफ़ा किया।

इन तमाम इल्मी अज़मतों के बावजूद आपके मिज़ाज में बला की सादगी और लंबे लहजे में इन्केसारी नज़र आती थी। साथ ही अंदाज़ में शीरीनी, अलफ़ाज़ में मिठास, आदत में

इन तमाम इल्मी अज़मतों के अलावा शेरों शायरी में भी अल्लामा शाकिर मरहूम उस्ताद थे। बहुत कलाम कहा मगर रुहानी अज़मतों के पेशे नज़र कभी पब्लिक में नहीं पड़ा। आप ने न सिर्फ़ उर्दू बल्कि अरबी व फ़ारसी में भी कीमती अशआर कहे जिन्हें अदबी दुनिया में बहुत पसंद किया गया। आपके उर्दू कलाम में भी निराला अंदाज़े बयान, पुर-शौकत अलफ़ाज़, जज़्बात की गर्मी और लहजा व आहंग की गर्मी पाई जाती है। आपका एक शेर जो बहुत ज्यादा पसंद किया गया:-

जिंदगी क्या है ज़बानों पे अमल के चर्चे।  
मौत क्या है इन्हीं चर्चों पे पशेमाँ होना॥

कुछ दूसरे अशआर:-

सारा मैख़ाना समझ बैठा था बेग़ाना मुझे।  
बस भरी महफ़िल में पैमाने ने पहचाना मुझे॥

एक ख़श्ते राह यानी बे-हकीक़त हूँ मगर।  
कुछ न होने पर भी नामुमकिन है ठुकराना मुझे॥

मेरे ऐसे और भी लाखों थे 'शाकिर' बद-नसीब  
ऐ मेरी तक़दीर तुने कैसे पहचाना मुझे

मक़सदे हयात के सिलसिले में फ़रमाते हैं:-

हयात व मौत से बस इतना समझा।  
मगन रहना मआले जिंदगी है॥

दामन बचा-बचा के गुज़ारी है जिंदगी।  
काँटों को मेरी बात यही नागवार है॥

ज़माने के लिए कुछ ऐसी भी राहें छोड़ आया हूँ।  
कि इन राहों पे अब चलते रहेंगे कारवाँ बरसों॥

उफ़ मेरा जोशे जुनूँ खुद मेरी वहशत देखकर।  
गुल तो गुल काँटे भी मुझको रास्ता देने लगे॥

## मजलिसे चेहलुम

18th Aug 2012, 10:30 AM

हुसैनिया शफ़ाअत पोता, अमरोहा

आपकी इस किताब को उलमा ने इन्तेहाई एहतेराम की निगाह से देखा और अपने बेहतरीन नज़रियों से नवाज़ा है। इस किताब को जब ईरानी उलमा ने देखा तो वह भी तारीफ़ किए बिना न रह सके और आपकी फ़लसफ़ी सलाहियों को मानने पर मजबूर हो गए।

अपकी दूसरी इल्मी व तहकीकी किताब "तफ़सीरे कुलैनी" है जो अरबी ज़बान में है। इस तफ़सीर में उन आयतों की तफ़सीर बयान की गई है जिन्हें शेख़ कुलैनी ने अपनी किताब "अल-काफी" में नक़ल किया है, जो ईरान से बहुत जल्द पब्लिश होने वाली है।

आपकी तीसरी रिसर्च 'रूयतुल हिलाल' है जिसमें मुख़्तलिफ़ शहरों के Latitude और Longitude और वहाँ के उफ़क़ (Horizon) के सिलसिले

नफ़ासत और तबीयत में लोच भी पाया जाता था। न नामवरी की तमन्ना, न शोहरत की फ़िक्र, न आला मुक़ाम की जुस्तुजू न बुलंद ओहदे की आरजू। इन्केसारी का यह आलम कि बज़्म में जहाँ जगह मिल गई वहीं बैठ गए। यह थी आपकी सादगी और खुलूस।

अफ़सोस! इल्मी अदब का यह आफ़ताब 13 शाबान 1433हि., 4 जुलाई 2012 बुध के दिन, 11:15 बजे दिन लखनऊ में ग़रुब हो गया। आपके जनाज़े को लखनऊ से अमरोहा लाया गया जहाँ 14 शाबान 1433, जुमेरात 9:00 बजे सुबह इमाम बारगाह, महल्ला शफ़ाअत पोता में हज़ारों सोगवारों की मौजूदगी में दफ़न किया गया। जनाज़े में बड़ी तादाद में उलमा, स्कालर्स और दानिशवरों ने शिरकत की।



# सबसे अच्छी हुकूमत

मुसलमानों के तीसरे खलीफ़ा के इत्तेकाल के बाद उनका अपना कोई हाकिम नहीं था जिसकी वजह से उन्होंने हज़रत अली<sup>रि</sup> पर सख्त दबाव डाला कि अब आप हमारे हाकिम बन जाइए। इसमें मिन्न और कूफ़े से आए हुए लोग भी शामिल थे। दो दिन तक हज़रत अली<sup>रि</sup> ने इन्कार किया। आखिर तीसरे दिन इस शर्त पर कुबूल किया कि मैं सिर्फ़ कुरआन और रसूल<sup>रि</sup> की सुन्नत के मुताबिक़ हुकूमत करूँगा। मामला खत्म हो जाना चाहिए था लेकिन कुछ लोगों ने फिर साज़िश की और हज़रत अली<sup>रि</sup> को जंगों में उलझा दिया जो उनकी शहादत तक चलती रहीं। मगर इसके बावजूद हज़रत अली<sup>रि</sup> ने अपने दौर में इस्लाम को ज़िंदा रखने के लिए अपनी भरपूर कोशिशें कीं।

सबसे पहला काम जो हज़रत अली<sup>रि</sup> ने किया, वह अपनी हुकूमत को सिस्टमेटिक करना था। लोगों की जिहालत को ख़त्म करने के लिए उन्होंने एक सेंट्रल मोहकमा बनाया जिसमें लोगों को कुरआन की सही क़राअत, हिसाब-किताब, इंजीनियरिंग, कॉसमोलोजी, लिट्रेचर, लॉजिक और एडमिनिस्ट्रेशन की ट्रेनिंग दी जाती थी।

ऊपर लिखी तमाम बातों में उन्होंने एडमिनिस्ट्रेशन पर भरपूर फ़ोकस किया। उन्होंने

सरकार चलाने के लिए नौकरियों को पाँच विभागों में बाँटा था।

- 1- फ़ाइनेंस
- 2- फ़ौज
- 3- सेक्रेटरियट
- 4- अदालत
- 5- स्टेट्स के दफ़्तर

फ़ाइनेंस

यह मोहकमा दो विभागों में बंटा था। वसूली विभाग और डिस्ट्रिब्यूशन विभाग

वसूली विभाग

यह विभाग टैक्सों की वसूली के लिए था। हज़रत अली<sup>रि</sup> ने सिर्फ़ तीन टैक्सों की वसूली का हुक्म जारी किया था जो यह थे:-

(1) ज़मीन की मालगुज़ारी: यह टैक्स आमतौर पर चाँदी और सोने के सिक्कों या सोने-चाँदी के डलों या ईंटों की शकल में लिया जाता था। मालगुज़ारी की वसूली सेंट्रल गवर्नमेंट के अफसर करते थे लेकिन स्टेट्स के गवर्नरों को भी यह हक़ दिया गया था कि ख़ास हालात में अपने यहाँ से इस काम के लिए अफसर तैनात करें।

(2) ज़कात और सदका: यह टैक्स आमतौर पर चीज़ों में या जानवरों की शकल में वसूल किया



सै. आलिम हुसैन रिज़वी  
रिटायर्ड असिस्टेंट मैनेजर  
यूनियन बैंक, वाराणसी

जाता था लेकिन यह काम सीधे हज़रत अली<sup>रि</sup> के ज़रिए तैनात किए गए ईमानदार और दीनदार अफसरों के ज़रिए किया जाता था जिनके तौर तरीकों और हरकतों पर वह खुद नज़र रखते थे।

(3) जिज़्या: यह टैक्स ग़ैर-मुस्लिमों से ज़कात वगैरा के बदले में लिया जाता था और इसकी अदाएगी के बाद उनकी जान-माल की हिफाज़त की गारंटी देना हुकूमत का काम होता था और उन्हें तमाम सहुलतें दी जाती थीं। कोई भी इस्लामी टैक्स उन से नहीं लिया जाता था। इसमें भी एक छूट थी। वह यह कि जिज़्या 50 साल से ऊपर या बीस साल से नीचे की उम्र वालों, औरतों, अपाहिजों, अंधों और पागलों से नहीं लिया जाता था।

डिस्ट्रिब्यूशन विभाग: पब्लिक के माल का डिस्ट्रिब्यूशन हज़रत अली के लिए एक बहुत ख़ास मसला था। वह चाहते थे कि इस्लामी शरीअत के मुताबिक़ इस माल की इंसाफ़ के साथ तक्सीम हो। इसके लिए उन्होंने मोहकम-ए-ख़ज़ाना और हिसाब की नए सिरे से हदबंदी की थी और बेईमान अफसरों को हटा दिया था। वह इस काम के लिए इतने मुख़लिस थे कि राजधानी कूफ़ा में वह खुद अवामी माल की तक्सीम की निगरानी करते थे। जब बैतुलमाल ख़ाली हो जाता था तो वह वहाँ शुक्राने की नमाज़ पढ़ते थे। वह पहले हाकिम थे जिन्होंने माल की वसूली और तक्सीम के लिए बजट सिस्टम बनाया था। हर एक स्टेट को अपना सालाना बजट मंजूरी के लिए पेश करना पड़ता था। ज़कात व सदके से होने वाली आमदनी सेंट्रल गवर्नमेंट के लिए थी और मालगुज़ारी और जिज़्ये की आमदनी की तक्सीम स्टेट के ज़िम्मे थी।

ज़कात और सदके से होने वाली आमदनी मोहकम-ए-वसूली और तक्सीम को चलाने, दान, ग़रीबों, कंगालों, यतीमों, बूढ़े लोगों और अपाहिज लोगों की मदद, अपनी मज़ी से जंग में शामिल होने वालों को Honorarium, फ़ौज के अफसरों और सिपाहियों की बेवा औरतों और उनके यतीमों को पेंशन देने, गुलामों को ख़रीदकर उन्हें आज़ाद करने, सरकारी कर्ज़ों की भरपाई और भटकने





वाले हाजियों की मदद करने के काम आती थी। जिज़ये की आमदनी फौज रखने, किले, सड़कें और पुल बनाने, कुएं खोदने और सराय बनाने और उन्हें बाँकी रखने के काम आती थी।

मालगुजारी की आमदनी बाँकी दूसरे कामों में इस्तेमाल होती थी लेकिन मालगुजारी के मामले में हज़रत अली<sup>३०</sup> ने मालगुजारी से ज्यादा टैक्स देने वालों को अहमियत दी थी। उन्होंने अपने एक गवर्नर को हुक्म दिया था कि मालगुजारी वसूलते वक़्त टैक्स देने वालों की फ़लाह को ध्यान में रखना चाहिए क्योंकि वह टैक्स से ज्यादा अहम है। टैक्स देने की लोगों की हैसियत ज़मीन के उपजाऊपन पर टिकी हुई है। इसलिए ज़मीन को उपजाऊ बनाने पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए ताकि लोग खुशहाल हों और वह टैक्स दे सकें।

**फौज:** हज़रत अली<sup>३०</sup> एक पैदाईशी मुजाहिद थे जिन्होंने अपने बचपन में भी रसूल इस्लाम<sup>३०</sup> की हिफ़ाज़त की थी। यह उनकी बहादुरी और जांबाज़ी ही थी जिसकी वजह से मुसलमानों को इस्लाम के शुरुआती दौर में कामयाबी मिली थी।

उन्होंने इसी जांबाज़ी की उम्मीद हर मुसलमान से रखी और इसीलिए हुक्मत के ख़ज़ाने की सबसे पहली ज़िम्मेदारी फौज पर ध्यान देना थी। हर सिपाही अल्लाह और दीन की ख़िदमत के लिए था। फौज के लिए उनका सख़्त फ़रमान था कि हमेशा खुदा से डरो, सेल्फ़ डिफेंस के अलावा कभी भी किसी भी आदमी को मत मारो, हमले के दौरान जो भाग जाते हैं उन दुश्मनों का पीछा न करो और भागने वालों को क़त्ल न करो। जो लोग तुम से रहम (Sympathy) और ज़िदंगी की भीख माँग रहे हो उन्हें मत मारो, औरतों को बेइज़्ज़त न करो और बूढ़ों और बच्चों को कोई नुक़सान न पहुँचाओ। उन्होंने एक मुस्तेद और चाक-चौबंद फौज रखने पर ज़ोर दिया था।

**सेक्रेटरिएट:** खुद हज़रत अली<sup>३०</sup> ने सेंटर में सारे मोहकमे बनाए थे जो सेंटर के अलावा स्टेट्स

के मोहकमों की निगरानी भी करते थे और यह सेंटर खुद हज़रत अली के ज़रिए कंट्रोल किया जाता था।

**अदालत:** हज़रत अली<sup>३०</sup> का नज़रिया इस मामले में बिल्कुल साफ़ था कि अच्छे फैसले के लिए जज को ग़ैर जानिबदार और आज़ाद होना चाहिए। उस पर

किसी का दबाव नहीं होना चाहिए। अदालत में खुद ख़लीफ़ा को भी बरतरी हासिल नहीं थी। हज़रत अली<sup>३०</sup> ने जजों के सिलसिले में कुछ आइडियल उसूल बनाए थे जो यह हैं:-

(1) इस्लामी शरीअत में माहिर लोगों को ही जज बनाना चाहिए। उन्हें कुरआन और हदीस का काफ़ी इल्म होना चाहिए। इसके अलावा जज को दूसरे मज़हबों के क़ानून भी मालूम होने चाहिए ताकि ग़ैर मुस्लिमों के मामले में फैसला उनकी शरीअत के मुताबिक़ किया जाए।

(2) जज की एक हैसियत और रुतबा हो।

(3) उसे जल्दी गुस्से में आने वाला या बेसब्रा नहीं होना चाहिए।

(4) अगर कभी जज को लगता है कि उसने ग़लत फैसला दिया है तो उस पर अड़ना नहीं चाहिए बल्कि उस से हुई बेइंसाफी को फ़ौरन ख़त्म करना चाहिए।

(5) जज को मुक़द्दमे की गहराई में जाना चाहिए और जल्दी फैसला देना चाहिए। मुक़द्दमे को बेवजह लम्बा नहीं करना चाहिए।

(6) जज को किसी की भी तरफ़दारी नहीं करना चाहिए और किसी की भी किसी सिफ़ारिश को अहमियत नहीं देनी चाहिए।

(7) जज की तन्ज़ाह इतनी होनी चाहिए जिससे वह रिश्वत या गिफ़्ट की लालच में न आए।

(8) ख़लीफ़ा की हैसियत सुप्रीम कोर्ट की होगी जिसका फैसला आख़िरी होगा।

**स्टेट्स के दफ़्तर:** स्टेट्स के दफ़्तरों का हाकिम गवर्नर होता था जो डायरेक्ट ख़लीफ़ा को रिपोर्ट करता था। हज़रत अली<sup>३०</sup> ने अच्छी हुक्मरानी के लिए अपने गवर्नरों को भी कुछ उसूल

बताए थे। यूँ तो यह उसूल बहुत हैं लेकिन हम यहाँ उनमें कुछ को पेश कर रहे हैं जिस से हज़रत अली<sup>३०</sup> के हुक्मत के तरीक़े का हल्का सा अंदाज़ा हो सकेगा।

(1) तुम अपनी रिआया के लिए सख़्त मगर मेहरबान रहो।

(2) मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम के साथ एक जैसा बर्ताव करो क्योंकि जहाँ मुस्लिम तुम्हारे भाई हैं वहीं इन्सान होने के नाते ग़ैर मुस्लिम भी तुम्हारे ही जैसे हैं।

(3) हुक्मत करने में गुस्सा और बदला देने की ख़्वाहिश से कोई फ़ाएदा नहीं पहुँचने वाला है।

(4) तरफ़दारी और भाई-भतीजावाद को अपनी हुक्मत में कोई जगह न दो। इससे अल्लाह के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी होगी और मुस्तहक़ को उसका हक़ नहीं मिलेगा। इससे जुल्म भी बढ़ेगा।

(5) अपने इलाक़े के रईसों की दावतों में शरीक न होना क्योंकि इससे ग़रीबों में ग़लत मैसेज जाएगा। तुम्हारी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी ग़रीबों, अपाहिजों और यतीमों का हर तरह से ध्यान रखना है। उनकी मदद करो, उनकी हिफ़ाज़त करो और ऐसा माहोल बनाओ कि जब भी उन्हें मदद की ज़रूरत हो वह बेझिझक तुम से राबता कायम कर सकें।

(6) ईमानदार और मेहरबान अफ़सरों को तैनात करो, न कि ज़ालिम और जाबिर अफ़सरों को।

(7) अपने अफ़सरों को इतनी तन्ज़ाह दो कि वह रिश्वतखोरी और ग़बन की तरफ़ आँख उठाकर भी न देखें।

(8) किसान मुल्क की सबसे बड़ी दौलत होते हैं इसलिए उनकी एक सरमाए की तरह हिफ़ाज़त करो।

यह भी हिस्ट्री

की एक ट्रेजरी

है कि

हज़रत



अली<sup>र</sup> की शहादत के बाद किसी भी हाकिम ने इन उसूलों पर अमल नहीं किया, जिससे गरीब और अमीर के बीच की दूरी बढ़ती गई।

हज़रत अली<sup>र</sup> के चाहने वालों के लिए एक खुशख़बरी यह है कि जिस अली<sup>र</sup> को दूसरे एक नाकाम हाकिम साबित करने पर तुले हैं, उसी अली<sup>र</sup> को U.N.O. ने एक मिसाली हाकिम माना है। कराची के अख़बार जंग के 31-10-2002 के इशू में U.N.O. ने हज़रत अली की खिलाफ़त को मिसाली नमूना करार दे दिया के नाम से टाइटिल लगाया है। U.N.O. के एक शोबे U.N.D.P. ने 2002 में अरबों पर एक रिसर्च की थी उसी के तहत अपनी Arab Human Resource Development Report में हज़रत अली<sup>र</sup> के 6 उसूल जो एक आइडियल हुकूमत के लिए ज़रूरी हैं, उन्हें शामिल किया है और दुनिया की तमाम हुकूमतों को यह रिपोर्ट भेजी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि अरब के तमाम मुल्क डेमोक्रेसी, खुले ज़ेहन, डिप्लोमेटिक रिलेशन, औरतों के हक़, तरक्की और इल्म के मामले में दूसरे मुल्कों से बहुत पीछे हैं। U.N.O. ने अरब मुल्कों में मश्वरा दिया है कि वह अदालत और इंसाफ़, इल्म और साइंस पर बेस्ड हुकूमत बनाने में इमाम अली<sup>र</sup> की मिसाल को अपने सामने रखें।

हज़रत अली<sup>र</sup> के जो 6 उसूल इस रिपोर्ट में शामिल किए गए हैं, वह यह हैं:

(1) जिसने खुद को लोगों का इमाम बनाया है उसे दूसरों को सबक़ देने से पहले खुद अमल करना चाहिए। ख़ाली

बातों से काम नहीं चलेगा बल्कि उसे खुद को एक नमूने के तौर पर पेश करने के बाद दूसरों की हिदायत करनी चाहिए क्योंकि जो पहले खुद नसीहत पर चलता है वह ज़्यादा इज़्ज़त का हक़दार है, उसके मुकाबले में जो सिर्फ़ दूसरों को तालीम व तरबियत देता है।

(2) तुम्हें टैक्स वसूलने की ज़्यादा फ़िक्र करने के बजाए खेती वाली ज़मीन को ज़्यादा से ज़्यादा ज़रखेज़ बनाने पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि टैक्स की वसूली ज़्यादा पैदावार पर टिकी हुई है। इसके उलट जो ज़मीन को ज़रखेज़ बनाए बिना टैक्स वसूलना चाहता है वह मुल्क और अवाम को बर्बाद करता है।

(3) अपने मुल्क के मसलों को हल करने और लोगों को सच्चाई पर चलाने के लिए पढ़े-लिखे और अकलमंद लोगों की सोहबत में रहो।

(4) हुकूमत के तरीके पर ख़ामोश रहने और बेख़बरी की हालत में बोलने से कोई फ़ायदा नहीं मिलने वाला है।

(5) सच्चाई पर चलने वाले लोग ही सलाहियत वाले हैं जिनकी दलील बिल्कुल सीधी और सच्ची होती है। जिनके लिबास दिखावे वाले नहीं होते। जिनका रास्ता बीच का होता है। जिनके अमल अलग-अलग होते हैं और जो परेशानियों से नहीं घबराते।

(6) अपने लोगों के बीच से बेहतरीन लोगों को चुनो जो अवाम में सही अदुल और इंसाफ़ को फैला सकें। ऐसे लोगों को चुनो जो आसानी से हार न मान जाएं, जो दुश्मनी हो जाने से न डरें। जो ग़लत काम हो जाने पर उस पर कटहुज्जती न करें और ग़लत को सही करने में न झिझकें, जिनके दिल में कोई लालच न हो, जो पूरी बात समझे बिना मामूली सफ़ाई से इत्मिनान में न हो जाएं, जो शक़ पैदा किए जाने पर भी साबित क़दम रहें, वह जो अपने मुख़ालिफ़ को दुरुस्त करने में रतीभर बेताब न हों। जो सच्चाई पर चलने में मज़बूत हों, फैसले के बाद सज़ा देने में सख़्त हों, जो चापलूसी में न आएँ, और रिझाने से न बहकें। और यह तमाम हिदायतों में से कुछ हैं।

काश आज के तमाम हुकूमत करने वाले हज़रत अली<sup>र</sup> को आइडियल मानकर अपनी हुकूमतें चलाएँ तो पूरी दुनिया में अमनो अमान हो जाए। ●

# रोज़ा

## नफ़्स की पाकी

■ ततूहीर ज़ेहरा  
मुज़फ़्फ़र नगर

हज़रत ईसा<sup>र</sup> का कौल है कि इन्सान के नफ़्स की बुराइयाँ दूर करने और उसे पाक व पाकीज़ा बनाने के दो ज़रिए हैं: एक रोज़ा और दूसरे नमाज़।

अगर पूरे खुलूस और सच्चे दिल के साथ नमाज़ पढ़ी जाए और उस पर पाबंदी की जाए और इसी तरह अगर पूरी शर्तों के साथ रोज़ा रखा जाए तो इन्सान का ज़मीर बुराइयों से पाक हो जाता है। नफ़्स की इसी सफ़ाई का नाम तक्वा और तज़किया है। इसी सफ़ाई और पाकी की अहम ज़रूरत की तरफ़ सूरा बक़रा की उस आयत में इशारा किया गया है जो “तुम पर रोज़े फ़र्ज़ कर दिए गए हैं” से शुरू होती है। यह बात जो हज़रत ईसा<sup>र</sup> ने फ़रमाई थी इसका ताल्लुक तो आम रोज़े की ज़रूरत और फ़ायदे से था लेकिन माहे रमज़ान के रोज़ों में यह फ़ायदा ज़्यादा अहमियत के साथ सामने आता है क्योंकि इसमें रोज़ों के एक-साथ होने की वजह से नफ़्स की पाकी और सफ़ाई का एक महीने तक बराबर मौक़ा मिलता रहता है यानी अगर एक दिन इस पाकी में कोई कमी रह जाती है तो दूसरे दिन या दूसरे दिनों में इसकी भरपाई हो जाती है। मगर यह बात हमें पूरी तरह याद रखनी चाहिए कि सफ़ाई और नफ़्स की पाकी का फ़ायदा हमें उन्हीं रोज़ों से हासिल हो सकता है जो हकीक़ी रोज़े हों और पूरी शर्तों के साथ रखे जाएँ क्योंकि सिर्फ़ फ़ाका कर लेने और भूखा और प्यासा रहने का नाम रोज़ा नहीं है। रसूल ख़ुदा<sup>र</sup> ने एक हदीस में फ़रमाया है, “जो शरफ़ माहे रमज़ान में पूरे सुकून और इख़लास और विक़ार के साथ रोज़े रखे और अपने कानों, जबान और हाथों और तमाम बदन के हिस्सों को हराम बातों से, झूठ से और किसी के पीठ-पीछे बुराई करने और लोगों को तकलीफ़ पहुंचाने से बचाए तो उसका रुतबा क़यामत में बहुत उँचा होगा यहाँ तक कि वह हज़रत इब्राहीम<sup>र</sup> से बहुत नज़दीक हो जाएगा।”

एक दूसरी हदीस में रसूल<sup>र</sup> ने फ़रमाया है, “जब रोज़ा रखो तो ज़रूरी है कि तुम्हारे कान और आँखें भी रोज़े से हों और तुम्हारे रोज़े का दिन ऐसा न हो जैसा वह दिन होता है जब तुम रोज़े से नहीं होते हो।”

यानी रोज़े के लिए ज़रूरी है कि रोज़ा उन शर्तों के साथ रखे जो शरीअत ने तय कर दी हैं और उन बातों को न करे जो मना हैं ताकि इससे ख़ुदा की इताअत का शौक़ जागे, अल्लाह के करीब होने की आरजू का शौक़ पैदा हो और इन्सान आम बुराइयों से पाक-साफ़ हो सके। ख़ुलासा यह कि रोज़ा नफ़्स की पाकी-सफ़ाई का एक बड़ा असरदार ज़रिया है जिससे इन्सान अपनी नफ़सानी चाहतों को अक़ल और शरीअत के मुताबिक़ बना सकता है और अपने अंदर ईमान और तक्वे की उन अजीम ख़ूबियों को पैदा कर सकता है जिनके बिना दुनिया और आख़िरत में कामयाबी और निजात नहीं मिल सकती।





# अमानतदारी

■ तबस्सुम ज़ेहरा  
जामेअतुज्जुहरा, लखनऊ

“बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतों को उनके हकदारों तक पहुँचा दो और जब कोई फ़ैसला करो तो ईसाफ़ के साथ करो। अल्लाह तुम्हें बेहतरीन नसीहत करता है बेशक अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला भी है।”

इस आयत में खुदा हुक्म दे रहा है कि अमानतें चाहे दुनियावी हों या रूहानी, उन्हें उनके हकदारों को दे दो। इस आयत के मुताबिक हर मुसलमान की ज़िम्मेदारी है कि किसी की भी अमानत में ख़यानत न करे चाहे उस अमानत का मालिक मुसलमान हो या कोई और। यह हकीकत में इस्लाम में ह्युमन राइट्स का एलान है जिसमें तमाम इन्सान बराबर हैं। आयत के दूसरे हिस्से में एक और अहम क़ानून की तरफ़ इशारा है और वह है हुक्मत में अदालत और ईसाफ़।

अदालत हर तरह के फ़ैसले में होना चाहिए चाहे वह बड़े फ़ैसले हों या छोटे यहाँ तक कि हादीसों में मिलता है कि एक दिन दो छोटे-छोटे बच्चों ने कुछ लिखा था और वह दोनों अपना फ़ैसला कराने के लिए इमामे हसन<sup>३</sup> के पास आए हज़रत अली<sup>३</sup> जो इस मामले को देख रहे थे उन्होंने अपने बेटे से फ़रमाया, “बेटा! ख़ूब गौर कर लो कि क्या फ़ैसला होना चाहिए क्योंकि यह भी एक तरह की अदालत ही है और खुदा क़यामत के दिन तुम से इसके बारे में भी सवाल करेगा।”

दूसरी तरफ़ अमानत सिर्फ़ उन चीज़ों को नहीं कहते जिनको लोग एक दूसरे के सुपुर्द करते हैं

बल्कि उलमा और स्कॉलर्स भी समाज के अमानतदार हैं जिनका यह फ़रीज़ा है कि वह हकीकतों को न छुपाएं और हक़ बात लोगों को बताएं। यहाँ तक कि औलाद भी इन्सान के पास खुदा की अमानत है अगर उसकी भी तालीम और तरबियत में कोताही की जाए तो यह भी अमानत में ख़यानत है।

इमाम जाफ़र सादिक<sup>३</sup> फ़रमाते हैं कि किसी आदमी के भी सिर्फ़ लम्बे-लम्बे रुकु और सजदों को न देखो क्योंकि हो सकता है कि वह इस का आदी हो चुका हो और अब उसे छोड़ने से उसे डर लगता हो। इसलिए उसकी बात में सच्चाई और अमानत की अदाएगी की तरफ़ देखो।

इस्लाम में अमानतदारी इतनी अहम है कि कभी भी ख़यानत की इजाज़त नहीं है। अमानत का मालिक बेदीन ही क्यों न हो और इसी तरह अगर किसी इन्सान के हाथ से अदालत का दामन छूट गया तो यह ऐसे ही है जैसे वह सीधा जहन्नम में चला गया। अगर किसी समाज में अदालत और अमानतदारी न हो तो उस समाज का सिस्टम काएम नहीं रह सकता।

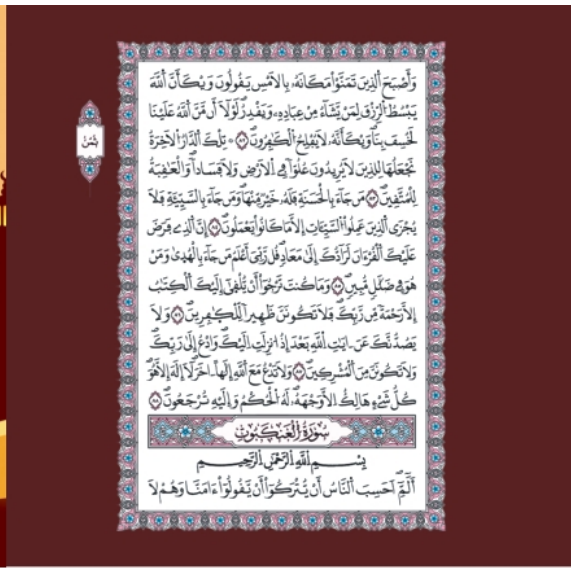
रसूल खुदा<sup>३</sup> फ़रमाते हैं, “जिसे काज़ी बना दिया गया समझो कि उसे बिना छुरी के ज़िबह कर दिया गया।”

जिस उसूल पर कुरआन और सुन्नत इतना ज़ोर दे रहा है वही उसूल आज हमारे समाज से ख़त्म होता चला जा रहा है। अब

“अमानतदारी” और “अदालत” लफ़्ज़ ही हमारे समाज में अजनबी सा लगता है, अदालत और अमानतदारी को लोगों ने अपनी ज़िंदगी से भुला दिया है और अदालत से काम न लेना जुल्म करने जैसा है।

अगर आज आप को किसी मामले में फ़ैसला करवाना है तो वहाँ यह नहीं देखा जाएगा कि कौन हक़ पर है और कौन बातिल पर बल्कि यह देखा जाएगा कि कौन पैसे वाला या रिश्तेदार है और रिश्तेदारी तो बहुत दूर की बात है अगर किसी से थोड़ी बहुत जान-पहचान भी होगी तो वह हक़ पर न भी हो तब भी फ़ैसला उसी के हक़ में किया जाएगा और दूसरा शख्स जो बेचारा हक़ पर था वह भी उसके आगे कुछ नहीं कह सकेगा। आज हमारे समाज की यही हालत है जबकि खुदा कुरआन में कह रहा है कि जब भी फ़ैसला करो हक़ के साथ करो लेकिन लोग इसका उलटा कर रहे हैं और यही वह असली वजह है जिसकी वजह से आज हमारे समाज में फ़ितना और फ़साद फैल रहा है। लोग एक-दूसरे के हक़ों को पामाल कर रहे हैं और इसी वजह से आज का इन्सान गुमराही में पड़ा हुआ दिख रहा है। लोग अपनी इन्सानियत को खो बैठे हैं यहाँ तक कि एक दूसरे का ख़ून बहाने से भी ज़रा सा नहीं हिचकिचाते। आज के ज़माने में जिस चीज़ की लोगों को सबसे ज़्यादा ज़रूरत है वह ईसाफ़, अदालत और अमानतदारी है। अगर हर मामले में ईसाफ़ और अमानतदारी से काम लिया जाए तो एक पुर-सुकून और अच्छा समाज अपने आप बन जाएगा जिसमें कोई किसी के हक़ को पामाल नहीं करेगा और लोगों में रूहानियत पैदा होगी। इसलिए हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम खुद भी अदालत और अमानतदारी पर अमल करें और दूसरों को भी इसका शौक़ दिलाएं और इस तरह इन्शाअल्लाह हम कामयाबी की बुलंदी तक पहुँचने में कामयाब हो जाएंगे। ●





शुबे क़द्र में सूरए अनकबूत पढ़ना मुस्तहब है।  
इसी बात को सामने रखते हुए आपके सामने इस  
सूरे की कुछ अहम बातें पेश की जा रही हैं...।

# इम्तेहान

■ फ़साहत हुसैन

इस सूरे का सब्जेक्ट इम्तेहान है। यानी हमारी ज़िंदगी की वह अहम स्टेज जिस से हम सब गुज़रते हैं। कभी ऐसा होता है कि हमें यह एहसास हो जाता है कि खुदा हमारा इम्तेहान ले रहा है और कभी बहुत सी चीज़ों और हालात के बारे में हम सोचते भी नहीं हैं कि उनके ज़रिए भी हमारा इम्तेहान हो सकता है लेकिन दरअसल वह हालात हमारा इम्तेहान ही होते हैं। इस सूरे में इम्तेहान के ऐसे बहुत से हालात को पेश किया गया है।

यह सूरह मक्के में नाज़िल हुआ था जहाँ नए मुसलमान होने वालों को तरह-तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था। खुदा इन सारी मुश्किलों को इम्तेहान का नाम दे रहा है और इस सूरे में इस इम्तेहान के बहुत से चेहरों को बयान कर रहा है। शुरु में ही खुदा कह रहा है कि जिन लोगों ने भी यह कहा है कि हम खुदा और उसके दीन पर ईमान ले आए हैं उन्हें यह सोचना चाहिए कि क्या उन्हें आजमाया नहीं जाएगा और क्या सिर्फ़ ज़बान से कहने से उनकी बात मान ली जाएगी। जबकि अगर वह अपने से पहले वाली कौमों के हालात को देखेंगे तो उन्हें पता चल जाएगा कि हम ने उन सबका इम्तेहान लिया था और उन इम्तेहानों के बाद यह बात समाने आ गई थी कि कौन ईमान का दावा करने में सच्चा था और कौन झूठ बोल रहा था।

जो लोग ईमान का दावा करने के बाद ग़लत काम और गुनाह करते रहते हैं क्या वह समझते हैं कि वह खुदा के कंट्रोल से बाहर निकल सकते हैं?!! ऐसा बिल्कुल नहीं हो सकता बल्कि एक ऐसा दिन ज़रूर आने वाला है जब वह मुझ से आकर मिलेंगे। वह आपस में जो बातें कहते हैं खुदा उनको सुनता है और उनके बारे में पूरी तरह से जानता है।

इसके बाद खुदा एक अहम क़ानून बयान करते हुए कहता है कि जो लोग हमारे रास्ते में मुश्किलें बर्दाश्त करते हैं उन्हें यह नहीं समझना चाहिए कि वह यह काम हमारे फ़ायदे के लिए कर रहे हैं। ऐसा नहीं है बल्कि इसमें उनका ही फ़ायदा है क्योंकि खुदा तो किसी का मोहताज नहीं है। हमारे रास्ते पर ईमान रखने वाले और उसकी राह में मुश्किलें बर्दाश्त करने वालों को यह फ़ायदा मिलेगा कि हम उनकी ग़लतियों को माफ़ कर देंगे और उन्हें उनके काम का बेहतरीन इनाम देंगे।

नए मुसलमान होने वालों की एक मुश्किल यह भी थी कि उन इस्लाम लाने वाले नौजवानों और जवानों के माँ-बाप उन पर ज़ोर डालते थे कि वह इस्लाम न लाएं या इस्लाम से पलट जाएं। इस आयत में खुदा ऐसे लोगों से कह रहा है कि वह अपने माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक ज़रूर करें लेकिन गुनाह और शिर्क की तरफ़ जाने में उनकी न मानें। माँ-बाप और औलाद सबको एक दिन हमारे पास लौट कर आना है।

अब  
खुदा कुछ  
ऐसे लोगों का  
ज़िक्र करता है  
जो यह कहते हैं  
कि हम खुदा पर  
ईमान ले आए हैं लेकिन  
जब लोग उन्हें उनके  
ईमान की वजह से तकलीफ़ें  
देते हैं, उन पर हंसते हैं, उनका

मज़ाक उड़ाते हैं तो वह उसे इम्तेहान समझने के बजाए खुदा का अज़ाब समझते हैं। जो हमेशा अपने फ़ाएदे और मौके की तलाश में रहते हैं। जब भी नबी<sup>०</sup> के पास खुदा की मदद आती है और वह कामयाब होते हैं तो यह कहते हैं कि हम नबी और मोमिनो की तरफ़ हैं। लेकिन खुदा उनके दिलों का हाल अच्छी तरह जातना है कि कौन मोमिन है और कौन मुनाफ़िक़।

नए मुसलमान होने वालों की एक मुश्किल यह भी थी कि लोग उन्हें तरह-तरह से बहकाते थे। कोई उन से कहता था कि तुम हमारा रास्ता अपना लो तो फिर चाहे जितनी ग़लतियाँ और गुनाह करोगे वह सब हमारे ज़िम्मे रहेगा जबकि नबी<sup>०</sup> का यह कहना था कि हर आदमी को उसके कामों की सज़ा दी जाएगी और क़यामत में कोई किसी की बुराईयाँ अपने सर नहीं ले सकता है। कुरआन ऐसे लोगों के बारे में







# माहे रमज़ान की स्वास तारीखें

कहता है कि इन बहकाने वालों को दोगुनी सज़ा मिलेगी। एक अपने गुनाहों की और दूसरी लोगों को बहकाने की।

इसके बाद खुदा कुछ पिछली कौमों और नबियों का जिक्र करता है ताकि इस्तेहान की कुछ मिसालें बयान करे और इस तरह लोगों को बताए कि उनके साथ भी ऐसे ही इस्तेहान होते रहते हैं। उनमें से एक जनाबे नूह<sup>अ०</sup> हैं। वह अपनी कौम में साढ़े नौ सौ साल तक खुदा का पैगाम पहुंचाते हैं और बहुत से लोग उनका मज़ाक उड़ाते हैं। लेकिन जब तूफान आता है तो खुदा उन लोगों को बचा लेता है जो इन सब मज़ाक उड़ाने वालों की तकलीफ़ देने वाली बातें बर्दाश्त करते थे और जनाबे नूह<sup>अ०</sup> की बात मानते थे।

जनाबे इब्राहीम<sup>अ०</sup> अपनी कौम वालों को खुदा का पैगाम सुनाते हैं और उन से कहते हैं कि तुम लोग खुदा को छोड़कर किसी और की इबादत मत करो। यह तुम्हें कोई फ़ायदा नहीं पहुंचा सकते। खुदा तुम्हें हर तरह का फ़ायदा पहुंचा सकता है इसलिए उसकी इबादत करो और उसकी नेमतों पर उसका शुक्र अदा करो। लेकिन उनकी कौम के बहुत से लोग उन्हें क़त्ल करने और जलाने की कोशिश करते हैं। खुदा उन्हें आग से बचा लेता है। लेकिन ऐसा भी नहीं है कि किसी ने जनाबे इब्राहीम की बात नहीं सुनी बल्कि कुछ लोगों को उनकी बातें सही लगीं और वह उन पर ईमान ले आए।

यह भी उन लोगों का इस्तेहान है जो दीन की पाबंदी करते हैं और दूसरों को दीन की तरफ़ बुलाते हैं। यानी उन्हें मायूस नहीं होना चाहिए कि कोई हमारी बात नहीं सुनेगा। ऐसा नहीं है बल्कि अगर वह मज़बूती से सच्चाई के रास्ते पर जमे रहें तो कुछ लोग दीन की तरफ़ आ जाएंगे। और दीन के रास्ते पर आने वालों को भी यह नहीं सोचना चाहिए कि वह अकेले ही दीन की आवाज़ पर आगे बढ़ रहे हैं क्योंकि इस रास्ते पर खुदा

उनके साथ है। बस शर्त यह है कि वह रास्ता हकीकत में खुदा का रास्ता हो।

इसके बाद खुदा जनाबे लूत की कौम और उनके गुनाहों को बयान करता है। इसी तरह फ़िरऔन, कारून, हामान जैसे बादशाहों और आद और समूद कौम के भी गुनाहों को बयान करने के बाद उन पर अज़ाब का जिक्र करता है। इसके साथ ही खुदा लोगों को दावत देता है कि वह दुनिया में जाकर पुरानी कौमों की बची हुई यादगारें देखें ताकि उन्हें मालूम हो कि खुदा जुल्म और गुनाह करने वालों का कैसा अंजाम करता है।

उन कौमों का एक इस्तेहान यह भी था जो हर कौम के सामने आ सकता है कि शैतान उनके बुरे कामों को अच्छा बनाकर पेश करता था और यह लोग अपने बुरे कामों को भी अच्छा समझते थे। और ज़ाहिर है कि जब कोई अपने बुरे काम को भी अच्छा समझ रहा है तो वह उस से बचने के बारे में सोच भी नहीं सकता।

यहाँ पर कुरआन एक और मिसाल देता है कि जो लोग खुदा को छोड़कर किसी भी दूसरे को अपना खुदा या मददगार बनाते हैं उनका यह काम बिल्कुल मकड़ी के जाले को बनाने जैसा है और सबको मालूम है कि यह जाला बहुत कमज़ोर होता है। इसी तरह अगर वह ग़ौर से देखें तो उन्हें मालूम हो जाएगा कि खुदा के अलावा सारे रिश्ते-नाते, दोस्त और मददगार मुसीबत के वक़्त पर उन्हें छोड़ कर चले जाते हैं क्योंकि वह खुद भी उसी तरह कहीं न कहीं पर कमज़ोर पड़ जाते हैं या उनका अपना फ़ायदा ख़तरे में होता है।

इन सारे गुनाहों और बुरे हालात से बचने यानी इस्तेहान में कामयाब होने का एक रास्ता नमाज़ है। जो बुराईयों से रोकती है। और नमाज़ ही खुदा की याद है जिसकी अहमियत बहरहाल ज़िंदा है और उसे इन्सान हर वक़्त अपने दिल में रख सकता है। ●

- 3 रमज़ान: हज़रत ईसा<sup>अ०</sup> पर आसमानी किताब, बाइबिल नाज़िल हुई।
- 6 रमज़ान: हज़रत मूसा<sup>अ०</sup> पर आसमानी किताब, तौरेत नाज़िल हुई। 201 हिजरी, मामून् ने इमाम रज़ा<sup>अ०</sup> को अपना वली अहद बनाया।
- 10 रमज़ान: वफ़ाते हज़रत ख़दीजा<sup>अ०</sup>
- 12 रमज़ान: हज़रत दाऊद पर आसमानी किताब, जुबूर नाज़िल हुई।
- 13 रमज़ान: पहला साल हिजरी, रसूले इस्लाम<sup>अ०</sup> की तरफ़ से मुसलमानों के बीच अक्दे अस्ख़वत पढ़ा गया।
- 15 रमज़ान: 3 हिजरी, विलादते इमाम हसन<sup>अ०</sup>
- 15 रमज़ान: 60 हिजरी, जनाबे मुस्लिम<sup>अ०</sup> कूफ़े की तरफ़ बढ़े।
- 17 रमज़ान: 2 हिजरी, जंगे बद्र
- 19 रमज़ान, शबे 20 : शबे क़द्र
- 19 रमज़ान: 40 हिजरी, मस्जिदे कूफ़ा में हज़रत अली<sup>अ०</sup> के सर पर ज़रबत लगी।
- 20 रमज़ान: 8 हिजरी, रसूले इस्लाम<sup>अ०</sup> ने मक्का फ़तह किया।
- 20 रमज़ान, शबे 21: शबे क़द्र
- 21 रमज़ान: वफ़ाते हज़रत मूसा<sup>अ०</sup>, शहादते हज़रत अली<sup>अ०</sup>, 40 हिजरी
- 21 रमज़ान: हज़रत ईसा<sup>अ०</sup> आसमान पर तशरीफ़ ले गए।
- 22 रमज़ान, शबे 23: शबे क़द्र, कुरआन नाज़िल हुआ।





# मरयम

की तरफ़ से

हम आपके घर लेकर आए हैं खूब सूरत और कीमती

- पहला इनाम : उमरा  
दूसरा इनाम : फ़िज़  
तीसरा इनाम : माइक्रोवेव  
चौथा इनाम : मोबाईल सेट  
पांचवां इनाम : डिनर सेट  
छठा इनाम : ज्वैलरी  
सातवां इनाम : मिक्सर  
आठवां इनाम : पंखा  
नवां इनाम : लेमन सेट  
दसवां इनाम : घड़ी

## तोहफ़े



दिसम्बर 2011 से मरयम में हर महीने एक कूपन छपेगा।  
10 कूपन जमा करके मरयम की तरफ़ से दी जाने वाली आखिरी तारीख़ तक कूपन भेजने वालों में से ड्रॉ के ज़रिए 10 लोगों को सिलेक्ट करके इनाम दिए जाएंगे।  
अगर आप मरयम के सब्सक्राइबर नहीं हैं तो जल्दी कीजिए।  
खुद भी सब्सक्राइब कीजिए और अपने रिश्तेदारों व दोस्तों को भी सब्सक्राइब कराईए और इस स्कीम से फ़ायदा उठाने का मौका हाथ से मत जाने दीजिए!



### नियम व शर्तें:

1. मरयम में हर महीने अलग-अलग तरह के कूपन छपे जाएंगे। दिसम्बर 2011 से नवम्बर 2012 तक 10 कूपन जमा करके भेजने वालों को ही इस ड्रॉ में शामिल किया जाएगा।
2. मरयम की टीम का फैसला ही आखिरी होगा और इस बारे में किसी को कोई एपेलाज़ का हक़ नहीं होगा।
3. इस सिलसिले में किसी भी तरह की अदालती कार्यवाई सिर्फ़ लखनऊ की अदालत में ही की जा सकेगी।

Contact No.:

+91-522-4009558

+91-9956620017 (Lucknow)

+91-9892393414 (Mumbai)

maryammonthly@gmail.com



# लड़कियों की परवरिश

रसूले खुदा<sup>०</sup> लड़कियों की परवरिश और तरबियत के बारे में फरमाते हैं, “जिसके पास बेटी हो और वह उसकी अच्छी परवरिश करे, उसको नेक कामों की तालीम दे, उसके अच्छे रहने-सहने और खाने-पीने का खयाल रखे और जिन नेमतों को खुदा ने उसे दिया है उसे लड़की के ऊपर खर्च करने में कोई कमी न करे तो ऐसा शख्स जहन्नम की आग से दाएं-बाएं दोनों तरफ से बचता हुआ जन्नत में दाखिल हो जाएगा।”

आज की लड़की कल की माँ है, फिर ये कैसे हो सकता है कि इस ग्रुप को अन्देखा कर दिया जाए और इसकी एजूकेशन और परवरिश के लिए कुछ न किया जाए। इसीलिए रसूल<sup>०</sup> फरमाते हैं, “तुम्हारी बेहतरीन औलाद लड़कियाँ हैं।”

रसूल इस्लाम<sup>०</sup> ने ये बात यूँ ही नहीं कह दी है क्योंकि हमारा मानना है कि समाजी ज़िन्दगी में तरक्की घरेलू ज़िन्दगी में तरक्की से ही हो सकती है और समाज भी फैमिली से ही मिलकर बनता है। फैमिली सब से छोटा इन्सानी समाज है इसलिए फैमिली समाज की बुनियाद है। माँ फैमिली की बहुत खास मिम्बर होती है और अपनी मालूमात से घरेलू ज़िन्दगी के लेवेल को ऊँचा करने में बहुत बड़ा रोल अदा करती है। इसलिए सबसे पहले मरहले में उसे चाहिए कि फैमिली से जुड़े और घरेलू कामों को सिस्टमेटिक करे और बच्चों की अच्छी परवरिश करे। साथ ही घर के माहौल को अच्छा और आरामदेह बनाए, ये उसकी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है।

हम अपनी रोज़ाना की ज़िन्दगी में देखते हैं कि कुछ काम ऐसे होते हैं जिनको मर्द सही तरह से नहीं कर सकते जैसे बच्चों की परवरिश, नौनिहालों की तालीम, दर्दमन्दों से हमदर्दी, बीमारों की देखरेख और इसी तरह के बहुत से समाजी और घरेलू काम कि जिन्हें सिर्फ़ औरतें ही बड़े हौसले, हिम्मत और सन्न के साथ कर सकती हैं। इसलिए लड़कियों के नेचुरल हक़ को ध्यान में रखते हुए उनकी खुदावाद सलाहियों और उनकी शख्सियत को निखारने और तरक्की देने की बहुत सख़्त ज़रूरत है। अगर हम चाहते हैं कि एक अच्छे और ब्राइट फ़्युचर वाले समाज की

## ■ डा. मुहम्मद बाकिर हुज्जती

बुनियाद रखें तो फिर हमें लड़कियों की एजूकेशन और परवरिश का बहुत खास खयाल रखना होगा और उनकी परवरिश में औरत ज़ात की खास सिफ़्तों, आदतों और उनकी नेचुरल पसन्द-नापसन्द को भी ध्यान में रखते हुए मुनासिब तरीका अपनाना होगा।

शादी, मर्द और औरत के बीच रिश्ता पैदा करने की एक मुकद्दस रीत का नाम है। जिसके ज़रिए समाज के अन्दर एक नई इमारत खड़ी की जाती है जिसमें औरत का रोल बहुत खास होता है, एक ऐसा रोल जिसे अल्लाह ने सिर्फ़ उसी के लिए बनाया है। वह खास रोल और ज़िम्मेदारी, बच्चों की देखरेख और उनकी तरबियत और परवरिश है। ये ज़िम्मेदारी खुदाई सुन्नत है और तारीख़ी वाकिआत साथ ही नेचर भी इस ज़िम्मेदारी को औरत के कंधों पर ही डालता है। शादी एक तरह का औरत-मर्द के बीच रूहानी और जिस्मानी रिश्ता है इसलिए मर्द और औरत की ज़िन्दगी में खुशी और खुशहाली भी, इन दोनों के बीच मुहब्बत, प्यार और एक दूसरे के एहतेराम और इज़्ज़त के बग़ैर हासिल नहीं हो सकती।

आज की लड़की कल की होने वाली बीवी है इसलिए समाज और माँ-बाप की ज़िम्मेदारियों में से एक ये भी है कि अपनी लड़कियों को मियाँ-बीवी की ज़िन्दगी के मायने और उसकी अहमियत को समझाएं ताकि वह फ़्युचर में घरेलू ज़िन्दगी की खुशियों के लिए कोशिश कर सके। लड़कियों की ज़िम्मेदारियों में से एक ये भी है कि वह घरेलू मुश्किलों को जानने और समझने की कोशिश करती रहें। लड़कियों की परवरिश और तरबियत एक ऐसे माहौल में होना चाहिए जिसमें मेलजोल और मुहब्बत की खुशबू रची-बसी हो, जहाँ ये सिखाया जाए कि किस तरह दूसरों की ख़िदमत की जाती है, किस तरह फ़िदाकारी, जानिसारी और दूसरों की मदद की जाती है। इस तरह की कोशिशों का असर ये होगा कि लड़कियाँ कल की अच्छी बीवियाँ बनेंगी और अपने शौहरों के साथ सुकून-चैन की ज़िन्दगी बसर कर सकेंगी। चाहे खुशी का मौक़ा हो या तकलीफ़ का, हर हाल में शौहर की बेहतरीन मददगार साबित होंगी।

1. मुहम्मजुल बेज़ा, 2/64, 2- बिहार, 23/113 ●

# रोज़ा

गैर मुस्लिम एक्सपर्ट्स

की तज़र में

## ■ सै. आले हाशिम रिज़वी

मेरे हिसाब से एक महीने के रोज़े सालभर पेट की बीमारियों से लड़ने की ताक़त पैदा कर देते हैं। रोज़े के दौरान लगभग 12-14 घंटों तक खाने-पीने से परहेज़ डाईजेस्टिव सिस्टम को आराम की पोज़ीशन में लाकर उसे मज़बूत और दुरुस्त कर देता है।

(प्रो. मोर पाल्ड, आक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी)

रोज़ेदार का लैब टेस्ट कराने पर यह फ़ैक्ट सामने आया है कि उनके जिस्म में खाने के सेप्टिक पार्टिकल जो पेट की बीमारियों को बहुत तेज़ी से बढ़ाते हैं उनमें भारी कमी आ जाती है। मेरी रिसर्च के मुताबिक़ रोज़ा जिस्म और खासतौर से पेट की बीमारियों में सेहत की ज़मानत है।

(डॉ. लूथर जेम्स, जर्मनी)

रोज़ा रखने वाले लोग दिमागी टेंशन से बचे रहते हैं। रोज़ा बाहरी दबाव को बर्दाश्त करने की ताक़त बढ़ा देता है। फ़ास्टिंग से दिल, दिमाग़ और लीवर सभी को बहुत फ़ायदा पहुँचता है यह मेडिकल रिसर्च से साबित है।

(सिगमंड फ़्रायड, आस्ट्रिया)

रोज़ा रखने के दौरान रगों में खून की क्वांटिटी कम हो जाती है जिससे दिल को कम काम करना पड़ता है। इससे दिल और रगों की दिवारों पर पड़ने वाला प्रेशर कम हो जाता है। दिल के मरीजों की बेचैनी और साँस फूलने वगैरह में काफ़ी कमी आ जाती है।

(पोप ऐलिफ़ गाल, हॉलैंड)

आस्ट्रेलिया, अमेरिका, इंग्लैंड और इंडिया के माहिर गैर मुस्लिम न्यूट्रिशन एक्सपर्ट की एक टीम की रिसर्च रिपोर्ट के मुताबिक़ रोज़ा कोलेस्ट्रॉल को कम कर देता है। एक महीना रोज़ा रखने से डाईजेस्टिव सिस्टम, इम्यून सिस्टम और ब्लड का सरक्युलेटरी सिस्टम काफ़ी सुधर जाता है। रोज़ा फ़ैट को तो कम करता ही है जिससे थोड़ा वज़न घटने के बावजूद न्यूट्रिशन में कोई कमी नहीं आती और जिस्म पूरी तरह हेल्थी और फ़िट रहता है। ●



# फ़ितरा

माहे रमज़ान एक ऐसा मौका है जब हम अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा होकर खुदा की बारगाह में तौबा कर सकते हैं क्योंकि इस महीने में खुदा ने हमें मेहमान बनाया है और खुदा से बेहतर मेहमानों की खातिरदारी भला कौन कर सकता है।

मगर.....इस मेहमानी के लिए कुछ शर्तें भी हैं कि अगर कोई इन शर्तों के बिना रमज़ान में दाखिल होगा तो उसे इस मेहमानी की नेमतों और रहमतों में से कुछ भी नहीं मिल सकेगा और भूख-प्यास के अलावा कुछ भी उसके हाथ नहीं आएगा। इन शर्तों में से एक शर्त फ़ितरा देना भी है।

जब माहे रमज़ान गुज़र जाता है तो एक फरिश्ता पुकार कर कहता है कि ऐ खुदा के बन्दो! तुम्हारे लिए खुशख़बरी है। तुम्हारे सारे पिछले गुनाहों को खुदा ने माफ़ कर दिया है अब अपने कामों पर गौर करना कि क्या कर रहे हो।

इमाम सादिक<sup>30</sup> फ़रमाते हैं कि रोज़े फ़ितरा अदा करने के बाद ही पूरे होते हैं उसी तरह जिस तरह नमाज़ हज़रत रसूले अकरम<sup>30</sup> पर दुरुद भेजने के बाद पूरी होती है।

खुदा ने रमज़ान के महीने में तमाम मुसलमानों की खातिरदारी की है और अपनी रहमतों और नेमतों को बेहिसाब अता किया है, हमारी ग़लतियों और गुनाहों को माफ़ किया है और अब चलते-चलते इस सब के बदले एक छोटी सी चीज़ माँगी है वह भी अपने लिए नहीं बल्कि हमारे ही ग़रीब भाई-बहनों, रिश्तेदारों और आस-पास वालों के लिए कि अब आखिरी दम जब मेरी बारगाह में ईद की नमाज़ के लिए खड़े होना तो समाज के इन पिछड़े हुए और फ़कीर लोगों को भूल न जाना जिनके पास खाने की कमी है या पहनने को कपड़े

नहीं हैं या कर्ज में डूबे हुए हैं बल्कि आज इस खुशी के दिन इनके कपड़ों और खाने-पीने का इन्तिज़ाम करके ही आना यानी फ़ितरा देकर। तभी मैं तुम्हारे रोज़ों को कुबूल करूँगा और तुम्हारी मग़फ़िरत करूँगा।

**फ़ितरा इन लोगों पर वाजिब है:-**

- 1- बालिग हो (मर्द 15 साल और औरत 9 साल)
- 2- अपना या दूसरे कुछ लोगों का खर्च जिसके जिम्मे हो।
- 3- आकिल हो यानी दीवाना या नासमझ न हो।
- 4- फ़कीर न हो

अगर ऊपर दी गई सारी बातें किसी में पाई जाती हों तो उस पर अपना और उन सब लोगों का फ़ितरा देना वाजिब है जिनका वह खर्च चलाता है।

इसी तरह अगर कोई बच्चा जो सूरज डूबने से पहले पैदा हो जाए या कोई मेहमान उसकी मर्जी से आ जाए जो उस रात उसके घर के खाना खाने वालों में शुमार होने लगे तो उसका फ़ितरा भी वाजिब हो जाता है।

मस्जिद में अफ़तारी भेजने या किसी को दावत में बुलाने से फ़ितरा वाजिब नहीं होता।

**फ़ितरे की मिक्दार**

एक आदमी का फ़ितरा तीन किलो अनाज या उसकी कीमत है।

**फ़ितरा किसको दिया जाए ?**

हर उस इन्सान को जो फ़कीर हो और खुल्लम-खुल्ला गुनाहे कबीरा न करता हो, फ़ितरा दिया जा सकता है।

नोट: ग़ैर सैय्यद का फ़ितरा सैय्यद को नहीं दिया जा सकता लेकिन सैय्यद का फ़ितरा ग़ैर सैय्यद को दिया जा सकता है। ●

# Eid Mubarak



# شب



## शबे क़द्र के आमाल

### शबे क़द्र की फ़ज़ीलत

शबे क़द्र से अच्छी और अफ़ज़ल पूरे साल में दूसरी कोई रात नहीं है। इस रात के आमाल हज़ार महीनों के आमाल से बेहतर हैं। इस रात में इन्सान की एक साल की तक्दीर लिखी जाती है। इस रात में फ़रिश्ते खुदा के हुक्म से ज़मीन पर नाज़िल होते हैं और इमामे ज़माना<sup>अ</sup> की ख़िदमत में हाज़िर होते हैं और जो कुछ भी इन्सान के लिए मुक़द्दर हुआ है इमाम<sup>अ</sup> की ख़िदमत में पेश करते हैं।

### शबे क़द्र के आमाल

19 वीं, 21 वीं और 23 वीं रात के आमाल

(1) **गुस्ल:** अल्लामा मजलिसी ने फ़रमाया है कि इन रातों के गुस्ल को सूरज के छिपने के वक़्त बजा लाए ताकि मग़रिब व इशा उसी गुस्ल से बजा लाए।

(2) **नमाज़:** दो रकअत नमाज़ इस तरह से कि हर रकअत में सूर-ए-हम्द के बाद सात बार सूरए तौहीद पढ़े और नमाज़ के बाद 70 बार “अस्तग़फ़िरुल्लाहा व अतुबु इलैह” पढ़े। हदीस में इस नमाज़ के सबाब के बारे में आया है कि जो शख्स इस नमाज़ को पढ़ेगा अपनी जगह से नहीं उठेगा कि खुदा उसको और उसके माँ-बाप को बख़्श देगा।

(3) **दुआ और कुरआन:** कुरआन मजीद को खोले और अपने सामने रखकर ये दुआ पढ़ें:

अल्लाहुम-म इन्नी अस्अलु-क बिकिताबिकल मुन्ज़ल। व मा फ़ीहि व फ़ीहिस्मुकल अकबर। व अस्माउकल हुस्ना। व मा युखाफु व युरजा। अन्तज अ-ल-नी मिन उ-त-काइ-क मिनन्नार।

**तर्जुमा:** परवरदिगार! मैं तुझसे तेरी नाज़िल की हुई किताब के ज़रिये सवाल करता हूँ और जो कुछ इसमें है और इसमें तो तेरा सबसे बड़ा नाम है और तेरे असमाए हुस्ना हैं और हर वह चीज़ है जिस से डरा जाता है और वह सारी चीज़ें हैं जिनकी उम्मीद लगाना चाहिए, उन सबका वास्ता दे कर तुझसे सवाल करता हूँ कि मुझे उन लोगों में से क़रार दे जिनको तूने जहन्नम की आग से आज़ाद किया है।

(4) **इमाम मुहम्मद बाकिर<sup>अ</sup>** फ़रमाते हैं कि इसके बाद कुरआन सर पर रखकर कहे:

अल्लाहुम-म बिहक्कि हाज़ल कुरआन। व बिहक्कि मन अरसल्लतहू बिह। व बिहक्कि कुल्लि मोमिनि-म मदहतहू फ़ीह। व बिहक्कि-क अलैहिम फ़ला अ-ह-द आरफु बिहक्कि-क मिन्क।

**तर्जुमा:** परवरदिगार इस कुरआन के वास्ते से और उस अज़ीम हस्ती के वास्ते से जिसको तूने यह कुरआन देकर भेजा है और हर उस मोमिन का वास्ता जिसकी तूने इस में तारीफ़ की है। और तेरे उस हक़ का वास्ता जो उन पर है। और हक़ तो यह है कि कोई भी तुझसे ज़्यादा तेरे हक़ को पहचानने वाला नहीं है।

### फिर कहे:

दस बार: बि-क या अल्लाहु

दस बार: बि मुहम्मदिन

दस बार: बि अलीयिन

दस बार: बि फ़ाति-म-ता

दस बार: बिल ह-स-नि

दस बार: बिल हुसैनि

दस बार: बि अली यिब्निल हुसैनि

दस बार: बि मुहम्मदिब्नि अलीयिन

दस बार: बि जाफ़रिब्नि मुहम्मदिन

दस बार: बि मूसबि जाफ़रिन

दस बार: बि अली यिब्नि मूसा

दस बार: बि मुहम्मदिब्नि अलीयिन

दस बार: बि अली यिब्नि मुहम्मद

दस बार: बिल हसनिब्नि अलीयिन

दस बार: बिल हुज्जतिल काइमि

ऐ अल्लाह ! तुझे खुद तेरा वास्ता

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा<sup>अ</sup> का वास्ता

हज़रत अली<sup>अ</sup> का वास्ता

हज़रत फ़ातिमा ज़हारा<sup>अ</sup> का वास्ता

इमामे हसन<sup>अ</sup> का वास्ता

इमामे हुसैन<sup>अ</sup> का वास्ता

इमामे ज़ैनुल आबेदीन<sup>अ</sup> का वास्ता

इमामे मुहम्मद बाकिर<sup>अ</sup> वास्ता

इमामे जाफ़र सादिक<sup>अ</sup> का वास्ता

इमामे मूसा काज़िम<sup>अ</sup> का वास्ता

इमामे अली रज़ा<sup>अ</sup> का वास्ता

इमामे मुहम्मद तकी<sup>अ</sup> का वास्ता

इमामे अली नकी<sup>अ</sup> का वास्ता

इमामे हसन असकरी<sup>अ</sup> का वास्ता

हज़रत हुज्जतिल काइम<sup>अ</sup> का वास्ता

फिर जो हाज़त रखता हो तलब करे।

(5) **ज़ियारत इमामे हुसैन<sup>अ</sup>:** शबे क़द्र में एक मुनादी आवाज़ देता है

شَهْرُ رَضْوَانِ الَّذِي  
هَدَى لِلنَّاسِ نُبُوءَاتِ مِنَ الصِّدِّيقِ وَالْمُرْتَقَانِ

شَهْرُ رَضْوَانِ الَّذِي  
هَدَى لِلنَّاسِ نُبُوءَاتِ مِنَ الصِّدِّيقِ وَالْمُرْتَقَانِ

شَهْرُ رَضْوَانِ الَّذِي  
هَدَى لِلنَّاسِ نُبُوءَاتِ مِنَ الصِّدِّيقِ وَالْمُرْتَقَانِ

شَهْرُ رَضْوَانِ الَّذِي  
هَدَى لِلنَّاسِ نُبُوءَاتِ مِنَ الصِّدِّيقِ وَالْمُرْتَقَانِ



कि जो भी इमामे हुसैन<sup>अ</sup> की कब्र की ज़ियारत के लिए आया है खुदा ने उसको बख्श दिया।

(6) दुआए जौशन कबीर : इसलिए कि इसमें खुदा के हज़ार नाम हैं।

फिर ये दुआ पढ़ें:

अल्लाहुम्मज अल फ़ीमा तक्ज़ी व तुक्ददिरु मिनल अमरिल महतूम। व फ़ीमा तपुरुकु मिनल अमरिल हकीमि फ़ी लैलतिल कद्र। व फ़िल कज़ाइल्लजी ला युरदुदु वला युबददल। अन्तक तु-बनी मिन हुज्जाजि बैतिकल हराम। अल मबस्ूरि हज्जुहुम। अल मशकूरि सअयुहुम। अल मगफूरि जुनुबुहुम। अल मुकफ़िरि अनहुम सय्यिआतुहुम। वजअल फ़ीमा तक्ज़ी। व तुक्ददिर अन तुली-ल उमरी। व तुवरसि-अ अलै-य फ़ी रिज़की। व तफअल बी।

### इक्कीसवीं रात के ख़ास आमाल

इस रात की फ़ज़ीलत उन्नीसवीं रात से ज़्यादा है। गुस्ल, ज़ियारते इमाम हुसैन<sup>अ</sup>, नमाज़ में सात बार “कुल हुवल्लाह”, कुरआन सर पर रखना और दुआए जौशने कबीर पढ़ने के अलावा इस रात की ख़ास दुआएं हैं जो मफ़ातीहुल जिनान में लिखी हुई हैं।

### तेईसवीं रात

यह रात उन्नीसवीं और इक्कीसवीं रात से भी अफ़ज़ल है और बहुत सी हदीसों के मुताबिक़ यही शबे क़द्र है। पैग़म्बरे अकरम<sup>अ</sup> रमज़ान की आख़री दस रातों में अपने बिस्तर को इबादत के लिए समेट देते थे और तेईसवीं रात में अपने घर वालों को जगाए रखते थे। जो सो जाता था उसके चेहरे पर पानी डालकर जगाते थे ताकि इस रात की बरकतों से महरूम न हो।

हज़रत फ़ातिमा ज़ह्रा<sup>अ</sup> इस रात में किसी को अपने घर में सोने नहीं देती थीं, रात में जागने के लिए दिन में सोने का हुक्म देती थीं और खाने में कमी करती थीं। आप फ़रमाती थीं कि वह शख्स महरूम है जो इस रात की बरकत को हासिल न कर सके।

रिवायत में है कि एक बार इमाम सादिक<sup>अ</sup> सख़्त मरीज़ थे। यहाँ तक कि 23 रमज़ान की रात आ गयी। आपने फ़रमाया कि मुझे मस्जिद में ले जाया जाए। इमाम<sup>अ</sup> इस रात सुबह तक मस्जिद में थे।

### 23 वीं रात के ख़ास आमाल

#### (1) दुआए फ़रज

अल्लाहुम-म कुल-लि वलीयिकल हुज्जतिब्निल हसन। स-ल-वातु-क अलैहि व अला आबाइह। फ़ी हाज़िहिस्साअह। व फ़ी कुल्लि साअह। वलीयव व हाफ़िज़ा। व काइदव व नासिरा। व दलीलव व ऐना। हत्ता तुसकि नहु अर-ज़-क तौआ। व तुमत्तिअहु फ़ीहा तवीला।

#### (2) दुआए मकारिमुल अख़लाक़ पढ़ना।

#### (3) कुरआनी सूरें: सूरए अनकबूत, सूरए रूम, सूरए हा-मीम और सूरए दुखान पढ़ना।

#### (4) सूरए क़द्र: हज़ार बार सूरए क़द्र पढ़ना।

#### (5)-गुस्ल: रात के पहले हिस्से के अलावा आख़री हिस्से में भी गुस्ल करना।

### 21 वीं और 23 वीं रात

#### के बेहतरीन आमाल

शैख़ सदूक़ ने लिखा है कि इन दो रातों का बेहतरीन अमल इल्मी गुफ़्तगू और इल्मी मसाएल पर ग़ौर करना है।

#### इस्तेग़फ़ार

इमामे सादिक<sup>अ</sup> फ़रमाते हैं, “जिसकी माहे रमज़ान में मग़फ़िरत न हो सके तो दूसरे महीने में भी नहीं हो सकती। यहाँ तक कि अरफ़ा का दिन आ जाए।” ●

# हर वाजिब नमाज़ के बाद पढ़ी जाने वाली दुआ

अल्लाहुम-म अदख़िल अला अहलिल कुबूरिस्सुरुर। अल्लाहुम्मगुनि कुल-ल फ़कीर। अल्लाहुम्मशबिअ कुल-ल जाइअ। अल्लाहुम्मकसु कुल-ल उरयान। अल्लाहुम्मकिज़ दै-न कुल्लि मदीन। अल्लाहुम-म फ़रिज अनकुल्लि मकरुब। अल्लाहुम-म रुद-द कुल-ल ग़रीब। अल्लाहुम-म फुक-क कुल-ल असीर। अल्लाहुम-म असलिह कुल-ल फ़ासिदिम्मिन उमूरिल मुस्लिमीन। अल्लाहुम्मशिफ़ कुल-ल मरीज़। अल्लाहुम-म सुद-द फ़क्रना बिग़िनाक। अल्लाहुम-म ग़ैय्यिर सू-अ हालिना बिहुस्नि हालिक। अल्लाहुमकिज़ अन्नददै-न व अग़निना मिनल्फ़क़्र। इन-न-क अला कुल्लि शैइन कदीर।

तर्जुमा: ऐ अल्लाह क़ब्र में दफ़न होने वालों को खुश कर दे, ऐ अल्लाह हर फ़कीर को ग़नी कर दे, ऐ अल्लाह सारे भूखों का पेट भर दे, ऐ अल्लाह हर बेलिबास को लिबास अता कर दे, ऐ अल्लाह हर कर्ज़दार के कर्ज़ को अदा कर दे, ऐ अल्लाह हर परेशान हाल के ग़म को दूर कर दे, ऐ अल्लाह हर मुसाफ़िर को उसके वतन तक पहुंचा दे, ऐ अल्लाह तमाम कैदियों को कैद ख़ानों से आज़ाद करा दे, ऐ अल्लाह मुसल्मानों के बिगड़े कामों को बना दे, ऐ अल्लाह हर मरीज़ को शिफ़ा अता फ़रमा, ऐ अल्लाह अपनी तवंगरी के ज़रिए हमारी ग़ुरबत को दूर कर दे, ऐ अल्लाह हमारी बुरी हालत को अपने बेहतरीन करम से बदल दे, ऐ अल्लाह हमारे कर्ज़ को अदा कर दे और हमारी ग़ुरबत को अमीरी में बदल दे। बेशक तेरी ज़ात हर काम पर कुदरत रखने वाली है।



# नक्शा तर्क सहर और इफ्तार

माहे रमज़ान 2012 (लखनऊ)

रमज़ान	तुनाई	तर्क सहर	अजाने सुबह	फ़ाति और इफ़्तार	लखनऊ के वक़्त से ज़्यादा		लखनऊ के वक़्त से कमी	
1433	2012	AM	AM	PM	शहर	मिनट	शहर	मिनट
1	21	3:42	3:57	7:12	अहमदाबाद	32	इलाहाबाद	5
2	22	3:42	3:57	7:12	आगरा	12	आज़मगढ़	9
3	23	3:43	3:58	7:11	इन्दौर	21	अयोध्या	5
4	24	3:44	3:59	7:11	उन्नाव	2	बाराबंकी	2
5	25	3:45	4:00	7:10	बदायुं	8	बस्ती	8
6	26	3:45	4:00	7:10	बरेली	6	बनारस	8
7	27	3:46	4:01	7:09	मुम्बई	23	बलिया	12
8	28	3:47	4:02	7:09	बेंगलूर	17	बहराइच	4
9	29	3:48	4:03	7:08	भोपाल	14	बांदा	6
10	30	3:48	4:03	7:08	पीलीभीत	5	भागलपूर	19
11	31	3:49	4:04	7:07	झांसी	10	पटना	18
12	अगस्त 1	3:50	4:05	7:06	हैदराबाद	10	प्रतापगढ़	5
13	2	3:51	4:06	7:06	दिल्ली	15	पुरनीया	27
14	3	3:51	4:06	7:05	देहरादून	12	जौनपुर	8
15	4	3:52	4:07	7:04	रामपूर	8	दरभंगा	20
16	5	3:53	4:08	7:04	श्रीनगर	21	रांची	18
17	6	3:54	4:09	7:03	सहारनपुर	14	छपरा	16
18	7	3:55	4:10	7:02	सीतापुर	4	रायबरेली	4
19	8	3:55	4:10	7:02	शाहजहाँपुर	4	सीवान	14
20	9	3:56	4:11	7:01	अलीगढ़	12	24 परगना	30
21	10	3:57	4:12	7:00	फतेहपुर	3	गाज़ीपूर	11
22	11	3:58	4:13	6:59	कानपुर	3	फैजाबाद	5
23	12	3:58	4:13	6:58	गवालियार	12	कोलकाता	31
24	13	3:59	4:14	6:57	मद्रास	3	खीरी	1
25	14	4:00	4:15	6:57	मुरादाबाद	9	गोण्डा	4
26	15	4:00	4:15	6:56	मेरठ	13	गोरखपुर	10
27	16	4:01	4:16	6:55	मुजफ्फरनगर	12	मऊ	11
28	17	4:02	4:17	6:54	नागपुर	16	मोनगीर	12
29	18	4:03	4:18	6:53	नैनीताल	6	मिर्ज़ापुर	7
30	29	4:03	4:18	6:52	हरदोई	4	मुजफ्फरपुर	19

(मुरतबा: हुज्जतुल इस्लाम मौलाना अदीबुल हिन्दी ताब सराह)

# सहरी की दुआ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम  
या मफज़ई इन—द कुरबती। व या गौसी  
इन—द शिद्दती। इलै—क फ़जेअतु, व  
बिकस्तगस्तु, व बि—क लुज्जु, ला—अलूजु बि  
सिवाक। वला अतलुबुल फ—र—ज इल्ला मिन्क।  
फ—अगिस्नी व फ़रिज अन्नी। या मय यकबलुल यसीर व यअफू अनिल  
कसीर। इक्बल मिन्निल यसीर। वअफू अन्निल कसीर। इन—न—क  
अन्तल ग़फ़ूरहीम। अल्लाहुम—म इन्नी अस्अलु—क ईमानन तुबाशिरु  
बिहि कल्बी। व यकीनन सादिका। हत्ता आलमु अन्नहू लइं युसीबनी  
इल्ला मा कतब—त—ली व रज़िनी मिनल ऐशि बिमा कसम—त—ली  
या अरहमर्राहिमीन। या उदती फ़ी कुरबती, व या साहिबी फ़ी शिद्दती,  
व या बलिय्यी फ़ी नेअमती, व या ग़ायती फ़ी र—ग—ब—ती,  
अन्तस्सातिरु औरती, वल आमिनु रौअती, वल मुकीलु अस्रती,  
फ़ग़फ़िरली ख़तीअती, या अरहमर्राहिमीन।

**तर्जुमा:** ऐ तकलीफ़ के वक़्त मुझे पनाह देने वाले, ऐ कठिन घड़ी में मेरी  
फरयाद सुनने वाले, मैं तेरी ही पनाह में हूँ और तुझसे ही फरयाद की है,  
तुझसे ही लौ लगाता हूँ, तेरे अलावा किसी से लौ नहीं लगाता और न  
तेरे अलावा किसी से खुशहाली का सवाली हूँ। तो अब तू मेरी फरयाद  
को सुनले और मेरी तकलीफ़ को दूर करदे। ऐ वह! जो थोड़ी सी नेकी  
को भी कबूल कर लेता है और बहुत ज़्यादा गुनाह माफ़ कर देता है। मेरे  
थोड़े से आमाल को कबूल कर ले और मेरे बहुत सारे गुनाहों को माफ़  
कर दे। तू ही बड़ा बख़्शाने वाला और मेहरबानी करने वाला है। ऐ  
अल्लाह! मैं तुझसे ऐसा ईमान चाहता हूँ कि जो मेरे दिल में जगह बना  
ले और ऐसा सच्चा यकीन देदे कि मैं यह जान लूँ कि जो कुछ भी तूने  
मेरे लिए लिख दिया है उसके अलावा मुझे कुछ नहीं मिल सकता और  
मुझको ऐसी ज़िन्दगी पर राज़ी करदे जो तूने मेरे लिए मोअय्यन कर दी  
है। ऐ सबसे ज़ियादा रहम करने वाले, ऐ तकलीफ़ के वक़्त मेरी पूँजी,  
सख़्ती में हमदम, ऐ मुझे नेअमत देने वाले और मेरी तवज्जोह के  
मरकज़! तू ही मेरे ऐबों को छुपाने वाला है और डर व दहशत के माहौल  
में इतमीनान देने वाला है। मेरी लगज़िश व ग़लती को बख़्श दे। ऐ रहम  
करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाले।

# इफ्तार की दुआ

अल्लाहुम—म ल—क सुम्तु  
व अला रिजकि—क अफ़तरतु  
व अलै—क तवक्कलतु।

**तर्जुमा:** परवरदिगार मैंने तेरे लिये रोज़ा रखा और तेरी  
रोज़ी से इफ़्तार किया और मैंने तुझ पर तवक्कल किया।



ऐ खुदा! इस माहे रमज़ान में मेरे रोज़ों को सच्चे  
रोज़ेदारों जैसा और मेरी नमाज़ को सही नमाज़  
गुज़ारों जैसी क़रार दे! मुझे ग़ाफ़िलों जैसी नींद से  
होशयार रख और इस महीने में मेरे गुनाह बऱ्ख़श दे!  
ऐ तमाम आलमीन के खुदा!  
मुझे माफ़ कर ऐ गुनाहगारों को माफ़ करने वाले!





RNI No: UPHIN/2012/43577



# ***GULSHAN***

MEHANDI & HERBALS

***IRFAN ALI PRADHAN***

*403 & 404, A Block*

*REGALIA HEIGHTS*

*Ahmadabad Palace Road*

*KOHE-FIZA*

*BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.*

*+919893030792, +917554220261*

***MOHTARMA "GULSHAN"***

*G-1, Krishna Apartment*

*Plot No. 2, Firdaus Nagar*

*Bairasia Road, BHOPAL*

*+91-755-2739111*

